अंकुर

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065

www.pgdavcollege.edu.in
email:pgdavcollege.edu@gmail.com

वर्ष : 2021-2022

अंक : 70

विषय सूची/Contents

Editorial 6
प्राचार्य की कलम से 7
परिचर्चा ..... डॉ. अश्विनी महाजन 9
संपादकीय ..... डॉ. मनोज कुमार कैन 14

संस्कृत खण्डः

सम्पादकीयम् ..... डॉ. दिलीप कुमार झा 17
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ..... रोहित कुमारः 19
वर्तमानयुगे भारतीयसंस्काराणां महती आवश्यकता ..... डॉ. वन्दना रानी 23
महात्मा गांधी और संस्कृत ..... डॉ. राजेश कुमारः 25
वास्तुशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ व ग्रंथकार ..... डॉ. रेणु बाला 29
महनीय राष्ट्रभक्तो नेताजी सुभाषचन्द्रबोसः ..... निशा 38
गणतन्त्रदिवसः ..... विनीता 40
गूगलं शरणं व्रज ..... बोधानन्द झा 41
सुभाषचन्द्रबोसस्य कतिपयवचनानां संस्कृतानुवादः ..... आदित्यकुमार झा 43
पण्डिता रमाबाई ..... नेहा 45
भगवतः श्रीकृष्णस्य द्वादशमहाविभूतयः ..... धनञ्जय कुमारः 46
अमृतं संस्कृतम् ..... प्रीति 50
संस्कृतध्येयवाक्यानि ..... मनीषदतः 51

हिन्दी खण्ड

पद्य खण्ड

संपादकीय ..... डॉ. चैनसिंह मीना/ डॉ. संदीप कुमार रंजन ... 53
मानवता ..... आकांक्षा शुक्ला 55
उलझन ..... आकांक्षा शुक्ला 55
माँ ..... अमित कुमार कुशवाहा 56
अनंत प्रेम की अनंत यात्रा ..... बोधानंद झा 56
गजल ..... अल्ताफ 57
इंसान प्रबल है! ..... चैतन्य खेड़ा 57
नन्हीं पलके ..... शिवानी 58

माँ	शिवानी	58
जल संरक्षण	शिवानी	59
उम्मीद	शिवानी	59
परदा	चेतना	60
रेप	चेतना	60
रूस, बेलारूस, यूक्रेन	चेतना	60
हिंदी माथे की बिंदी	राजकुमार	61
टिप्पणी	राजकुमार	61
एक पिता, पुत्री और दहेज की कुप्रथा	जेसिका पूर्वे	62
गुरू की महिमा!	कोमल रैकवार	63
आस	कोमल रैकवार	63
तय तो कर	कुनिका	64
साधु	कुशाग्र शुक्ला	64
चाय	लिपिका कुमारी	65
वाक्या	रितिका	65
पुरूष	शिवम योगीराज	66
दो फूल	शिवानी रघुवंशी	66
माप	स्नेहा	67
वो चाहत लौटा दो	तनुश्री भाटिया	67
भारत के माथे की बिंदी हमारी हिंदी	तन्वी	68
सपनों पर भरोसा	तन्वी	68
स्कूल की जिंदगी	गुफरान	69
ये ठंडी हवाएँ	ज्योत्सना	69
पराया घर	ज्योत्सना	69
कभी-कभी	शीतल तिवारी	70
था अध्यापक का ब्लैक बोर्ड, कभी ज्ञान का खजाना	सौरभ यादव	71
मुझे तुम दिखाई देती हो!	हार्दिक शर्मा	72

गद्य खण्ड

दिल्ली से ग्वालियर तक की रोमांचकारी यात्रा!	डॉ. मनोज कुमार कैन	75
घर का खाना	रजनी जगोता	79
ग्रीन लाइब्रेरी : वर्तमान की आवश्यकता	शकील अहमद	80
मानस का हंस	आयुष	82
मेला और समाज	गोलू कुमार	85
विवेकपूर्ण जीवन	डॉ. रामवीर	86

English Section

From the Editor's Desk ..... Uma Gupta 89
Patriotism ..... Prerna 91
Why to Feel Low ..... Palak Soni 92
To Be or Not to Be ..... Aarzoo Agarwal 92
A Woman by Choice ..... Aarzoo Agarwal 93
Desperation ..... Nitishika Pandey 94
The Greatest Hits: To All the Lost and Forgotten Friendships ..... Sanskriti 96
Season of Spring ..... Sanskriti 97
If We Ever Fall in Love, Let's Never Fall in Love! ..... Supriya 98
College Life ..... Shivani 99
My Desire ..... Jyotsana 100
Destiny ..... Jyotsana 100
I Wish I Were the Moon ..... Divanshi Aggarwal 101
Futile Hopes ..... Vartika Singh 101
What Makes Us Who We Are? ..... Hemant Choudhary 102
To My First Rented Home ..... Drishti Verma 103
Shades ..... Yashi Srea 104
My Murk Twin Devour Me ..... Sweety Marim 104
Slam Poetry by Rape Survivor ..... Sanjana Suman 105
New Year Gifted Me a Black Sheep ..... Trisha Pandey 106
Mother Athene ..... Vrinda 107
Adieu ..... Hritika Lamba 108
Sun Dial ..... Sanskriti Negi 109
A Calendar Betrayal ..... Sanskriti Negi 110
Freedom of Women ..... Aanchal Singh 111
Parenting ..... Chandrima Seal 113
Dragon in the Neighbourhood ..... Navya Tyagi 114
Into the Wilderness: A Picturesque Journey to the Sundarbans ..... Srijony Das 116
Film Review: *CODA* ..... Garima Sharma 117
Book Review- *The Kite Runner* ..... Aruna Bajaj 119
Shakuni, the Misunderstood Villain : Review of *Mahabharata-A Child's View* by Samhita Arni ..... Sanju Meena, Siddarth Shekhar 120

Faculty Contributions

Lotus and I ..... Dr. Reshma Tabassum 123
The Wave We Did Not See Coming ..... Lallianpuii Ralte 125
The Repair and Maintenance ..... Sakshi Verma 129

The Baby Steps ..... Sakshi Verma 130
Falling ..... Anish Kumar 131
Humare Karne se Kya Hoga : A Practical Guide to Sustainable Living ..... Sakshi Verma 132

Department and Society Reports

Internal Quality Assurance Cell - IQAC 135
Library 136
National Cadet Corps (NCC) 138
Azadi Ka Amrit Mahotsav - 75 Years of India's Independence 142
National Service Scheme (NSS) 143
Diligentia - The Entrepreneurship Cell 145
Hyperion: The Cultural Society 147
Enactus 164
Satark - The Consumer Club 168
Kaizen- Career Counselling Club 172
Placement Cell 174
Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar Memorial Lecture Series, 2021-22 176
संस्कृत विभाग 177
हिन्दी विभाग 180
भारतीय संस्कृति सभा सत्र २०२१–२२ की गतिविधियाँ 183
English Department 184
Eclectica-The English Literary Society 185
Department of Commerce 187
Commercium - The Commerce Society 188
Department of Economics 192
Ecolibrium- The Economics Society 194
Sankhyiki – Department of Statistics 195
Department of History 198
Anant- Department of Mathematics 198
Samvaad- Department of Political Science 200
Department of Environmental Sciences 202
Parikalan- Department of Computer Science 207
Department of Physical Education & Sports Sciences 209

आवरण पृष्ठ : करन सिंह

Patron
Prof. Krishna Sharma

Chief Editor
Dr. Manoj Kumar Kain

Editors
Dr. Dilip Kumar Jha (Sanskrit)
Dr. Sandeep Kumar Ranjan (Hindi)
Ms. Uma Gupta (English)

Co - Editors
Dr. Rohit Kumar (Sanskrit)
Dr. Pramita Mishra (Sanskrit)
Dr. Chain Singh Meena (Hindi)
Dr. Reshma Tabassum (English)
Dr. Pritika Nehra (English)

Student Editors
Pooja Devi (Sanskrit)
Shivani Sahu (Sanskrit)
Shivani Lohia (Hindi)
Vishaka Lohia (Hindi)
Srijony Das (English)
Sanskriti (English)

Publisher
Ms. Garima Gaur Srivastava

Printer
Colour Edge

प्राचार्य की कलम से...

आजादी के इस अमृत–काल में 'अंकुर' का नवीनतम अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। सच तो यह है कि हृदय की इन अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने में शब्द असमर्थ हैं। एक सहस्र वर्षों की पराधीनता के विरुद्ध सतत् संघर्ष एवं अविरल स्वातंत्र्य–चेतना के प्रवाह के परिणाम स्वरूप पचहत्तर वर्ष पूर्व हमने स्वाधीनता प्राप्त की थी। आजादी के अमृत महोत्सव का यह काल हमें उन असंख्य–अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों का पुण्य स्मरण करने का ऐसा पुनीत अवसर प्रदान करता है, जिन्होंने अपने देश, अपनी भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त देखने के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे दी। 1947 में स्वाधीन होने के पश्चात् भारत विकास के पथ पर अग्रसर हुआ और वयस्क मताधिकार के आधार पर लोकतांत्रिक संसदीय व्यवस्था को अपनाया। विकसित कहे जाने वाले पश्चिमी देशों में महिलाओं को मताधिकार मिलने में वर्षों का संघर्ष करना पड़ा, वहीं भारत में बिना किसी जाति, वर्ण, वर्ग और लिंग भेद के सभी को अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार मिला। बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के 'संकल्प' का ही सुफल था कि भारतीय संविधान समूचे विश्व में एक आदर्श का प्रतिमान बन गया। स्वतंत्रता के इस अमृत काल में हमें स्वाधीनता के उल्लास के साथ भारत के विभाजन का दंश भी झेलना पड़ा। हमें केवल विभाजन की विभीषिका ही नहीं झेलनी पड़ी, बल्कि उस समय जो हिंसा हुई, मानवता शर्मसार हुई, उसे भी हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं? लाखों लोगों की हत्या हुई, महिलाओं का अपमान हुआ और जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा शरणार्थी बनने के लिए विवश हो गया। हम उस दर्द को क्या कभी भुला सकते हैं? आज इस अवसर पर मुझे स्मरण हो आता है कि तमाम भारतीय भाषाओं में सृजित साहित्य कैसे स्वाधीनता के आंदोलन को अपनी रचनाओं में न केवल अभिव्यक्त कर रहा था, वरन् लाखों करोड़ों भारतवासियों के लिए

प्रेरणा का संवाहक भी था। उस समय प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ कम थीं, अंग्रेजी राज के प्रतिबन्ध का शिकार होती थीं, लेकिन तत्कालीन रचनाकार झुके नहीं। आज 'अंकुर' के माध्यम से हम नव रचनाकारों, युवा लेखकों को एक मंच प्रदान करते हैं, अपनी अनुभूतियों को सबसे साझा करने का अवसर देते हैं। यह पत्रिका उन्हें आत्मविश्वास देती है और अपनी रचना को प्रकाशित होते देखना किसी भी लेखक के मनोबल को बढ़ाता है और हम पत्रिका के माध्यम से ये प्रयास कर रहे हैं। 'अंकुर' का संपादक मंडल बड़े ही परिश्रम से न केवल रचनाओं को छाँटता है बल्कि कहीं – कहीं सुधारता भी है, अस्तु मैं समूची संपादकीय 'टीम' को साधुवाद देती हूँ। पत्रिका के मुख्य संपादक डॉ. मनोज कुमार कैन ने पत्रिका को हमारे हाथों तक पहुँचाने में जिस लगन से कार्य किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। संस्कृत खंड के संपादक डॉ. दिलीप झा, अंग्रेजी खंड की संपादक उमा गुप्ता ने बड़े मनोयोग से अपना दायित्व वहन किया, दोनों और उनके सहयोगी भी साधुवाद के पात्र हैं।

कृष्णा शर्मा

प्रो० (डॉ०) कृष्णा शर्मा
प्राचार्य

परिचर्चा

– डॉ. अश्विनी महाजन प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग

Sanskriti: Today, we have with us Dr Ashwini Mahajan. Sir is not only the first professor in our college but also the first Professor of Economics in any college in the University of Delhi. Sir, you are a teacher, a mentor, an activist, an economist, a prolific writer, and your articles are published regularly in major national dailies, magazines and journals. Sir, you have an incredible scholastic journey behind you, please take us though the journey.

Ashwini Mahajan: I belong to an ordinary family and my father passed away when I was seventeen. I completed my graduation and post graduation at Delhi school of Economics. Since then only, I understood that if I am a teacher then I'm a student as well. And I should do justice to my work and work efficiently. I worked in many different areas of work and learned a lot from them. I always had a different thought procedure and hence I believed that we as a country should work upon globalisation back in 1990's. People used to say that this would take the economy backwards and ruin everything that the country has built but regardless we still kept on working. The effects of globalisation were felt all around the country from the farmers to the industrialists. Our country has faced deindustrialisation twice and in those times we had lost all the major industries. One of the periods of de-industrialisation was during the British and with the passage of time, people realised the value and significance of swadeshi. Back in the day, Anand Mahindra sent a special messenger to me and even mentioned my name for several awards.

Working for one cause persistently will always lead you to success. However, if you keep shifting from one cause to another, the meaning of your efforts is lost. Hence, one should work hard for one cause whole heartedly.

Sankriti: Sir, of all the historical figures and statesmen of the past, who inspires you the most or who do you view as your role model?

Ashwini Mahajan: I have drawn my inspiration from Dattopant Thengadi and through you, I request everyone to read about him. He has written on various topics like economics, environment, politics and geopolitics. Even a social reformer like Ambedkar Ji was in close contact with him despite

the fact that he was a brahmin. He always believed that the world has two perspectives, one is Capitalism. There is only one way in capitalism to increase individual initiative, even though it might increase monopoly. But it is the only way to grow and increase our GDP. Another is Socialism, where a person should do nothing but continue doing their jobs and the government will work for the public and hence, everyone shall get the benefits of equal income. Even though, today we have different perspectives on these two worldviews with different economists having different opinions about them.

If redistribution could sort out all the economical problems, then why is it that the nations who have adopted similar methods have failed and suffered too. So, Dattopant Ji also had a third way that we must have an economic system whereby when we think about output, we should also think about employment distribution and location. We should have a decentralised economy and maintain a balanced economy. Whenever I get confused regarding anything in terms of my field of work, or I am in a place to make an instant decision, all I think about is 'If Dattopant Ji were in my place, what would he say?' And hence my answer formulates itself and I don't have to think a lot about it. I have worked with him for ten years and hence if someone asks me why I said whatever I did, so I simply say, because this is what Dattopant Ji had said.

Sanskriti: Sir, what is your vision of an ideal educational institution?

Ashwini Mahajan: See, an educational institution must be about a strong relationship between students and teachers, more interactions and meetings in smaller groups. We must be able to extract the most from a student. We are so much stuck within the bookish knowledge but we must also know what is happening in our surroundings. Like recently, I had a conversation with a friend as we talked about the free supplies that are being offered by the government. I had turned the topic into an assignment that led the students be aware of the things happening around them and become proactive. Absenteeism is something that I dislike personally and students must attend all the classes as absenteeism looks bad overall. Interacting with other students through cultural societies, NCC and various activities is very important.

प्रश्न – सर, संस्कृत को लेकर आपके क्या उद्देश्य हैं?

उत्तर – हमारे कॉलेज में संस्कृत के बहुत विद्वान हैं। संस्कृत मात्र एक भाषा नहीं है। इसकी दुनिया में जरूरत है। संस्कृत के ग्रंथों में ज्ञान का जो इतना बड़ा भंडार था, वह पढ़ने के कारण है। लेकिन जो हमारे ज्ञान का भंडार था उसको जला दिया गया। यह भी माना जाता है कि पुस्तकों को जलाने में महीनों लग गए। थोड़ी–बहुत जो पुस्तकें बचीं उन्होंने पूरी दुनिया में हंगामा मचा दिया। संस्कृत में वैदिक गणित गणना का बहुत महत्त्व रहा है। आपने देखा भी होगा कि सभी छोटी–से–छोटी चीजें संस्कृत से ली गई हैं। इसके पास बहुत भंडार कोष है– चाहे विमान का निर्माण हो या अन्य चीजों का। संस्कृत के विकास हेतु नए प्रोग्रामों के माध्यम से जानकारी देना आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि कॉलेज की फैकेल्टी इसमें सुधार करेंगे और उनके द्वारा नए प्रोग्राम चालू किए जाएंगे।

प्रश्न– हमारी संस्कृत से हर चीज का उद्भव हुआ है। फिर भी विज्ञान को ज्यादा आगे बढ़ाया जा रहा है, संस्कृत को नहीं। ऐसा क्यों?

उत्तर– हमें विज्ञान प्रौद्योगिकी भी चाहिए और वैदिक प्रौद्योगिकी भी। हमें अपने आप को आधुनिक विज्ञान से अलग नहीं करना चाहिए। वैदिक आधारित विकास भी होना चाहिए। हमारा परिवार सुसंगठित व्यवस्था के साथ चलता रहे। हम प्रकृति के बारे में सोचते हैं और बचत भी करते हैं। पर्यावरण को बचाना हमारा कर्तव्य है। यह सब कुछ वैदिक साहित्य में मिलता है। यहाँ लोग राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हैं। परिवार समाज का हिस्सा है और समाज एक राष्ट्र है। आधुनिक प्रौद्योगिकी का त्याग न करना प्रौद्योगिकी का विकास करना है। हमारी बुद्धि बहुत तेज है। हिमालय पर्वत से निकलने वाली नदियाँ भारत में आती हैं। यह अपने साथ उपजाऊ भूमि लाती हैं, जिससे फसलें अच्छी होती हैं। इसलिए हमारी बुद्धि तेज है। हमने 104 उपग्रहों का निर्माण किया है। हम तकनीकी स्तर पर बहुत आगे तक जा सकते हैं और यह कार्य बहुत तेजी से चल रहा है।

प्रश्न– सर, आपको इस पद पर पहुँचने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ा है? आपके सामने कौन–कौन सी चुनौतियाँ आई और आपको यहाँ तक पहुँचने में कितना समय लगा?

उत्तर– यह जो हमारे प्रोफेशन की प्रक्रिया है, इसके लिए आपको दृढ़ संकल्प होना चाहिए। कोई समस्या नहीं आती, बस आप अपने प्रोफेशन के प्रति ईमानदार रहें। उतना ही हमने भी करने का प्रयास किया। कितना कर पाए, यह तो आप लोग बताएंगे। लेकिन अपनी तरफ से हमने पूरा प्रयास किया कि हम ईमानदार रहें। संघर्ष के नाते तो जीवन ही संघर्ष है। कोई भी चीज आसान तो होती नहीं है। मैंने पहले भी निवेदन किया कि यदि हम ठान लेते हैं तो कुछ भी असंभव नहीं है। मैं आपको एक उदाहरण से अपनी बात बताता हूँ। मैं आपके माध्यम से बाकी विद्यार्थियों को भी बताना चाहता हूँ कि हमारे देश में अपार संभावनाएं हैं। कोई कुछ करना तो शुरू करे। हमारे यहाँ जुगाड़ कई किस्म के होते हैं। आप जानते ही होंगे। यह सब दृढ़ संकल्प से होता है। मैंने तो ठान लिया था कि मुझे यह करना है। आप जानते ही होंगे कि दुनिया का सबसे बेस्ट पेमेंट सिस्टम हमारा है–यूपीआई(UPI)। कुछ समय पहले मैं स्विट्जरलैंड में था। स्विट्जरलैंड बहुत डेवलप्ड कंट्री है। हम वहाँ होटल में या रेस्टोरेंट में कहीं भी खाने जाते उनके पास डिजिटल पेमेंट सिस्टम बहुत कम जगहों पर उपलब्ध था। सभी लोग कैश ही लेते थे। हम बोलते भी थे कि क्रेडिट कार्ड ले लो, परंतु वे कैश ही लेते थे। हमारे यहाँ डिजिटल सिस्टम है। हैरानी की बात यह है कि दुनिया में जितनी डिजिटल ट्रांजैक्शन्स होती है उसका 40% भारत में होता है। यह सब निर्भर है UPI और RuPay पर। तब Master Card और VISA चलता था। हमने RuPay Card चला दिया। मैं आपको एक मजेदार बात बताता हूँ। UPI चार–पाँच साल पहले ही आया है। गवर्नमेंट सोच रही थी कि एक अच्छा पेमेंट सिस्टम बनाने के लिए किसे दें? UPI को दें या Wipro को दें या SCS को दें? फिर किसी ने सुझाया कि आप किसी को मत दो। आप आईआईटी के विद्यार्थियों के बीच एक कंपटीशन करवा दो। जो बेस्ट पेमेंट सिस्टम बनाकर ले आएगा, हम उसको पुरस्कार देंगे। विद्यार्थी बनाने में लग गए और वे ढेर सारे UPI बनाकर ले आए। एक कमेटी बैठी और उन्होंने देखा कि उसमें से कौन–कौन बेस्ट हैं। उन्होंने उसमें से बेस्ट पाँच चुन लिए और पाँचों को पुरस्कार दिया। पुरस्कार लेकर जब वे जाने लगें तो कमेटी

के सदस्यों ने उनसे कहा कि अब आप एक साथ मिलकर दुनिया का सबसे बेस्ट UPI हमें बनाकर दें। इस तरह आज जो UPI चल रहा है वह बना। सरकार ने उस पर एक पैसा भी खर्च नहीं किया। विद्यार्थियों ने खेल–खेल में उसे बनाकर दे दिया, जिसे बड़े–से–बड़े देश नहीं बना पाए। अमेरिका और यूरोप भी इसे नहीं बना पाए। आज वे भी हमारी तरफ देख रहे हैं। जब अमेरिका ने कहा कि आप एशिया से तेल खरीदोगे तो हम आपको पेमेंट नहीं लेने देंगे और उन्होंने उस पर रोक भी लगा दी। आपको मालूम होगा तब हमने अमेरिका से कहा कि 'तुम्हारी ऐसी की तैसी'। हम इसे UPI से चलाएंगे। हमारा UPI एशिया का MIR है। विद्यार्थियों ने उसे ही इंटीग्रेट करने के लिए सोचा और उन्होंने करके भी दिखाया। बड़ों की तो जरूरत ही नहीं पड़ी। यदि आप ठान लें कि आपके काम करने का यही तरीका है, फिर आपके रास्ते में कोई मुश्किल नहीं आएगी।

प्रश्न– सर, आपने इसी महाविद्यालय से अध्ययन किया है। आज आप यहीं एक बड़े पद पर कार्यरत हैं और साक्षात्कार दे रहे हैं। आपको कैसा महसूस हो रहा है?

उत्तर– मैं अपने आपको पहले भी विद्यार्थी मानता था और अब भी विद्यार्थी मानता हूँ। इस कॉलेज में मैं एक सामान्य टीचर हूँ। पहले भी ऐसा ही मानता था, अभी भी ऐसा ही मानता हूँ। विद्यार्थियों के साथ बात करना अच्छा लगता है। अपने लोगों के साथ प्यार रखना मुझे अच्छा लगता है। इतना मैं जरूर कहूँगा कि कॉलेज में सभी लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। सब एक जैसे हैं। आप आज मेरा साक्षात्कार ले रहे हैं, यह आपके लिए बहुत बड़ी बात है। मैं अपने आपको ऐसा कुछ नहीं मानता हूँ।

प्रश्न– सर, आपको क्या लगता है कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था सही दिशा में जा रही है? क्या आने वाले समय में हमारे देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरीके से मजबूत रहेगी?

उत्तर– बिल्कुल सही दिशा में जा रही है। आप अभी अखबार में देखें हम पाँचवें नंबर पर आ गए हैं। मैं कहता हूँ कि हम पाँचवें या चौथे नंबर पर नहीं, बल्कि तीन नंबर पर हैं। अगर आप वर्ल्ड बैंक एग्जीक्यूटिव से पूछेंगे तो वह यही बताएगा कि भारत तीन नंबर पर है। हमारे अखबार वालों को इसकी समझ नहीं है। उसका कारण यह है कि एक संकल्पना होता है– पी.पी.पी. (परचेसिंग पावर प्योरिटी) अर्थात् डॉलर के मुकाबले में रुपए की परचेसिंग पावर भारत में कितनी है। आप दुनिया में कहीं भी चले जाओ। आपको वहाँ जो चीज एक डॉलर की मिलती है, यहाँ वह 10 से 12 रू. में मिलेगी। इसका मतलब यह है कि एक्सचेंज रेट सही पैमाना नहीं है। यदि उसे परचेसिंग पावर प्योरिटी के हिसाब से नापा जाए तो भारत की जीडीपी 12–13 ट्रिलियन डॉलर है। इसलिए हम बिल्कुल सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यदि हम आत्मनिर्भर भारत की तरफ बढ़ेंगे, तो इंपोर्ट कम कर लेंगे और एक्सपोर्ट बढ़ा लेंगे तब हमारा ट्रेड बैलेंस और बेहतर हो जाएगा। अतः हमारे रुपये की वैल्यू भी बढ़ेगी। फिर हमें जो एक्सचेंज रेट के आधार पांचवें नम्बर पर कह रहे हैं, वे तीसरे नम्बर पर आ जाएंगे। हमें दो काम करने होंगे– एक जीडीपी बढ़ानी पड़ेगी और दूसरा हमें रुपए की वैल्यू भी बढ़ानी पड़ेगी। रुपए की वैल्यू बढ़ाने के लिए हमें आत्मनिर्भर बनना बहुत जरूरी है। हमें अपने देश में रीप्रोडक्शन करना जरूरी है। विदेशों पर निर्भरता कम करनी होगी। पहले सोचते थे कि हम सेमीकंडक्टर नहीं बना सकते। आज हमने सेमीकंडक्टर बनाना शुरू कर दिया है। अब हमारे यहाँ से मोबाइल फोन एक्सपोर्ट भी हो रहे हैं। ऐसी बहुत सारी चीजें हैं जो पहले हम नहीं करते

थे, अब कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। इससे हमारा रोजगार भी बढ़ेगा और आमदनी भी बढ़ेगी। मेरा यह भी कहना है कि जब हम कोई नीति बनाएं उस समय रोजगार का भी ध्यान रखें। लोकेशन का भी ध्यान रखें। प्रकृति का भी ध्यान रखें। हमें प्रकृति को भी खराब नहीं करना है। क्योंकि वह भी हमारी ही जिम्मेदारी है। इस प्रकार हम अपने देश को आगे बढ़ा सकते हैं। वो कहते हैं न कि "कौन कहता है आसमाँ में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।"

प्रश्न– सर, आपने अपने जीवन में आज बहुत कुछ किया है। इतनी सारी चीजों के बीच में आपने अपने जीवन को कैसे संतुलित रखा है?

उत्तर– सबसे पहले अपने आप को शांत रखें। अगर आप अपने इरादे पक्का कर लें तो आपके पास कितने भी काम क्यों न हो आप उसको जरूर पूरा कर सकते हैं। दिनचर्या में मैं सबसे पहले लेखन का काम करता हूँ, उसके बाद कॉलेज आकर विद्यार्थियों को पढ़ाना और उसके बाद अपने समाज के लिए काम करना।

प्रश्न– सर, आपके नजरिए में स्वदेशी का क्या अर्थ है?

उत्तर– स्वदेशी कोई दस्तावेजी दृष्टिकोण नहीं है। स्वदेशी का मतलब सिर्फ यह नहीं है कि अपने देश की बनी वस्तुओं का इस्तेमाल करना– चाहे वह अच्छी हो या बुरी। स्वदेशी का मतलब अपने देश में बनी वस्तुओं का उपयोग करना लेकिन यदि आप अपने देश की बनी वस्तुओं में कोई दोष पाते हैं तो उसमें सुधार करना भी स्वदेशी ही कहलाता है। अपने पूर्वजों के धर्म का पालन करना भी स्वदेशी कहलाता है। स्वदेशी का दूसरा अर्थ आत्मनिर्भरता को माना जाता है, जहाँ हम अन्य व्यक्ति या देश पर किसी भी प्रकार से निर्भर नहीं रहते। आत्मनिर्भर होने का मतलब केवल यह नहीं है कि हम सिर्फ अपने लिए चीजों को बनाए, बल्कि अपने साथ–साथ बाकी दुनिया के लिए भी बनाए। 'थिंक ग्लोबल एक्ट लोकल'।

प्रश्न– सर, आपके नजरिए में अर्थव्यवस्था को लेकर भारत देश की रणनीति ज्यादा प्रभावी है या बाहरी देशों की और अगर बाहरी देशों की रणनीतियाँ मजबूत हैं तो हम अब तक उन नीतियों को क्यों नहीं अपना पाए?

उत्तर– अगर हम अर्थव्यवस्था में नीचे रहे हैं तो उसके ऐतिहासिक कारण हैं। अंग्रेजों के शासन के बाद जो देश हमें मिला वह बिल्कुल बेकार दशा में था। एक तरह से यह मान लीजिए कि हमें सब चीजों को पुनः प्रारंभ करना था। लेकिन जब हमने विकास यात्रा शुरू की उस समय हमने अपने लोगों पर विश्वास नहीं किया, तब हमने यह कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sector) सब कुछ करेगा। अगर हमने अपने लोगों पर विश्वास किया होता तो हमारे ऐसे हालात नहीं होते। क्योंकि हमारे यहाँ के लोग बहुत बुद्धिमान है। हमारे यहाँ के लोग बाहर जाकर बहुत काम करते हैं। बाहरी देशों की लगभग सभी कंपनियों के सीईओ भारतीय हैं। उस समय 35% से अधिक जीडीपी हमारे देश के लोगों और युवाओं ने दी थी। हमारे देश को सोने की चिड़िया इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यहाँ के लोग बेस्ट एंटरप्रेन्योर हैं। लेकिन उस समय हमने अपने लोगों पर भरोसा नहीं किया। यदि हमें अपने देश को और आगे ले जाना है तो सबसे पहले हमें अपने लोगों पर भरोसा करना होगा और हमारे देश के युवाओं को नौकरी माँगने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बनने का प्रयास करना चाहिए।

संपादकीय

डॉ. मनोज कुमार कैन

विश्व कोरोना महामारी से उभरने के उपरांत सामान्य रूप से चलने लगा है। मनुष्य की समझ में यह बात अच्छी तरह से आ गई है कि अन्य बीमारियों की तरह कोरोना भी हमारे जीवन की एक बीमारी है। इस बीमारी से जिस तरह भारत ने काबू पाया और अन्य देशों की मदद की वह देखते ही बनता है। खैर 'जो चला गया उसे भूल जा बीती भूली बिसार दे आगे की सुध ले।' अब हम निरंतर उन्नति और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। हम अपने देश में उन परिवर्तनों को अनुभव कर रहे हैं, जो कि पिछले सालों में हो जाने चाहिए थे; लेकिन नहीं हुए।

हम बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि आजादी का 75वाँ वर्ष अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध होने के नाते विश्वविद्यालय के 100 वर्ष पूर्ण होने का अनुभव भी कर पा रहे हैं। इतने सालों में देश और विश्वविद्यालय में तमाम परिवर्तनों का चिंतन, मनन और विश्लेषण करते हुए भविष्य की योजनाओं और चुनौतियों का ध्यान रखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। आजादी के 75 और विश्वविद्यालय के 100 वर्ष पूर्ण होने पर देश और विश्वविद्यालय में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। बहुत अच्छी बात यह रही कि इन सभी कार्यक्रमों का एक ही मूल स्वर था– राष्ट्रीयता। जहाँ आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत घर–घर तिरंगा पहुँचा, वहीं दूसरी ओर नई शिक्षा नीति के तहत उन सभी महत्त्वपूर्ण चीजों को लागू करने पर बल दिया गया जिनसे भविष्य में भारत विश्व गुरु बन सके।

आज भारत का शीर्ष नेतृत्व बन्धुत्व, अखंडता, भाईचारा, समानता, समरसता, देश–प्रेम को लेकर आगे बढ़ रहा है; साथ ही पंक्ति के अंत में बैठे व्यक्ति की चिंता करते हुए उसे साथ लाने के लिए प्रयासरत है। समाज के उस अंतिम व्यक्ति के लिए प्रमुखता के साथ योजना बना रहा है और साथ ही अनेक तरह की योजनाओं को कार्यान्वित करने पर भी विशेष ध्यान दे रहा है। हम सभी को शिक्षक होने के नाते ऐसे अच्छे विचारों का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। अपने विद्यार्थियों को भी नए भारत के निर्माण में सहयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। आज भारत में सबसे बड़ी संख्या जनसंख्या की दृष्टि से युवाओं की है, जो कल के निर्माता होंगे। निर्माताओं को सही मार्गदर्शन देने का दायित्व हम सभी प्राध्यापकों का है। एक अच्छा इंसान बनाने के साथ–साथ उनको रोजगार परक शिक्षा देना भी आवश्यक है।

आज का युवा बहुत जागरूक है और वह प्रत्येक विषय का अच्छा ज्ञान भी रखता है। साहित्य, अर्थशास्त्र, खेल, तकनीकी इत्यादि विषयों में देश का नाम रोशन कर रहा है। संभावनाओं को तलाशते हुए

तमाम विषयों पर चिंतन करके अपने मौलिक रचनात्मक विचारों को भी जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से हमारे समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। 'अंकुर' में प्रस्तुत रचनाएँ इसका जीता–जागता उदाहरण हैं। इस पत्रिका में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से जो विचार प्रस्तुत किए हैं वह बहुत ही सराहनीय और प्रशंसनीय है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनाधर्मिता का वाहक है। इस तरह का रचनाकर्म करते हुए विद्यार्थी आगे बढ़ता जाता है और भविष्य में रचनात्मकता के क्षेत्र में अपना स्थान बना लेता है। मैं आशा करता हूँ कि इनमें से कुछ विद्यार्थी भविष्य में लेखन के क्षेत्र में अवश्य नाम कमाएंगे। पत्रिका में जिन विद्यार्थियों की रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

वर्ष 2021–22 की पत्रिका 'अंकुर' का अंक आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सामग्री संकलन से लेकर प्रकाशन तक सभी कार्यों में मेरे सहयोगी संपादकों ने बहुत अधिक परिश्रम किया है। अंक प्रकाशित होने में आदरणीय प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा जी का सहयोग और मार्गदर्शन हमें निरंतर प्राप्त होता रहा। मैं संपादक मंडल की ओर से उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पत्रिका को आपके हाथों तक पहुँचाने में संपादक मंडल के सहयोगियों डॉ. दिलीप कुमार झा, डॉ. रोहित कुमार, डॉ. प्रमिता मिश्रा, डॉ. उमा गुप्ता, डॉ. प्रितिका नेहरा, डॉ. रेशमा तबस्सुम, डॉ. चैनसिंह मीना और डॉ. संदीप कुमार रंजन का विशेष योगदान रहा। मैं समस्त संपादक मंडल का अंतर्मन से धन्यवाद करता हूँ। उनके अथक परिश्रम और उत्साह से ही यह कार्य अत्यंत सुचारू रूप से आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ।

मैं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. गरिमा गौड़ जी का भी हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ। उनके महत्त्वपूर्ण विचार और सुझाव पत्रिका के लिए उपयोगी सिद्ध हुए। उन सभी का भी धन्यवाद जो इस महती कार्य में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी रहे। वर्ष 2021–22 की 'अंकुर' पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

डॉ. मनोज कुमार कैन

संस्कृत खण्डः

सम्पादकीयम्

डॉ. दिलीप कुमार झा

अस्मदीयं राष्ट्रं भारतं सप्तचत्वारिंशदुत्तरनवदशतमाब्दस्य अगस्तमासस्य पञ्चदशके दिनाङ्के स्वातन्त्र्यमलभत। भारतवर्षस्य स्वतन्त्रतायाः पञ्चोत्तरसप्ततिः वर्षाणि अगस्तमासस्य पञ्चदशके दिनाङ्के 2022 तमे वर्षे सम्पूर्णानि भविष्यन्ति। अतः अस्मिन् वर्षे सम्पूर्णभारतदेशे ''स्वतन्त्रतायाः अमृतमहोत्सवः'' आयोजयितुं निर्णयम् अकरोत्। अस्य कार्यक्रमस्योद्घोषणां भारतीयप्रधानमन्त्रिणः श्रीमन्तः नरेन्द्रमोदीमहोदयाः 12 मार्च 2021 ई. इति दिनाङ्के अहमदाबादनगरे अकुर्वन्। स्वतन्त्रताप्राप्त्यर्थं नैके राष्ट्रैसेवाव्रतिनो भारतीसपुत्रा नैजान् प्राणान् अत्यजन्। तेषां राष्ट्राय हुतात्मनां त्यागशौर्यबलिदानादिकं नितरां स्मृतिपटले सदास्मदीयहृच्चेतनासु ''इदं राष्ट्राय इदं न मम'' इति श्रुतिवचनं स्मारयेत्तथा राष्ट्राय समर्पणभावं जागरयेदित्यादिकं लक्ष्यीकृत्य भारतसर्वकारेण तद्दिनं राष्ट्रियपर्वत्वेनोद्घुष्टमथ च समग्रभारते ''स्वतन्त्रतादिवसः'' ''स्वातन्त्र्योत्सवः'' समायोज्यते। अनेन लक्ष्यीक्रियते महत्काठिन्येन यल्लब्धं स्वातन्त्र्यं तत्पुनः पारतन्त्र्ये परिवर्तितं न स्यात्। अत्र मनसि नैकाः जिज्ञासाः समुद्भवन्ति। तद्यथा– १. किं नाम स्वातन्त्र्यम्? २. किमर्थं स्वातन्त्र्यम्? ३. स्वातन्त्र्यस्य वास्तविकं स्वरूपं किम्? ४. कथं वा परिरक्षितं स्याद्भारतीयं स्वातन्त्र्यम्?

तत्र सर्वादौ विचारयामो वयं ''किन्नाम स्वातन्त्र्यम्''। स्वातन्त्र्यमिति पदं स्वतन्त्रपदान्निष्पद्यते। यत्कृते आङ्गलभाषायाम् ''Freedom'' इति पदं प्रयुज्यते। इदञ्च स्वातन्त्र्यपदं ''स्वम् (आत्मीयम्), तन्त्रं (प्रधानं सिद्धान्तो विस्तारो वा) इति द्वाभ्यां पदाभ्यां नैकविधव्युत्पत्तिद्वारा व्युत्पादयितुं शक्यते। स्वस्य तन्त्रमिति षष्ठीसमासव्युत्पत्त्या आत्मनः प्राधान्यमित्यर्थः'' तन्त्रं ''प्रधानं सिद्धान्त'' इति कोशवचनात्। स्वं तन्त्रं यत् तत् स्वतन्त्रम् इति कर्मधारयसमासव्युत्पत्त्या आत्मीयशासनमात्मशासनं वेत्यर्थः ''तन्त्रं शासनम्'' इति वचनात्। स्वं तन्त्रं यस्येति बहुव्रीहिसमासव्युत्पत्त्या स्वतन्त्रोऽर्थात् स्वाधीनः प्रमुखो जनविशेष इत्यर्थः। इत्थं स्वस्य प्राधान्यं यस्मिन् शासने राष्ट्रे वा तत् शासनं राष्ट्रं वा स्वतन्त्रम्। यस्य प्राधान्यं स जनः सिद्धान्तो वा स्वतन्त्रः। स्वतन्त्रस्य भावः स्वातन्त्र्यम् इति।

साम्प्रतं ''किमर्थं स्वातन्त्र्यम्'' इति विचारयामः– कस्यचिद्व्यक्तेः शारीरिक–मानसिक–आध्यात्मिक–शैक्षिक–धार्मिक–नैतिक–भौतिकादिविकासान् अभिवर्धयितुं तथा कस्यचिदपि राष्ट्रस्य सर्वविधौन्नत्यर्थसम्पादनार्थं राष्ट्रगौरवसंस्कृतिसभ्यतादीनां संरक्षणार्थञ्च स्वातन्त्र्यम् नितरामावश्यकम्। यतोहि पारतन्त्र्ये (बन्धने पराधीनतायां वा) कस्यचिज्जीवाय राष्ट्राय च स्वोन्नतिविकासावसरो नोपलभ्यते। अतो जीवमात्रस्य राष्ट्रस्य च उन्नत्यै स्वातन्त्र्यमतीवावश्यकम्।

अधुना भारतीयपरिप्रेक्ष्ये स्वातन्त्र्यस्य वास्तविकं स्वरूपं परिशीलयामः। भारते स्वातन्त्र्यस्य वास्तविकं

स्वरूपं विश्ववन्द्या भारतीया संस्कृतिर्वर्तते। तत्रैते मुख्यबिन्दवो अन्तर्भवन्ति– १. सर्वेषामधिकारः स्वतन्त्रता। २. जीवनशैली आचारव्यवहारः लौकिकपरम्पराश्च। ३. भाषा–वेशभूषा–भोजनादिकम्। ४. सभ्यता शाशनव्यवस्था च। ५. आध्यात्मिकैतिहासिकभौतिकसमृद्धयः। ६. समृद्धसाहित्यम् । ७. विश्वबन्धुत्व–लोकहितचिन्तन–जनकल्याणादिभावना।

एते समेऽप्यंशाः स्वातन्त्रस्य वास्तविकं स्वरूपं बोधयन्ति। साम्प्रतं विचारयामः ''कथं वा परिरक्षितं स्यात् स्वातन्त्र्यम्'' इति। १. वेदबोधिताचारलक्षणधर्मपुरस्सरं नैतिकव्यवहारेण स्वातन्त्र्यं परिरक्षितं स्यात्। २. कामक्रोधलोभमोहादिवर्जनपुरस्सरं मनसानिशं स्वहितपरहितचिन्तनेन। येन स्वप्नेऽपि कस्यचिज्जीवस्याहितं न स्यात्। यतः तस्य स्वातन्त्र्यं नश्येदिति चिन्तनेन। ३. निजस्य स्वातन्त्र्यरक्षणाय अन्येषां स्वातन्त्र्यं न हन्यात्। अर्थात् निजस्वातन्त्र्यरक्षणक्रमे अपरेषामपि स्वातन्त्र्यं परिरक्षणीयम्। येन एषा व्यवस्था परिरक्षिता स्यात्।

महद्दौर्भाग्यं वर्तते यदद्यत्वे वयं भारतीयाः निजप्राणभूतत्त्वं विश्ववन्द्यां भारतीयां संस्कृतिं सन्त्यजन्तः पुनः पारतन्त्र्यपथे नित्यं वर्धमाना नित्यं पाश्चात्यसंस्कृतिम् अनुकुर्मः। तत्र चिन्त्या अंशाः– १. सर्वप्राचीनभारतीयसभ्यतां विस्मृत्य पाश्चात्यसभ्यतायाः गुणगानं कुर्मः। २. स्वजीवनशैलीं विस्मरन्तः पाश्चात्यजीवनशैलीमाचारामः। तद्यथा– स्नानपूजादिकं विनैव भोजनं कुर्मः, मदिरादिपानं कुर्मः, परस्परं विद्विषामहे, मातृपित्रादिकं सन्त्यजामः, प्रेमदिवसादिकमायोजयामश्च। ३. निजभाषां विहाय पाश्चात्यभाषां भाषमाणा गौरवमनुभवामः। ४. आध्यात्मिकैतिहासिकभौतिकसमृद्धीः न गणयामः। ५. निजशासनव्यवस्थायाः विखण्डनं कुर्मः। ६. निजसाहित्यसम्पदायां दोषं दर्शयामः। ७. विश्वबन्धुत्वादिभावं न स्मरामः। ८. स्वार्थसिद्धौ पराहितं कुर्मः।

इत्थं वक्तुं शक्यते यद् वयं स्वतन्त्राः सन्तोऽपि वस्तुतो मानसिकरूपेण परतन्त्रा अद्यापि। अनिशं वयं पारतन्त्र्यपथे वर्धमानाः स्मः। यदा भारतीयनागरिका मानसिकरूपेण स्वतन्त्राः भविष्यन्ति तदैव वस्तुतो नागरिकाः स्वतन्त्राः, अस्मदीया शासनव्यवस्था स्वतन्त्रा अस्मदीयं राष्ट्रञ्च स्वतन्त्रम् इति शम्।

– डॉ. दिलीप कुमार झा

नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्ककाष्ठश्च मूर्खश्च न नमन्ति कदाचन।।

जिस प्रकार से फलों से लदी हुई वृक्ष की डाल झुक जाती है, उसी प्रकार से गुणी जन सदैव विनम्र होते हैं किन्तु मूर्ख उसी सुखी लकड़ी के समान होता है जो कभी नहीं झुकता।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

रोहित कुमारः
सहायक आचार्यः, संस्कृत–विभागः

अद्यत्वे बहुशो जना ''मातृदेवो भव'' इति तैत्तरीयोपनिषद्वाक्योद्घोषं कुर्वन्तो दरीदृश्यन्ते। साम्प्रतं वयं ज्ञातुं यतामहे यत् ''को वाभिप्रायोऽस्य उपनिषद्वाक्यस्येति''। साम्प्रतमस्य वाक्यस्य पदं पदार्थं वाक्यार्थञ्च चिन्तयामः – माता देवो यस्येति विग्रहे षष्ठ्यर्थे बहुव्रीहिसमासे सति प्रथमाविभक्तेरेकवचने ''मातृदेवः'' इति निष्पद्यते। यस्याभिप्रायो भवति यो मातरं देववन्मनुते, अथ च यस्य दृष्टौ माता देव इव पूज्या वर्ततेऽसौ मातृदेवः। ''भवे''ति लोट्लकारस्य मध्यमपुरुषैकवचनरूपम्। अत्र लोट्लकारः भगवतः पाणिनेः ''आशिषि लिङ्लोटौ'' इति सूत्रानुसारं जायते।

एतेन स्पष्टं भवति यद् उपनिषद्वचनमिदम् आशीर्वादात्मकं वर्तते। उपनिषदीहते यज्जना मातुरराधका भवेयुरिति। तदर्थमेतदाशीर्वाक्यं प्रयुज्यते। साम्प्रतं मातृपदं विचारयामश्चेच्छास्त्रेषु मातृविषये अनेकधा वर्णनं प्राप्यते। क्वचित् षोडश मातरः, क्वचित् सप्त मातरः, क्वचिच्च पञ्च मातर इति। यथा–

स्तनदात्री गर्भधात्री भक्षदात्री गुरुप्रिया ।
अभीष्टदेवपत्नी च पितुः पत्नी च कन्यका ।।
सगर्भजा या भगिनी पुत्रपत्नी प्रियाप्रसूः ।
मातुर्माता पितुर्माता सोदरस्य प्रिया तथा ।
मातुः पितुश्च भगिनी मातुलानी तथैव च ।
जनानां वेदविहिता मातरः षोडश स्मृताः ।।

अन्यच्च –

आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका ।
गावी धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः ।।

अथर्ववेदीयपृथ्वीसूक्ते–

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''– अथर्व.– पृ.सू. १२/१/१२

उपर्युक्तविवृत्त्या स्पष्टं भवति यच्छास्त्रेषु पृथ्वी अपि मातृत्वेन कीर्त्यते। एषा पृथ्वी स्थूलत्वगुणयुक्ता गन्धवती व्यापिका च। पृथ्वी, पृथिवी, मेदिनी, भूः, भूमिः, धरा, धरणी, धरित्री, धात्री, धारयित्री, भूतधात्री, जीवनधात्री, स्थिरा, अचला, क्षितिः, क्ष्मा, क्षौणी, ज्या, पृथुः, इला, विश्वम्भरा, रत्नगर्भा, रत्नावती, वसुमती, वसुधा, वसुन्धरा, अब्धिमेखला, सागरमेखला, जगद्वहा, जन्मभूमिः, भारती, माता, भुवनमाता, विश्वमाता चेत्यादिभिरभिधेयैः कीर्त्यते।

अस्माकं सनातनसंस्कृतौ अस्या महन्महत्त्वं वर्तते। जीवनजगतः सर्वस्यापि लोकव्यवहारस्य आधारभूता एषा पृथ्वी एव वर्तते। एषा समस्तचराचरप्राणिनां जीवनं संरक्षति। यतोहि जीवनस्य सम्यग्रूपेण सञ्चालनाय यानि तत्त्वानि उपयुक्तानि भवन्ति तेषामुत्पत्त्याधारः पृथ्वी एव वर्तते। यथा– जीवानां जीवनस्य कृते वायुर्जलम्, अन्नम्, आवासः स्वास्थ्यञ्च इत्येतानि मौलिकानि आवश्यकतत्त्वानि वर्तन्ते। एतेषां सम्भावना पृथ्वीं विना नोपपद्यते । अतः शास्त्रे स्वर्गादपि गरीयसीत्वेन समुच्यते –

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्यण! रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

एका माता यथा स्वशिशुं गर्भे सन्धार्य स्वयमात्मनि कष्टं सोढ्वापि स्वसन्ततिं तज्जीवनञ्च संरक्षति तथैव एषा पृथ्वी मातापि अनेकानि कष्टं सोढ्वा जीवजगत् संरक्षति चराचरजीवनं सन्दधाति परिपालयति, समुपयुक्तव्यवस्थाञ्च परिकल्पयति। उच्यते हि लोके –

यस्माद्दधाति कः सृष्टिं तस्माद्धाता समुच्यते।
दधाति जीवनं तस्मात् पृथ्वी धात्रीति कीर्त्यते।।
सन्दधाति यतो धाता जगति विधिरूच्यते।
दधाति जीवनं तस्मात् पृथ्वी धात्रीति कीर्त्यते।।
सन्धारयन्ति यथा गर्भे मातरो निजसन्ततिम् ।
सन्दधाति पुनर्धात्री सन्ततं निजसन्ततिम् ।।
धारयति यथा स्वाङ्के मातरो निजसन्ततिम्।
रत्नमिव तथा धात्री धारयति स्वसन्ततिम् ।।
धारयति यथा गर्भे मातरो निजसन्ततिम्।
रत्नमिव तथा धात्री धारयति स्वसन्ततिम् ।।

यथा माता न कदापि स्वकष्टं स्वसन्ततये वदति तथैव एषा पृथ्वी मातापि स्वकष्टं न कदा. पि सन्ततिभ्यो बोधयति। यदि माता स्वकष्टं न वदेत् किन्तर्हि अस्माकं पुत्रपुत्रीणां वा किञ्चिदपि न दायित्वं वर्तते यत् तत्कष्टं ज्ञातुं यतामह इति। पृथ्वीमातुः कष्टानि अवलोकयामस्तावद् वयम् "मलमूत्रं त्यजामो, निष्ठीवनं कुर्मः, उच्छिष्टम् अपच्छिष्टम् अवकरञ्चेतस्ततः प्रक्षिप्य अस्याः सौन्दर्यं नाशयामः, आवासादिनिर्माणाय वनान् अतिकुर्मः, पृथ्व्याः अङ्के संरक्षितानां जीवजगतो रत्नभूतानां प्राकृतिकसंसाधनानां दुरुपयोगं कुर्मश्चेति।

पश्यन्तु! भारतस्य यशस्विनः प्रधानमन्त्रिणः श्रीनरेन्द्रमोदिनः पृथ्वीमातुः कष्टमनुभूय स्वच्छताभियानम् सञ्चालयन्ति। यस्याभियानस्यान्तर्गतत्वेन स्वयमपि सम्मार्जनीं सङ्गृह्य स्वच्छतां कुर्वन्ति, अन्यानपि प्रेरयन्ति, स्वच्छताकर्मिभ्यः समुचितं सम्मानं ददति दापयन्त्यपि। तद्वत् संस्कृतमातुः सौन्दर्यं नष्टं न भवेत्तस्याः समृद्धिः कथं वा भवेत्तदर्थं स्वच्छभाषाभियानं सञ्चालयन्ति। ते संस्कृतभाषायाम् आगताः अस्वच्छताः (आगतान् दोषान्) स्वच्छीकुर्वन्ति। यस्मान्मातुः सुरभारत्याः सौन्दर्यं न नश्येत् गङ्गामातृवच्चाविरलतया अस्याः प्रवाहः

चतुर्षु दिक्षु प्रवहेत। तद्वद् अनेकाः संस्थाः संस्कृतप्रचारप्रसाराय यतन्ते। अद्यत्वे प्राविधिकसहाय्येन बहव्यः संस्थाः संस्कृतहितं, तद्गतरत्नभूतशास्त्रसंरक्षणं, छात्रेभ्योऽध्यापकेभ्यश्च मार्गदर्शनं कुर्वन्ति। तेषु अन्यतमानां नामानि यथा– संस्कृतं भारतम्, विश्वसंस्कृतकुटुम्बकम्, संस्कृतरसास्वादः, संस्कृतशिक्षणम्, स्ववर्णीप्रकाशः, संस्कृतामृतम्, संस्कृतभाषी च तथा अन्या अपि संस्थाः स्युर्याश्च मम संविज्ञाने न सन्ति।

परं वयं भारतीयाः बहुविचित्राः। वयं चिन्तयामो यदेतत्स्वच्छतादायित्वं केवलं श्रीनरेन्द्रमोदिनां, तत् सर्वकारस्य, स्वच्छताकर्मिणां सामाजिकसंस्थानाञ्च एव। तद्वदेव भाषास्वच्छता केवलं स्वच्छभाषाभियानिनामेव वर्तते नास्मदीयमिति। अत्र जनेभ्योऽस्मदीयाः प्रश्नाः वर्तन्ते–

१. किं पृथिव्यां (भारते) नरेन्द्रमोदिनः स्वच्छताकर्मिणः सामाजिकसंस्थासहयोगिनः अथ च संस्कृतक्षेत्रे स्वच्छभाषाभियानिन एव निवसन्ति वा ?
२. त एव पृथिव्या संस्कृतेन च उपकृता वर्तन्ते वा ?
३. वयं कदा मातृभक्ता भवेम ?
४. वयं कदा उपनिषद्वाक्योद्घोषं परिपालयेम ?
५. वयं कदा नैजं स्वार्थं परित्यज्य मातृसेवाव्रतिनो भवेम ?
६. वयं कदा मातृहितचिन्तका भवेम ? ''मातृदेवो भव'' इति ।
७. वयं कदा ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' इति वेदवाक्यं सगर्वं स्वहृदये सन्धारयेम ?
८. वयं कदा चिरकालनिद्रातः जागृता भवेम ?
९. वयं कदा मातृकष्टमनुभवेम ?
१०. वयं कदा मातृकष्टं निवारयेम ?

इत्यादयो नैके प्रश्नाः सदाऽस्मान् उद्वेलयन्ति। एतेषां समाधानं प्रस्तूयते। तद्यथा–

१. किम् अस्माकं जीवनं स्वोदरपूर्त्यै एव वर्तते ?
२. अस्माकं लक्ष्यम् उदरपूर्तिमात्रं वा ?
३. अस्माकमपि किञ्चिद्दायित्वं वर्तते वा ?
४. वयं कथम् उपनिषद्वाक्यं सार्थकं कुर्याम ?
५. मातरं प्रति कथम् उपेक्षाभावं विहाय आदरभावनां तनुमः ?

इत्यादीनां प्रश्नानाम् उत्तरं समाधानं वा यदि स्वस्मिाआत्मनि अन्विषामस्तर्हि समाधानं प्राप्स्यामो वयम्। स्मर्तव्यमस्माभिरस्मदीयशास्त्रानुसारं जीवने जागरणात् पश्चात् भवतु नाम वयं न परिपालयेम परम् अस्मत्कर्म पृथिवीवन्दनेन आरभते। यथा–

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णोः पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

उच्यते हि लोके–

पृथ्वीमातृसमा नास्ति माता काचिद्गरीयसी।
लौकिक्यो मातरो ह्यन्या एषैव पारमार्थिकी।।
पृथ्वीमातापि मातेव वन्द्या भवति सर्वदा।
पृथिवीसेवनं कृत्वा भवेम मातृसेवकाः ।।

यदि वयं मातुः कष्टं हितञ्च चिन्तयिष्यामस्तर्हि अस्मत्सु पुत्रत्वं संरक्षितं भवति नान्यथा। यतोहि पुत्रस्य व्युत्पत्तिरेवमेव वर्तते शास्त्रेषु –

"पुन्नाम्नो नरकात् त्रायते योऽसौ पुत्रः" ।

नरकपदेनात्र दुःखं कष्टं वा ग्राह्यम्। यदि मातृदुःखं वयं चिन्तयामस्तर्हि पुत्रत्वम् अन्यथा पशुत्ववत् श्मसानतुल्यञ्च अस्मज्जीवनम्। उच्यते हि –

यत्र न देशोद्धृतकामनास्ते न मातृभूमेर्हितचिन्तनञ्च।
न राष्ट्ररक्षा बलिदानभावः श्मसानतुल्यं नरजीवनं तत् ।।

अन्यच्च–

जिनको न निजमाता तथा मातृभूमिगौरव का भान है ।
वह नर नहीं, वह पशु निरा तथा मृतक समान है ।।

यदि वयं मातृदुःखमपहरामस्तर्हि मन्मतौ अधोलिखितवेदवाक्यस्य भविष्यामो वास्तविकाधिकारिणः–

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" इति शम् ।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः।।

अचानक आवेग में आकर बिना सोचे समझे कोई भी काम नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेक ही सबसे बड़ी विपत्तियों का घर होता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति सोच–समझकर कार्य करता है, गुणों से आकर्षित होकर लक्ष्मी उन्हें स्वयं चुनती हैं।

वर्तमानयुगे भारतीयसंस्काराणां महती आवश्यकता

डॉ. वन्दना रानी
सहायक आचार्या, संस्कृत–विभागः

मानवः सामाजिकः प्राणिः कथ्यते एवं मानवान् सामाजिकः कर्तुं संस्कृत्याः बहुमूल्येषु उपादानेषु संस्काराः अनुपमाः वर्तन्ते। आद्ये समये नवजातः न तु सामाजिकः न च असामाजिकः भवति अपितु पशुवत् एकः जैविकी इकाई भवति। ये परिष्करणमाध्यमेन जीवनादर्शान् प्रति उन्मुखी कृत्वा तान् सामाजिकाः सम्पादयन्ति ते एव संस्काराः। एवं संस्काराः एव जनान् सभ्याः असभ्याश्च सम्पादयन्ति। अतः यदि अद्यतनस्य समाजः सभ्यसमाजः अस्ति तर्हि संस्काराणाम् उपयोगिता कथं न्यूना भवितुमर्हति!

संस्काराः परिष्करणस्य अनुशासनस्य च अन्तः साधनाः सन्ति ये सामाजिक–नैतिकोच्चादर्शान् प्रति स्वाभाविकीं प्रेरणां यच्छन्ति। अन्तःप्रेरणा सर्वदा बाह्यसाधनानाम् अपेक्षा प्रभावकारी भवति। आधुनिकसमाजे सर्वकारनिर्मिताः संवैधानिकनियमाः परिष्करणस्य सामाजिकानुशासनस्य च साधनाः जाताः सन्ति। आत्मप्रेरणायाः अभावे केवलं भयमात्राधारितानि एतानि बाह्यसाधनानि सामाजिकताः नैतिकताः एवम् उच्चादर्शान् प्रति जनान् प्रेरयितुं प्रायः निष्प्रभाविनाः सिद्धयन्ति येषां ज्वलन्तप्रमाणानि सन्ति– आतङ्कवादः, पृथक्तावादः एवं पारिवारिकविखण्डनसदृशि समस्यायाः विस्फोटः। अतः संवैधानिकनियमानां सम्यग्पालनार्थमपि संस्कारेण सुसंस्कृतमनसः एव आवश्यकता भवति। भारतीयसंस्काराः मूलतः सामाजिक–सांस्कृतिक–नैतिकमूल्यानां नियामकाः, अतः इदानीं तेषां महती आवश्यकता वर्तते।

संस्काराः विविधप्रतीकात्मकक्रियायाः सामूहिकाभिव्यक्त्या सहभागिता, समन्वयवादिता, समायोजनं चापि शिक्षयन्ति ये आधुनिकवैश्वीकरणस्य मूलाधारभूताः सन्ति। एतेषां विहीनः वैश्वीकरणः सामाजिकविषमताः जनयन्ति, जनान् परमार्थस्थाने स्वार्थं, सामाजिकतास्थाने व्यक्तिवादं च शिक्षयन्ति। वस्तुतः संस्काराः एव मानवान् सामाजिक–सांस्कृतिकमूल्यान् प्रति संवेदनशीलः करोति। इत्थं व्यक्तित्त्वस्य विकासेन मानवानां कल्याणं सम्पद्य विश्वसमाजेन सह जनान् सामञ्जस्यस्थापनं शिक्षयन्ति। अतः वैश्वीकरणस्य आधुनिकयुगसन्दर्भेऽपि संस्काराणाम् उपयोगिता अन्यूना एव।

विविधाः संस्काराः प्रायः भावव्यञ्जकाः प्रतीकात्मकाः अनुष्ठानाः च भवन्ति येषां मुद्रायां इङ्गितेषु च बहुविधवैज्ञानिकता समाहिता वर्तते। उदाहरणार्थं– जलं सृष्टिशक्त्याः प्रतीकः जीवनाधारः च इति ज्ञातमेव। आद्ये क्षणे पृथिव्यां केवलं जलमेवासीत्। अद्यापि जलस्य अतिवृष्टिरनावृष्टिश्च प्रलयं मङ्गलं वा सम्पादयितुं समर्थः। जलस्य एतदेव महत्त्वस्य प्रतीकरूपेण यज्ञसंस्कारादिसमये जलस्य कल्याणकारिता, शीतलता, पवित्रतादि एतादृशमेव महत्त्वस्य प्रतीकरूपेण यज्ञसंस्कारादिसमये जलकलशस्य विधानं कृतमस्ति। विवाहसंस्कारावसरे कन्यायाः पिता वरहस्ते जलकलशं प्रदाय तयोः जीवने एतादृशा एव शीतलता, पवित्रतादि

कामयन् कन्यादानस्य सङ्कल्पं करोति। ये एतादृशान् वैज्ञानिकरहस्यान् न जानन्ति तैः सांस्कारिककर्मकाण्डानां एतादृशः स्वरूपः पाखण्डमात्रः कथ्यन्ते। एतादृशी मानसिकता वस्तुतः अधुनातनजनानां चिन्तनशक्त्याः, समग्रतावादीदृष्टेष्व अभावस्य परिचायकः खलु। अत्रैव इदमपि सत्यं यत् संस्काराणां प्रायोगिकस्वरूपस्य परिवर्तितजीवनेन सह तार्किकसामञ्जस्यस्यापि आवश्यकता वर्तते। जनानां जीवनशैली परिवर्तिता जाता। अतएव आधुनिके मनोवैज्ञानिकवातावरणे पौरोहित्यमूलक–अतिशयकर्मकाण्डप्रधानसंस्काराणां स्थाने सामाजिकविज्ञानदृष्ट्या तर्कनिष्ठव्यवहारिकस्वरूपस्य च आवश्यकता विद्यते। अस्मिन् सन्दर्भे आर्यसमाजस्य सनातनधर्मसभायाः ब्रह्मसमाजादेः च भूमिका प्रशंसनीया वर्तते। अत्र ध्यातव्यः अस्ति यत् संस्काराणां रूढिवादी अप्रासङ्गिकस्वरूपः एव समीक्ष्यः न तु एतासाम् उपयोगिता उद्देश्यश्च।

अतः इत्थं स्पष्टमस्ति यत् संवेदनाहीनोपभोक्तावादी आधुनिके भौतिकयुगे न केवलं भारतीयसंस्काराणाम् उपयोगिताऽस्ति अपितु मानवतायाः कल्याणाय निरन्तरम् अमृतवर्षां कर्तुं भारतीयसंस्काराः एव समर्थाः खलु।

प्रदोषे दीपकश्चन्द्रः प्रभाते दीपको रविः।
त्रैलोक्ये दीपको धर्मः सुपुत्र कुलदीपकः।।

शाम का दीपक चन्द्रमा होता है, सुबह का दीपक सूर्य होता है, तीनों लोकों का दीपक धर्म होता है और कुल का दीपक सुपुत्र होता है।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यांविहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति।।

जिस प्रकार से अन्धे व्यक्ति के लिए दर्पण कुछ नहीं कर सकता, उसी प्रकार से विवेकहीन व्यक्ति के लिए शास्त्र भी कुछ नहीं कर सकते।

महात्मा गांधी और संस्कृत

डॉ. राजेश कुमारः
सहायक आचार्यः (अतिथि)
संस्कृत–विभागः

इस समय देश में आजादी का अमृत महोत्सव का कार्यक्रम चल रहा है। इस राष्ट्र व्यापी कार्यक्रम का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मार्च 2021 को अहमदाबाद में किया था। निर्धारित कार्यक्रम में अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पूर्व प्रारंभ हुआ और यह कार्यक्रम 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। किसी भी राष्ट्र के लिए आजादी के 75 वर्ष में होना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी आजादी के लिए लाखों–करोड़ों लोगों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इन आजादी की लड़ाई के प्रमुख नायकों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का योगदान अविस्मरणीय है। गांधीजी के लिए राजनीति का लक्ष्य सत्ता पाना नहीं था बल्कि एक नैतिक समाज का निर्माण करना था। गांधीजी की नैतिकता सनातन धर्म पर आधारित नैतिकता थी। हम सभी जानते हैं कि गांधीजी की सबसे प्रिय पुस्तक संस्कृत में लिखी गई श्रीमद्भगवद्गीता है। गांधीजी श्रीमद्भगवद्गीता को माता की तरह मानते थे। गांधी जी ने स्वयं कहा है कि गीता शास्त्रों का दोहन है। मैंने कहीं पढ़ा था कि सारे उपनिषदों का सार उसके 700 श्लोकों में आ जाता है। इसके लिए निश्चय किया कि कुछ ना हो सके तो गीता के ज्ञान प्राप्त कर लो। आज गीता मेरे लिए केवल बाइबल ही नहीं केवल कुरान ही नहीं है, मेरे लिए माता हो गई है। मुझे जन्म देने वाली माता तो चली गई, पर संकट के समय गीता माता के पास जाना मैं सीख गया हूं। मैंने देखा है कि जो कोई गीता माता की शरण में जाता है उसे अमृत की तरह तृप्ति मिलती है।[1]
गीता महात्म्य में यह श्लोक कहा जाता हैः–

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सषः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।

अर्थात् गीता को सभी उपनिषदों का निचोड़ कहा गया है– सभी उपनिषद् गाय हैं और कृष्ण दूध निकालने वाले दोग्धा। अर्जुन बछड़ा हैं और उससे निकालने वाला दूध गीता रूपी अमृत है। सुधीजन दुग्धपान करने वाले हैं। महात्मा गांधी को बीस वर्ष की अवस्था में श्रीमद्भगवद्गीता से परिचय हुआ। उसके बाद से श्रीमद्भगवतगीता आजीवन पथ प्रदर्शक, मार्गदर्शक रही और माता के रूप में सदैव वात्सल्य प्रेम का आशीर्वाद मिलता रहा। गांधी जी ने अनासक्ति योग नाम से गीता की गुजराती भाषा में टीका भी लिखी। यही कारण है कि गांधीजी ने बार–बार कहा है कि संस्कृत का अध्ययन प्रत्येक भारतीयों को करना चाहिए। गांधी जी एक जगह कहते हैं कि – संस्कृत का अध्ययन करना प्रत्येक भारतीय विद्यार्थी का कर्तव्य है। हिंदुओं का तो है ही मुसलमानों का भी है क्योंकि आखिर उनके पूर्वज राम और कृष्ण ही थे। और अपने पूर्वजों को जानने के लिए संस्कृत सीखनी चाहिए।[2] गांधीजी यह विचार राष्ट्रीय शिक्षा

परिषद् की बैठक में हरिद्वार में 20 मार्च 1927 को दिए अपने भाषण में व्यक्त किया था। उन्होंने आगे कहा कि मुझे अपनी विरासत और अपने पूर्वजों पर गर्व है जिन्होंने भारत को भौतिक एवं सांस्कृतिक ऊंचाइयां प्रदान की। आप इस अतीत के बारे में कैसा अनुभव करते हो? क्या आपको लगता है कि आप भी उस वि. रासत में सहभागी और उसके उत्तराधिकारी हैं और इसलिए ऐसी किसी वस्तु पर आपको गर्व है जो जितनी मेरी है उतनी ही आपकी भी है? या आप उसके लिए अपने को पराया समझते हो। अजनबी जैसे उसकी बगल में गुजर जाते हो आप मुसलमान हो और मैं हिंदू हूं हमारे अलग–अलग धर्म हो सकते हैं किंतु इस कारण से हम अपने सांस्कृतिक विरासत से वंचित नहीं हो सकते हैं। जो आपकी भी और मेरी भी है।[2]

आमतौर पर हम सब देखते हैं कि बचपन में संस्कृत के प्रति किसी का भी अनुराग कम ही होता है। गांधी जी को भी बचपन में संस्कृत के प्रति कोई रुचि नहीं थी किंतु एक अध्यापक कृष्णशंकर के समझाने बुझाने पर उन्होंने संस्कृत की कक्षा में बैठना शुरू किया। गांधीजी अपने सभी परिचितों और सहयोगियों से संस्कृत सीखने का आग्रह करते थे। भारत की विचारधारा में संस्कृत की महत्ता को समझते हुए उन्होंने कहा था कि मेरी राय में धार्मिक बातों से संस्कृत का उपयोग करना छोड़ा नहीं जा सकता। अनुवाद कितना ही शुद्ध क्यों न हो किन्तु वह मूल मंत्रों का स्थान नहीं ले सकता। मूल मंत्रों की अपनी एक विशेषता है जो अनुवाद में नहीं आ सकती।[3]

गांधीजी का स्पष्ट मानना था कि हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति तथा संस्कृत भाषा का एक दूसरे से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनका कहना था कि– संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य का अध्ययन यथेष्ट मात्रा में ना चलता रहा तब हिंदू धर्म का नाश हो जाएगा। मौजूदा शिक्षा पद्धति की कमियों के कारण ही संस्कृत सीखना कठिन मालूम होता है असल में यह कठिन नहीं है।[4] अपने बड़े पुत्र हरिलाल को गांधी जी ने अंग्रेजी फ्रेंच भाषाओं का मोह छोड़कर संस्कृत सीखने की सलाह दी थी। उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि संस्कृत भाषा का ज्ञान से सब भारतीय भाषाओं को जानने का द्वार खुल जाता है। उसको तुमने अपने हाथ से बंद कर दिया। तुमने फिर भी फ्रेंच की चर्चा छेड़ी है इसलिए इतना लिख रहा हूं कि अगर तुम अब भी सोच विचार छोड़ दो और संस्कृत पढ़ो और उसके निजी अभ्यास के लिए 7 के बदले 8 रूपये भी खर्च करो तो मुझे प्रसन्नता होगी।

गांधीजी ने स्वयं ही संस्कृत सीखने में आने वाली जटिलताओं को देखा था इसलिए अपनी आत्मकथा में उन्होंने इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि "भूमिति की अपेक्षा संस्कृत ने मुझे अधिक परेशान किया। भूमिति में रटने की कोई बात थी ही नहीं, जबकि मेरी दृष्टि में संस्कृत में तो सब रटना ही होता था। यह विषय भी चौथी कक्षा से शुरू हुआ था। छठी कक्षा में मैं हारा। संस्कृत शिक्षक बहुत कड़े मिजाज के थे। विद्यार्थियों को अधिक सिखाने का लोभ रखते थे। संस्कृत वर्ग और फारसी वर्ग के बीच एक प्रकार की होड़ रहती थी। फारसी सिखाने वाले मौलवी नरम मिजाज के थे। विद्यार्थी आपस में बात करते थे कि फारसी तो बहुत आसान है और फारसी शिक्षक बहुत भले हैं। विद्यार्थी जितना काम करते हैं उससे वे संतोष कर लेते हैं। मैं भी आसान होने की बात सुनकर ललचाया और एक दिन फारसी के वर्ग में जा बैठा। संस्कृत शिक्षक को बहुत दुख हुआ। अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग में उन्होंने स्वीकार किया है कि जब विधिवत एवं ध्यान पूर्वक उन्होंने संस्कृत सिखाने पर अपना ध्यान केंद्रित किया तो वे

संस्कृत को अच्छी तरह से सीख सके। महात्मा गांधी ने अपने विद्यार्थी जीवन की संस्कृत पठन–पाठन की रोचक कथा को आगे बढ़ाते हुए वे लिखते हैं– संस्कृत शिक्षकों को दुख हुआ। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि यह समझ तू किनका लड़का है। क्या तू अपने धर्म की भाषा नहीं सीखेगा। तुझे कोई कठिनाई हो तो मुझे बता, मैं तो सब विद्यार्थियों को बढ़िया संस्कृत सिखाना चाहता हूं। आगे चलकर उसमें रस के घूंट पीने को मिलेंगे। बड़े हो जाने पर उन्होंने अपने संस्कृत ज्ञान के लिए अपने शिक्षकों को धन्यवाद किया है। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी लिखते हैं– आज मेरी आत्मा कृष्णशंकर पांडेय का उपकार मानती है क्योंकि जितनी संस्कृत में वह उस समय सीखा उतनी भी न सीखा होता तो आज संस्कृत शास्त्रों में जितना रस ले रहा हूं, उतना भी नहीं ले पाता। मुझे तो इस बात का पश्चाताप होता है कि मैं संस्कृत अधिक न सीख सका, क्योंकि बाद में मैं समझा कि किसी भी हिंदू बालक को संस्कृत का अच्छा अभ्यास किए बिना रहना ही नहीं चाहिए।[5]

इस प्रकार हम देखते हैं कि गांधी जी ने देश की सामाजिक और राजनीतिक जरूरतों को सर्वोपरि रखकर राष्ट्रभाषा हिंदी को पूरे देश में पढ़ाए जाने की वकालत की। बालकों के कोमल मन एवं मातृत्व को सर्वोपरि रखकर उन्होंने मातृभाषा को उचित स्थान दिए जाने की भी बात कही। इसके साथ साथ संपूर्ण विश्व के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की आवश्यकताओं को समझते हुए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान बालकों को दिए जाने का भी मार्ग उन्होंने हमेशा प्रशस्त किया। भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत, देश की अस्मिता और अपनी पहचान से कोई समझौता न करते हुए भी गांधी जी दिखते हैं। इसीलिए उन्होंने संस्कृत के पठन–पाठन को प्रोत्साहित किए जाने के प्रति उत्सुक बने रहें।

हम सबको पता है कि वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत में संरक्षित एवं संचित ज्ञान का अथाह भंडार है। यह सम्पूर्ण प्राचीन ज्ञान संस्कृत में है। वेद, पुराणों में संकलित ज्ञान अपनी विशिष्टता, मौलिकता एवं वैज्ञानिकता के कारण आज पूरे संसार को आकर्षित कर रहा है। जिनका विश्व के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। लोग उसको पढ़ रहें हैं, समझ रहें हैं और उसपर चलने का प्रयास कर रहे हैं।

महात्मा गांधी के संस्कृत प्रेम के जानने समझने के बाद यह जानना भी जरूरी है कि महात्मा गांधी पर संस्कृत में सैकड़ों किताबें लिखी गई। उनमें से कई प्रमुख किताबें बहुत प्रामाणिक एवं प्रसिद्ध हैं। जिसमें गांधी के जीवन दर्शन, राजनीतिक दर्शन, सामाजिक दर्शन को बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। गांधीजी के 40 वर्षों के राजनीतिक जीवन को संस्कृत के विद्वानों ने भी अपने तरह से प्रस्तुत किया है। गांधी जी के व्यक्तित्व में ऐसा आकर्षण था कि कोई भी व्यक्ति उनसे मिलने के बाद उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। इसलिए संस्कृत की प्रसिद्ध कवयित्री पंडिता क्षमाराव गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन से प्रभावित हुई और उसमें भाग लेने के लिए गांधी जी से मिली। गांधी जी ने उन्हें आन्दोलन में जीवन लगाने से मना किया। फिर भी पंडिता क्षमाराव ने गांधी जी के जीवन से प्रभावित होकर तीन पुस्तकों की रचना की जिसमें (1) सत्याग्रहगीता (2) उत्तरसत्याग्रह गीता और (3) स्वराजविजय शामिल है। सत्याग्रह गीता में अफ्रीका में गांधी जी के द्वारा चलाए गए हिंसक आंदोलनों से लेकर 1931 में गांधी इरविन पैक्ट तक के रोमांचक विवरण काव्य शैली में निबद्ध है। उत्तरसत्याग्रह गीता

नामक काव्य में सन् 1931 से लेकर सन् 1944 तक गांधी जी का जीवन और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास चित्रित किया गया है। वहीं स्वराजविजय नामक काव्य में गांधीजी के समग्र जीवन के साथ–साथ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास चित्रित किया गया है। पंडिता क्षमाराव का यह महाकाव्य पेरिस से 1932 में प्रकाशित हुआ। भारत में अंग्रेजी शासन के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाओं के वर्णन वाले ग्रंथ का प्रकाशन प्रतिबंधित था। परन्तु इससे पहले पंडित श्रीचारुदेव शास्त्री जी ने स्वतंत्रता संग्राम के महानायक महात्मा गांधी के चरित्र का यशोगान किया है। श्रीचारुदेव शास्त्री जी गांधी जी के समकालीन थे। कई बार स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में गांधी जी से मिलना हुआ था। श्रीचारुदेव शास्त्री जी भी गांधी जी के जीवन दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने अपने श्रीगांधीचरितम् नामक ऐतिहासिक गद्य काव्य के कुल छह परिच्छेदों में गांधीजी के वंश परम्परा, जन्म, अध्ययन के लिए विदेश गमन, अफ्रिका गमन, सत्याग्रह, सहकारिता, कारावास, भाषण, अनशन, नमक विधान का विरोध, दांडी यात्रा आदि विविध विषयों पर विस्तार से चर्चा की। इस ग्रंथ में 40 उपविभाग है और उन तमाम विषयों की चर्चा की गई है जिनका गांधी जी एवं उनके स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्ध रहा है। इस गद्य काव्य के अंत में यह प्रतिज्ञा की घोषणा की गई है कि गांधी जी के निर्णायक और कुशल नेतृत्व में भारत को अवश्य स्वतंत्रता प्राप्त होगी। यह गद्य काव्य 1930 में लाहौर से प्रकाशित हुआ था।

अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गांधी जी की प्रेरणा से जेल में रहते हुए सरदार पटेल ने श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की संस्कृत शिक्षक के 24 खंडों को मंगाकर संस्कृत सीखा। गांधी जी के अधिकांश वरिष्ठ सहयोगी एवं अनुयायी संस्कृत प्रेमी थे। जिनमें आचार्य विनोबा भावे, राजेन्द्र प्रसाद, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी आदि प्रमुख थे।

संदर्भ सूचीः–

1. अंतिम जन, वर्ष–2, अंक 7, संख्या 7 मई–अगस्त 2019, पृष्ठ–83
2. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 33, पृष्ठ–185
3. गांधीजी (2008) मेरे सपनों का भारत, पृष्ठ–225
4. वही, पृष्ठ 223
5. गांधी, मोहनदास करमचंद (2008) सत्य के प्रयोग, राजपाल एंड संस, दिल्ली, पृष्ठ–19

अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशेवर्षे समूलं तद् विनश्यति।।

अन्याय या गलत तरीके से कमाया हुआ धन दस वर्षों तक रहता है। लेकिन ग्यारहवें वर्ष वह मूलधन सहित नष्ट हो जाता है।

वास्तुशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ व ग्रंथकार

डॉ. रेणु बाला
अतिथि प्रवक्ता, संस्कृत विभाग

पृथिवी पर सम्यक् रूप से अनुकूलन के साथ निवास बनाने की विद्या को वास्तुविद्या कहते हैं। समरांगणसूत्रधार नामक वास्तुग्रंथ में कहा गया है कि पृथिवी मुख्य वास्तु है। उस पर जो उत्पन्न होते हैं उनके निवास हेतु जो प्रसाद आदि बनाए जाते हैं वह भी वास्तु कहे जाते हैं। वास्तुविद्या को ही वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र और स्थापत्य वेद भी कहते हैं।

वास्तुशास्त्र का मुख्य अभिप्राय है निवास के लिए उपयुक्त स्थान। कोई भी प्राणी जहां भी निवास करता है वह उसका वास्तु है। वास्तु के अनेक भेद होते हैं यथा गृह, देवालय, जलाशय, ग्राम, पुर आदि। वास्तु के मूलभूत वेद, वेदांग, पुराण और आगमग्रंथों में प्राप्त होते हैं। वास्तुशास्त्र का विशेष रूप से ज्योतिष और कल्प साथ घनिष्ठ संबंध है। शुल्बसूत्रो में जब यज्ञ वेदी का निर्माण किया गया तो उस समय वास्तुशास्त्र का सर्वाधिक वर्णन प्राप्त हुआ है। अतः शूल्बसूत्रों में यज्ञ वेदी की परिकल्पना इस शास्त्र की आधारशिला बनी।

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्य वेद ही आगे जाकर वास्तुशास्त्र के रूप में जाना गया। स्थापत्य वेद में मनुष्य के लिए गृह, ग्राम, नगर आदि का वर्णन है जो सामान्य जन से संबंधित था। राजा के लिए उससे संबंधित राजप्रसाद और सार्वजनिक रूप से धार्मिक स्थान जलाशय, वापी, कूप, तालाब, मंदिर आदि का वर्णन किया गया है। इन सब का समाहार स्थापत्य शास्त्र में प्राप्त होता है। वास्तु शब्द निवास अर्थ वाली वस् धातु के साथ तुन् प्रत्यय करने पर बनता है जिसका अर्थ है निवास योग्य स्थल, भूखंड या गृह। वेद में वास्तु पद का अर्थ निवास या गृह है। अथर्ववेद में सुवास्तु शब्द आया है जिसका अर्थ शोभन गृह है और अवास्तु शब्द भी प्राप्त होता है जिसका अर्थ गृह का अभाव है। यजुर्वेदसंहिता में यज्ञ वास्तु के अर्थ में आया है।आपस्तबश्रौतसूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र आदि ग्रंथों में वास्तु का अर्थ सामान्य आवास है। रामायण और महाभारत में इसे भवन निर्माण का बोधक माना है। मत्स्यपुराण में देवताओं के निवास के लिए भी वास्तु शब्द आया है और कहा गया है जो देवताओं के मंदिर हैं वहीं वास्तु हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गृह, क्षेत्र, बगीचा, सेतु, तालाब आदि के लिए वास्तु शब्द का प्रयोग हुआ है। कामिका तंत्र में विमान, प्रसाद आदि के भवनों के रूप में वास्तु शब्द प्राप्त होता है। स्वतंत्र रूप से वास्तुशास्त्र के ग्रंथ की रचना कालांतर में होने लगी थी। अपराजितपृच्छाग्रंथ में वास्तुशास्त्र की पूर्णतया चर्चा हुई। यहां ग्राम, नगर आदि के लिए वास्तु शब्द आया है। मायादानव रचित मायामतम् में भूमि के लिए वास्तु शब्द का प्रयोग हुआ है। मानसार ग्रंथ में देव–मनुष्यों के भवनों और भूमि के लिए भी इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

ऋग्वेद में गृह के लिए अनेक शब्द प्रयोग हुए हैं जैसे शरण, शर्म, वरूथ्य, सदन, दुरोण आदि। यजुर्वेद के लिए कुंड शब्द मंडप के निर्माण में प्रयुक्त हुआ है। अथर्ववेद के संपूर्ण शालासूक्त में भवन निर्माण का वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है। इसी कारण अथर्ववेद के उपवेद के रूप में स्थापत्य को माना गया। शतपथब्राह्मण में यज्ञ आदि के प्रसंग में चिति निर्माण, ईटों का निर्माण, उनका आकार –प्रकार, मापन आदि का वर्णन विस्तृत रूप से हुआ है जो कि संपूर्ण रूप से वास्तु का विषय है। वैदिक संहिता में अनेक स्थलों पर वास्तु शब्द का प्रयोग किया गया है यथा धार्मिक कर्मकांड में यज्ञ वेदी के निर्माण में, ईटों के निर्माण में, उसके प्रयोग में जनोपयोगी प्रसाद का निर्माण, राज प्रसाद या जन गृह आदि के निर्माण में। ऋग्वेद में ग्राम शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर मिलता है। पाषाण से निर्मित दुर्गों का वर्णन भी प्रयुक्त हुआ है। 'अश्मयी 'नाम से लोहनिर्मित पुर का भी वर्णन है जिसे 'आयसीपुः' कहा गया। ऋग्वेद में एक स्थान पर 'सहस्त्रस्थाणु' भवन का उल्लेख है ।'वास्तोष्पति' गृहरक्षक देव है। उनके पूजन से निरोगता, धन संपत्ति की प्राप्ति, पशु रूपी संपत्ति की प्राप्ति होती है। ऋग्वेद में निवास के अर्थ में प्रयुक्त गृह के 30 नाम आए हैं। निघंटु ने गृह के लिए 20 नाम बताए हैं ।इस प्रकार वेद से लेकर संस्कृत साहित्य तक वास्तु शब्द की प्राप्ति अनेक जगह हुई है। यह प्रमाणित करता है कि वास्तुशास्त्र एक प्राचीन शास्त्र है।

भारतीय दर्शन में निराकार और साकार दो परंपराएं प्राप्त होती है। भारतीय दर्शन मानता है कि कण–कण में ब्रह्म विद्यमान है और वह निराकार है। साधारण मनुष्य का उस स्तर तक जाना अत्यंत कठिन है। इस हेतु एक भौतिक स्वरूप की कल्पना करना आवश्यक है, क्योंकि मनुष्य का मन किसी एक पिंड में ही केंद्रित हो सकता है। इसीलिए दिव्य शक्तियों से युक्त एक ऐसे देवता की कल्पना की गई। वास्तुपुरुष का आगमपुराण में वर्णन है कि यह एक आधारभूत देव है जिसके ऊपर ब्रह्मा, इंद्र, सूर्य इत्यादि 45 देवताओं की स्थिति है। 45 देवताओं के स्वरूप से मिलकर एक संपूर्ण वास्तु की कल्पना की गई जो किसी भी निर्माण करने वाले व्यक्ति का कल्याण करता है। वास्तुशास्त्र के उद्भव की कथा पुराणों में मिलती है। अंधकासुर नामक एक राक्षस था। उसका विनाश करना आवश्यक था। इस हेतु शिव का उसके साथ युद्ध हुआ। लंबे समय तक चले उस युद्ध से शांत हुए उनके ललाट से पसीने की एक बूंद गिरी और वह बूंद एक पुरुष के रूप में प्रकट हुई और विस्तार लेने लगी। एक प्रकाश पुंज के रूप में फैलने लगी जिस ने अंधकासुर का वध किया और अंधकार का नाश हुआ। लेकिन उस पुरुष का विस्तार नहीं रुका। वह बढ़ता गया और उसके विस्तार को देखकर देवता चिंतित हुए। ब्रह्मा जी ने कहा कि उसे रोका जाए।तब सभी देवताओं ने जकड़ लिया ।उसे उल्टा लिटा दिया और उसके विभिन्न अंगों पर विराजमान हो गए।इससे वह पुरुष दुखी हुआ। तब उसने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की। ब्रह्मा जी ने कहा कि वह देवता माना जाएगा तभी से उसे वास्तुपुरुष कहा जाने लगा। यह कथा वास्तुकथावल्ली में भी प्राप्त होती है।

ग्रंथों में मुख्यतया मनुष्यों के घर का प्रतिपादन किया गया है। सारे आश्रमों का आश्रय गृहस्थ आश्रम ही है। पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि के लिए गृहस्थ के लिए एक शुभ वास्तु या गृह की आवश्यकता होती है। भविष्यपुराण में कहा है सभी गृहस्थ क्रियाएं घर के बिना नहीं हो सकती। इसलिए उसे गृह का निर्माण करना ही चाहिए।

वेद से वैदिकोत्तर साहित्य में वास्तुशास्त्र का वर्णन विभिन्न प्रसंगों में हुआ है। ऋग्वेद में वास्तु शब्द

का अर्थ भवन और गृह है। विश्वकर्मा ने विश्वकर्मवास्तुशास्त्र नामक ग्रंथ में देव, नर, गज, अश्व आदि के भी निवास योग्य भूमि शिल्पज्ञों द्वारा वास्तुसंज्ञक कही गई है। मानसारग्रंथ में केवल निवास स्थान ही वास्तुसंज्ञक नहीं है बल्कि गृहादि निर्माण के लिए प्रयुक्त वस्तुओं जैसे इष्टिका,शिला, वृक्ष, कीलक आदि को भी विश्वकर्मा ने वास्तु संज्ञक माना है। इसमें हर्म्य, प्रासाद,पर्यकं आदि वास्तु संज्ञक गिने गए हैं। भोजराज ने समरांगणसूत्रधार में पुर, देश, पृथिवी आदि का भी विचार वास्तुशास्त्र में किया है। ऋग्वेद में निवास स्थान के लिए दम, गय, धामन, सदन, आयतन, ओकस् निवेशन इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ है। अथर्ववेद में द्वेशालासूक्त में चतुश्शाल गृह का नाम आया है। जैमिनीब्राह्मण में 'छदिष्मतः' गृह का विवरण प्राप्त हुआ है।

रामायण और महाभारत में वास्तु से संबंधित अनेक वर्णन मिलते हैं। किष्किंधाकांड में विचित्र गुफा का वर्णन शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है। रामायण की युद्धकांड में वास्तुविद् नल और नील का वर्णन है। नल कृताच्या के गर्भ से उत्पन्न विश्वकर्मा के पुत्र थे। नल भी विश्वकर्मा के सदृश वास्तुकार में कुशल थे। समुद्र के ऊपर भारत से लंका पर्यंत 10 योजन का दीर्घ सेतु उनकी अप्रतिम वास्तुकला का द्योतक है। विश्वकर्मा के द्वितीय पुत्र नील भी नल के सहायक थे। इसी प्रकार पुष्पकविमान आदि भी इसका उदाहरण है। महाभारत में वास्तुशास्त्र के अनेक उदाहरण मिलते हैं जैसे इंद्रप्रस्थपुरी, द्वारिकापुरी, मिथिलापुरी, विभिन्नसभाभवन, लाक्षागृह आदि।

पुराणों में वास्तुशास्त्र का वर्णन मुख्य रूप से मत्स्यपुराण, अग्निपुराण, स्कंदपुराण, गरुड़पुराण आदि में प्राप्त होता है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश को सृष्टि के मूल रूप में माना गया है। सृष्टि के मूल कारण परब्रह्म ही हैं जो पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में वर्णित है। मत्स्यपुराण के 10 अध्यायों में वास्तुशास्त्र का विशेष रूप से वर्णन प्राप्त हुआ है। 252 वां अध्याय वास्तुभूतोंद्भव अध्याय के नाम से जाना जाता है जिसमें वास्तुपुरुष की उत्पत्ति, भूपरीक्षण, 81 वास्तुपदविचार इत्यादि का वर्णन है। 255 वें अध्याय में रुचक, वज्र, द्विवज्र इत्यादि पांचमहास्तम्भों का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य अध्यायों में मंदिरस्थापत्य और प्रासादस्थापत्य का भी वर्णन प्राप्त होता है। प्रतिमालक्षण का भी सूक्ष्मता से वर्णन यहां किया गया है। अग्निपुराण के सोलह अध्याय वास्तुशास्त्रीय अध्याय माने गए हैं। नारदवास्तु, प्रसाद वास्तु, प्रतिमावास्तु इत्यादि का इसमें विशेष रूप से वर्णन किया गया है।गरुड़पुराण के दो अध्याय वास्तुसंबंधी हैं। इसमें तीन प्रकार से इसकी चर्चा की गई है आवासीय, सैन्य तथा देवालय। पांच प्रकार के प्रासादों का वर्णन भी यहां पर किया गया है। स्कंदपुराण के तीन अध्याय वास्तु से संबंधित है। वैष्णव महेश्वर खंडों में कक्ष,मंडप स्थानों का निर्माण संबंधी तथ्य हमें प्राप्त होते हैं। विष्णुधर्मोत्तरपुराण के 40 अध्यायों में वास्तुप्रतिमा और चित्रकला इत्यादि का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त भूपरीक्षण और वास्तुपुरुष के लक्षण इत्यादि का वर्णन भी इसमें प्राप्त होता है। भित्तिचित्र, निर्माणविधि, 64 पदविद्या, मंदिर व प्रासादवस्तुचित्रण और 100 प्रकार के देवप्रसादों के लक्षण और रचनाविधि आदि का वर्णन इसमें किया गया है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

कौटिल्य के अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ में राजनीतिक विषयों के साथ साथ ही वास्तुशास्त्रीय विचारों का भी अति विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में पुर, ग्राम, नगर आदि का अत्यंत विस्तृत वर्णन दिखाई देता है। राज्य में पुर,ग्राम, नगर, दुर्ग आदि कैसे और कहां बनाने चाहिए इसकी विशेष चर्चा यहां की गई है।कौटिल्य अर्थशास्त्र में गांव के परिमाण एक कोश या दो कोश होनी चाहिए इसका भी वर्णन किया गया है। दो गांव के बीच में सुरक्षा सीमा होनी चाहिए। सीमा का निर्धारण प्रकृति के अनुरूप नदी, तट, शैल, पर्वत, वन इत्यादि के अनुसार होना चाहिए। कृत्रिम रूप से शाल्मली, शमी,क्षीर आदि वृक्ष सीमा पर होने चाहिए। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नगरों की सुरक्षा के लिए दुर्ग का निर्माण करवाना चाहिए। नगरों के निर्माण के लिए वहां भूपरीक्षण भूचयन वास्तुपदविन्यास इत्यादि का महत्वपूर्ण वर्णन किया गया है। दुर्गविधान नामक प्रकरण में दुर्ग की सुरक्षा, प्राकार आदि का निर्धारण और लक्षण कौटिल्य ने बहुत ही स्पष्ट रूप से वर्णन किया है।

आगमशास्त्रीय ग्रंथ

आगमग्रंथों में स्थापत्य विद्या के अनेक तत्व समाविष्ट हैं। शैवागमसिद्धांतीय ग्रंथों में वास्तुकला के अद्भुत प्रतिमाविज्ञान के अनेक सिद्धांत प्रतिपादित हैं। कामिकागम में छह से अधिक अध्यायों में मूर्तिकला से वास्तुशास्त्र का निरूपण किया गया है। पुराण की अपेक्षा आगमग्रंथों में वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों का गंभीरता से विवेचन है। मंदिरों के नागर –द्रविड़ –बेसर प्रकार मूर्तियों के लिए प्रयुक्त हुए हैं। शुद्ध– मिश्र– संकीर्ण धातु अवस्था भेद से मूर्तियों के सिंचित–असिंचित–अपसिंचितप्रकार आदि अनेक विषय कामिका आगम में वर्णित है। करणागम में भी बारह अध्यायों में इसका वर्णन किया गया है। वे बारह अध्याय हैं –वास्तुविन्यासविधि, अधिष्ठानविधि इत्यादि। इसके अतिरिक्त सुप्रभेदागम, वैखानसागम आदि में भी वस्तुशास्त्रीय तत्व मिलते हैं।

वराहमिहिर की बृहत्संहिता

आचार्य वराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्संहिता ज्योतिषशास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके संहिता स्कंध के अंतर्गत वास्तुशास्त्र आता है। वास्तुशास्त्र ज्योतिषशास्त्र के संहिता स्कंध के अंतर्गत आता है। इस ग्रंथ में वास्तुविद्याध्याय, प्रासादलक्षणाध्याय, प्रतिमालक्षणाध्याय,वनसंप्रवेश, प्रतिमाप्रतिष्ठापन इत्यादि वास्तुशास्त्रीय विषय प्रतिपादित किए गए हैं। भवननिवेश के लिए भूचयन, भूपरीक्षण,वास्तुपदविन्यास, भवनों के द्वार का परिमाण इत्यादि विषयों का यहां पर विवेचन किया गया है। गृह निर्माण के लिए प्रयुक्त लकड़ी के चयन के लिए वनस्थान की चंदन, हरिद्रा, देवदार, शाल, शिंशपा आदि वृक्षों के लक्षण, कार्य आदि यहां पर बताए गए हैं। प्रतिमा वास्तु का भी निरूपण इसमें है।

वास्तुशास्त्रीय स्वतंत्र ग्रंथ

डॉ द्विजेंद्रनाथ शुक्ल ने अपने ग्रंथ 'Vastu Shastra, Hindu Science of Architecture Volume 1' में

वास्तुशास्त्रीय ग्रंथों की सूची दी गई है जो इस प्रकार है– विश्वकर्मशिल्पम, विश्वकर्मप्रकाश,विश्वकर्मवास्तुशास्त्र, सनत्कुमारवास्तुशास्त्र, समरांगणसूत्रधार, युक्तिकल्पतरु, अपराजितपृच्छा, वास्तुविद्या, वास्तुरत्नावली इत्यादि।

इसके अतिरिक्त हरिकृष्णशास्त्री ने संस्कृत वांग्मय के इतिहास में कुछ वास्तुशास्त्रीय ग्रंथों का उल्लेख किया है जैसे विश्वकर्मा का दीपार्णवः, भुवनदेव का अपराजितवास्तुशास्त्र, सूत्रधारमंडन का वास्तुमंडनम्, सूत्रधारनाथ का वास्तुमंजरी इत्यादि।

प्रमुख वास्तुशास्त्रीय ग्रंथ

वास्तुशास्त्र के तीन महत्वपूर्ण ग्रंथ माने जाते हैं। विश्वकर्मवास्तुशास्त्र, मानसार और मायामतम्, इन तीन ग्रंथों में वास्तुशास्त्र का विशद स्वरूप प्राप्त होता है।

विश्वकर्मवास्तुशास्त्र

विश्वकर्मा द्वारा रचित विश्वकर्मावास्तुशास्त्र भारतीय स्थापत्यकला का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें 87 अध्याय हैं। 1958 में तंजावुर से अनंतभट्टारक की प्रमाणबोधिनी व्याख्या के साथ वासुदेवशास्त्री और एन. बी.गदेर द्वारा इसे प्रकाशित किया गया। इस ग्रंथ के प्रारंभ में वास्तुनिर्माण से पूर्व काल दिक्निर्धारणविधि और द्रव्य संग्रह का निरूपण किया गया है। भगवान महेश्वर से विश्वकर्मा द्वारा वास्तुशास्त्र की ज्ञानप्राप्ति, पंचमहाभूत और तन्मात्राओं के लक्षण, भूमि की उत्तम, मध्यम, अधम भेद से ऐशान्य या पश्चिम में इष्टि का स्थापन, बारह प्रकार के ग्रामों के लक्षण,जातिवर्ण अधिवास, वास्तुनिर्माण में प्रयुक्त परमाणु–व्रीही–अंगुल–वितस्त्य आदि मानों का स्वरूप, नगरवास्तुपदविन्यास, पददेवता, गिरिदुर्ग, वनदुर्ग, जलदुर्ग आदिका वर्णन प्रारंभ के ग्यारह अध्यायों में किया गया है। इसके पश्चात राजप्रासाद, दुर्ग, देवप्रासाद का विस्तार से वर्णन यहां पर है। प्रारंभ में मंदिर वास्तु का विचार फिर राजप्रासाद के निर्माण के लिए दिक्वास्तु, बृहद्भवनस्वरूप, शालालक्षण, कोषागार इत्यादि अनेक विषयों का इसमें वर्णन प्राप्त होता है। इसके अनंतर सामान्य जनों के लिए एक–द्वि–त्रि–बहुशाल स्वरूप का निरूपण यहां पर किया गया है। अनेक प्रकार की वैदिकपीठ, दीपस्थापन के लिए स्तंभों पोतिका लक्षण, ग्राम–पुर–दुर्ग में प्रवेश हेतु द्वारों के लक्षण, मार्गों में तोरण आदि और विभिन्न अलंकरणों का वर्णन, मेरुभवन, कैलासभवन इत्यादि का यहां पर विवेचन किया गया है। इसके बाद के सात अध्यायों में सभी प्रकार के देवों के पीठलक्षण, वाहन आदि का निरूपण है। अंतिम तीन अध्यायों में उत्सवकालनिर्गम, प्रतिमापूजन भजन आदि फल मनुष्य जन्मफल का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

मानसारग्रंथ

प्रसन्नकुमार द्वारा संपादित मानसार के लेखक और काल के विषय में कुछ भी स्पष्ट नहीं है। इस ग्रंथ का प्रथम संपादन प्रसन्नकुमार ने ही 'Mansar : An Architecture and Sculpture' नामक ग्रंथ में किया है। मानसार शब्द का प्रयोग ग्रंथ में तीन अर्थों में है– लेखक के नाम, मापन जानने वाला वास्तुविद् या शिल्पी और मापन की विधियां। मानसारग्रंथ में 70 अध्याय हैं। इसके 40 अध्यायों में भवननिवेश और

नगरनिवेश का वर्णन है। उसके बाद दस अध्यायों में राजकीय वस्तुओं का वर्णन है। अंतिम बीस अध्यायों में सनातन –जिन बौद्ध मूर्तियों के लक्षण निरूपित किए गए हैं। प्रारंभिक 40 अध्यायों में वास्तुशास्त्र की पौराणिक उत्पत्ति, विकास, परिमाण वास्तुसंज्ञाविचार, शंकुस्थापना, वास्तुविन्यास, बलिकर्मविज्ञान, आठ प्रकार के ग्रामों के लक्षण, नगरविधान, गर्भविन्यास का वर्णन, प्रस्तरविधान का वर्णन, अनेक प्रकार के सामान्य भवनों उनके अंगों का वर्णन, अंतर्मंडल आदि अनेक प्रकारों का विधान, सात प्रकार के मण्डपों का स्वरूप, शालाविधान, गृहप्रवेश, गृहमान और द्वारमान स्थान आदि का वर्णन प्राप्त होता है। 40 से 50 अध्यायों में प्रासाद स्थापत्य में नृपभवन, राजागंविधान, रथलक्षण,सिंहासनलक्षण, शयन, तोरण आदि का विधान वर्णित है। 51 से 70 अध्यायों तक प्रतिमावास्तु के विषयों का विवेचन किया गया है।इनमें शैव–पाशुपत–कालमुख आदि प्रतिमाओं का विस्तार से वर्णन है।

मयमतम्

प्रसिद्ध वास्तुशास्त्रीय ग्रंथों में मयमतम् दक्षिण भारतीय स्थापत्यकला का प्रामाणिक और प्रतिपादक ग्रंथ है। इस ग्रंथ का निर्माण चोलसाम्राज्य काल में हुआ। यह ग्रामीण परंपरा का अनुसरण करके लिखा गया उपजीव्य ग्रंथ है। मयमतम् का प्रथम प्रकाशन 1911 ईस्वी में अनंतशयन संस्कृत –ग्रंथावली श्रृंखला में गणपतिशास्त्री के संपादन में हुआ। 1975 –76 ईस्वी में ब्रूनो डेगेंस ने इसका फ्रेंच भाषा में अनुवाद किया। इस ग्रंथ का प्रकाशन फ्रेंच इंस्टीट्यूट आफ इंडोलॉजी, पांडिचेरी से करवाया गया। 1997 ईस्वी में इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स संस्था के द्वारा मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन के साथ मिलकर अंग्रेजी भाषा सहित प्रकाशित किया गया। इस ग्रंथ में 36 अध्याय हैं। ग्रंथ के प्रारंभ में मर्त्य –अमर्त्य वास भेद से वस्तु और अवास्तु दो प्रकार से संज्ञा बतायी है। अमर्त्य स्थान वस्तु और मर्त्य स्थान वास्तु है। ग्रंथ के अनुसार भूमि, प्रासाद, यान और शयन चार प्रकार का वास्तु होता है जिसमें भूमि का प्राधान्य है:

भूमिप्रासादयानानि शयनम् च चतुर्विधम्।
भूरेव मुख्य वास्तु स्यात् तंत्र जातानि यानि हि।।

ग्रंथ के प्रारंभिक 10 अध्यायों में गृहभूमिविषयकवर्णन, भवननिर्माणसंबंधी विषय, वाहन–शयन–प्रतिमावास्तु का वर्णन है।ग्रंथ के प्रारंभ में विषयतालिका, वास्तुपरिभाषा और उसका स्वरूप, परमाणु आदि का मान, दिक्ज्ञानविधि, वास्तुपदविन्यास, बलिकर्मविधि, विविधग्रामविन्यास तथा विभिन्न नगरों के लक्षण, गोल, वर्ग आदि आकृति भेद तथा तलसंख्या आदि से विभक्त भवनों का विधान किया गया है। बारह से अट्ठारह अध्यायों में गर्भन्यासविधि, इष्टिकाविधि आदि, त्रिविध पीठों का स्वरूप,अनेक अधिष्ठानों का स्वरूप, लक्षण आदि का वर्णन है। उन्नीस से बाईस अध्यायों में एक भूमि से चतुर्भूमिवत् प्रासादों के भेद–प्रभेद आदि का वर्णन, तेईस से अट्ठाइस अध्यायों में देवपरिवारविधान, गोपुरमंडपसभाविधान, शालाविधान, चतुर्गृहविधान, गृहप्रवेश का वर्णन है। उन्तीस से छत्तीस अध्यायों तक राजप्रासादवास्तु का वर्णन और मंदिर वास्तु का विस्तार से विवेचन किया गया है।

विश्वकर्मवास्तुप्रकाश

विश्वकर्मावस्तुप्रकाश के रचयिता विश्वकर्मा ही हैं। यह ग्रंथ विश्वकर्मा के द्वारा रचित अत्यंत लघुग्रंथ है।इस ग्रंथ में चौदह अध्याय हैं। प्रथम अध्याय का प्रारंभ भूमि आदि लक्षण से प्रारंभ होता है। इसमें वास्तुपुरुष की उत्पत्ति शुभ– अशुभ लक्षण, भूपरीक्षण, उत्खनन, वास्तुपुरुष – देवादिपूजन शुभ–अशुभ शकुन इत्यादि विषय वर्णित है। द्वितीय अध्याय में समग्रगृहादिनिर्माण, भूप्लवफल, शुभ–अशुभ काल. विचार, आयादिसाधन, वास्तुशास्त्रीयमेलापकविचार, भवनों की चौड़ाई,ऊंचाई आदि का मान और प्रमाण, वीथिका,भित्ति,द्वार आदि का प्रमाण, पांच प्रकार के विशाल गृहों के लक्षणों का वर्णन है। तृतीय अध्याय गृहवास्तुकालनिर्णय अध्याय है। गृह आरंभ के शुभ–अशुभ मुहूर्त के विचार,सौ, दो सौ, हजार वर्ष की अवधि के ग्रहों के योग तथा शुभ–अशुभ योगों का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय गृहनिर्माण अध्याय हैं। यहां राजा, मंत्री, सेनापति आदि के विशिष्ट और सामान्य लोगों के शय्या, आसन आदि का परिमाण, चौदह प्रकार के ग्रहों के प्रकार, शिलान्यास आदि वर्णित है। पंचम अध्याय शिलान्यास अध्याय है। इसमें चौसठ और इक्यासी वास्तुपदचक्रविन्यास्, शल्यज्ञानविधि, वास्तुपद में विद्यमान ब्रह्मा आदि देव के कलश और नवग्रह आदि का पूजन, वास्तु आदि देवों के लिए बलिदान विधि, शिलान्यास इत्यादि का वर्णन है। षष्ठ अध्याय प्रसादनिर्माण अध्याय है। प्रसाद में देवमंदिर, प्रशस्त–अप्रशस्त शिल्प, विविधप्रासाद लक्षण का वर्णन है। सप्तम से दशम अध्यायों में द्वारनिर्माण, जलाशयकरण, वृक्षच्छेदन और नवगृहप्रवेश आदि पर प्रकाश डाला गया है। एकादश अध्याय दुर्गनिर्माण के अंतर्गत दस प्रकार के दुर्ग, उनके गृहद्वार निर्माण इत्यादि का वर्णन है। द्वादश अध्याय शल्यनिर्णय अध्याय हैं। इसमें शल्यज्ञान, शल्यभेद, शल्योद्धारपद्धति, शल्यद्धारमुहूर्त, शिलानिर्माण व स्थापना का वर्णन किया गया है। त्रयोदशी अध्याय राजभवनवेधनिर्णय अध्याय है। यहां गृहों के अंधक आदि वेधलक्षण, षोडशविधान और अधमगृहों के फल वर्णित है। अंतिम अध्याय द्विजातिवेध अध्याय है। यहां अनेक प्रकार के गृह वेधों का विचार, घर के सामने शुभ वृक्ष,ग्राम, व नगरों में पताका, सर्ववर्णध्वज, स्तंभस्थापना का वर्णन किया गया है।

वास्तुशास्त्रीय आचार्य परंपरा

वास्तुशास्त्र के कुछ आचार्य विविध ग्रंथों और पुराणों आदि में निरूपित किए गए हैं जो इस शास्त्र के प्रवर्तक माने जाते हैं।

विश्वकर्मा – ऋग्वेद के दो सूक्तों में विश्वकर्मा का विवेचन है। वहां पर ऋषि 'विश्वकर्मा भौवन' एवं देवता 'विश्वकर्मा' है।देवशिल्पी विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र में नागर परंपरा के प्रवर्तक है। वास्तुशिल्प का ज्ञान उन्होंने ब्रह्मा से प्राप्त किया। सृष्टि कार्य में प्रवृत्त देव विश्वकर्मा ब्रह्मा की मानसी सृष्टि के रूप में उत्पन्न हुए। ब्रह्मवैवर्तपुराण में वर्णन है कि विश्वकर्मा के नौ शिल्पकार पुत्र थे। अपराजितपृच्छाग्रंथ में विश्वकर्मा के कुल का परिचय मिलता है। विश्वकर्मा का जन्म चाक्षुषमनु के वंश में हुआ। जय, विजय, सिद्धार्थ और अपराजित उनके चार मानस पुत्र हैं। विश्वकर्मा के कुछ ग्रंथ भी आज प्राप्त होते हैंः वास्तुशास्त्र, विश्वकर्माप्रकाश दीपार्णव आदि। डॉ. द्विजेंद्रनाथशुक्ल के मत में विश्वकर्मा प्रभाववसु के पुत्र थे। वह शिल्प, स्थापत्य, चित्र आदि कलाओं के महान पंडित और प्रसिद्ध यांत्रिक थे।

मय – वास्तुविद्या में निष्णात असुरों का शिल्पी मय दक्षिण भारत में प्रचलित द्राविड़ परंपरा के उद्भावक आचार्य है। महाभारत के एक प्रसंग में मर ने कहा है कि अहम् हि विश्वकर्मा दानवानाम् महाकविः। अतः मय असुरों के वास्तुशास्त्री थे। रामायण में इनके कुल का परिचय वर्णित है। मय दिति के पुत्र थे। स्वर्ग की अप्सरा हेमा उनकी पत्नी थी। हेमा की गर्भ से मायावी और दुंदुभि नामक दो पुत्र और मंदोदरी नामक पुत्र हुई जिसका विवाह रावण के साथ हुआ। मय रावण के ससुर थे। मय के द्वारा रचित अनेक वास्तु से संबंधित उत्कृष्ट रचनाओं का वर्णन ग्रंथों में मिलता है। विशेष रूप से महाभारत में पांडवसभाभवन, सुवर्णभवन, मायानगर,त्रिपुर और पुष्पकविमान। ये सब उनकी वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होते हैं।

वास्तुशास्त्र के अन्य आचार्य

मत्स्यादिपुराणों में वास्तुशास्त्रीय विविध ग्रंथों में वास्तुशास्त्रीय आचार्यों की परिगणना की गई है जिनके द्वारा भारत में वास्तुशास्त्र की समृद्ध परंपरा का बोध होता है। मत्स्यपुराण में वास्तुशास्त्र के अट्ठारह आचार्य वर्णित हैं। यह अट्ठारह आचार्य है – भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजित, पुरंदर, ब्रह्मा, कुमार, बृहस्पति इत्यादि। मानसारग्रंथ में तो बत्तीस वास्तुविशारद आचार्यों का उल्लेख है जो इस प्रकार हैः विश्वकर्मा, विश्वेश, विश्वसार, प्रबोधक, वृत, मय, त्वष्टा, मनु, त्वष्टा, मानबोध, वास्तुविद्यापति, भानु इत्यादि। अग्निपुराण में पच्चीस उपदेशक आचार्य माने हैं। इसके अतिरिक्त वैदिक ऋषियों को भी वास्तुशास्त्र के उपदेशक माना गया है। इससे पता चलता है कि मानसारग्रंथ से पूर्व अनेक आचार्यों के ग्रंथ विद्यमान थे जो वास्तुशास्त्र से संबंधित थे। जो यह बताता है कि उससे पहले वास्तुशास्त्रियों की एक समृद्ध परंपरा रही थी।

वास्तुशास्त्र के आचार्य और उनके ग्रंथ

- अगस्त्य – अगस्त्यप्रोक्त सकलाधिकार और सर्वाधिकार
- कश्यप – काश्यपशिल्प
- नारद – नारदशिल्प, नारदसंहिता और नारदपुराण
- नग्नजित् – चित्रलक्षण
- पिशुन – वास्तुविज्ञान
- पराशर – वास्तुशास्त्र
- विश्वकर्मा – विश्वकर्माशिल्प, विश्वकर्मपद्धति, विश्वकर्मप्रकाश, विश्वकर्मवास्तु
- सनत्कुमार – सनत्कुमारवास्तु
- सिद्धार्थ – सिद्धार्थपरीक्षा सिद्धार्थसंहिता

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि वास्तुविद्या का उद्भव वैदिक काल में हो चुका था। ऋग्वेद में प्राप्त वास्तोष्पति सूक्त में वास्तोष्पति देव से घर– परिवार की समृद्धि, धन, दीर्घायु व कुशलयोगक्षेम के वहन के लिए प्रार्थना की गई है। इससे अनुमानित है कि वास्तुपुरुष और शुभ वास्तु की आवश्यकता पर

विचार ऋग्वेद काल में किया जाने लगा था। वास्तोष्पति साक्षात् परमात्मा का ही नामांतर है। आगम और पुराणों के अनुसार वास्तुपुरुष नामक एक उपदेवता के ऊपर ब्रह्मा, इंद्र आदि 45 देवता अधिष्ठित होते हैं जो वास्तु का कल्याण करते हैं। अथर्ववेद के उपवेद स्थापत्य वेद में वास्तुविद्या पर विचार किया गया। मत्स्य, अग्नि, भविष्य, नारद आदि पुराणों में भी वास्तु का वर्णन मिलता है। वैदिक काल में उदभूत वास्तुविद्या का विकास आगम एवं पुराण काल में हुआ। महाभारत में इसके पूर्ण विकसित होने के प्रमाण मिलते हैं। वेदांग ज्योतिष के संहिताभाग में वास्तुविद्या का वर्णन उपलब्ध होता है। स्थापत्य वेद ही उत्तर काल में वास्तुशास्त्र के रूप में परिणत हुआ। वैदिक काल में गृहों का निर्माण ही वास्तु के अंतर्गत माना जाता था। बाद में गृहों के विकास के साथ ही ग्रामों, नगरों एवं महानगरों का विकास होने लगा और कालांतर में मूर्तिकला एवं चित्रकला भी उसके अंग बन गए। सहस्र वर्षों में हमारे आचार्यों ने इस क्षेत्र में अनेकों परिवर्तन किए। आज दानव शिल्पी मय का मयमतम् और और विश्वकर्मारचित 'विश्वकर्मविश्वकर्मारचिश प्रकार भारतीय वास्तुविज्ञान की परंपरा बहुत ही समृद्ध रही है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणते हि दिमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः।।

अचानक आवेग में आकर बिना सोचे समझे कोई भी काम नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेक ही सबसे बड़ी विपतियों का घर होता है। इसके विपरित जो व्यक्ति सोच–समझकर कार्य करता है, गुणों से आकर्षित होकर लक्ष्मी उन्हें स्वयं चुनती हैं।

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

यौवन, धन–संपत्ति, प्रभुता और अविवेक इनमें से एक भी अनर्थ करने वाला है। लेकिन जिसके पास ये चारों हों, उसके विषय में कहना ही क्या!

महनीयराष्ट्रभक्तोनेताजीसुभाषचन्द्रबोसः

निशा
बी. ए. प्रोग्राम (संस्कृतम्) तृतीयवर्षम्

अस्मदीयं भारतं १५ अगस्त, १९४७ तमे ई. इति दिनाङ्के स्वतन्त्रमभूत्। तस्मादेव अद्यत्वे भारतीया वयं स्वतन्त्राः वर्तन्ते। ध्यातव्यं वर्तते यत् स्वतन्त्रताप्राप्त्यर्थं नैके भारतीसुपुत्रा निजप्राणान् अत्यजन्। तेषु भारतमातृसुपुत्रेषु ''चन्द्रशेखर–आजादः, सुखदेवः, राजगुरुः, खुदीरामबोसः, वीरभगतसिंहः, नेताजी सुभाषचन्द्रबोसश्च'' इति प्रभृतयः प्रमुखाः सन्ति। तत्रापि ''नेताजी सुभाषचन्द्रबोसः'' अन्यतमो राष्ट्रभक्तो वर्तते।

सुभाषमहोदयस्य जन्म सप्तनवत्युत्तर–अष्टादशशततमाब्दस्य जनवरीमासस्य त्रयोविंशे दिनाङ्के (२३जनवरी, १८९७ ई.) बङ्गप्रान्तस्य कटकनगरस्थे हिन्दुकायस्थकुलीनपरिवारेऽभवत्। यस्य पितरौ प्रभावतीदेवीजानकीनाथबोसौ आस्ताम्। जानकीनाथबोसजी कटकनगरस्य प्रसिद्धो वाक्कील आसीत्। सुभाषजी भारतीयसिविलपरीक्षामुत्तीर्य अपि सेवायां भागं न गृहीतवान्।

यतोहि सः ब्रिटिशप्रशासनस्य चाटुकारितां कर्तुं नेच्छति स्म। बोसमहोदयो भारतदेशस्य स्वतन्त्रतायै स्वराज्यदलम् (स्वशासनदलम्), फॉरबर्डब्लॉक, भारतीयस्वतन्त्रतासङ्घटनम्, भारतीयराष्ट्रियसेना (INA), आर्जीहुकुमते (आजादहिन्दस्वाधीनभारतस्य अन्तरिमसर्वकारः) च इति प्रभृतीनाम् अनेकासां संस्थानां स्थापनां चकार। तेन उपर्युक्तसंस्थानां सहयोगमाध्यमेन भारतवर्षस्य स्वाधीनतायै आङ्ग्लशासनविरोधे अनेके प्रयासा विहिता, यतः आङ्ग्लशासनं विचलितमभूत्। अनेकवारं सुभाषजी कारागारे (बन्दीगृहे) पातितः। तत्रापि बहुधा अनशनाख्यम् आन्दोलनम् आरब्धम्। तस्मात् ततः पुनर्मुक्तो भूत्वा राष्ट्रवादिषु आन्दोलनेषु भागं स्वीकृत्य निखिलेऽपि भारते अग्रगण्यो राष्ट्रभक्तोऽभवत्। अतः आङ्ग्लशासनं तस्य गृहाद्बहिर्गमनेऽवरोधं करोति स्म। बोसजी आङ्ग्लशासननेत्रेषु धूलिकाक्षेपणं कृत्वा भारतदेशाद् बहिर्गमनं विधाय ब्रिटिशशासनस्य जीवनं दुर्भरं चकार। ततो विविधदेशानां यात्रां कृत्वा सहयोगार्थं न्यवेदयत्। द्वितीयविश्वयुद्धकाले बोसजी आङ्ग्लशासकैः (अङ्ग्रेजपदवाच्यैःब्रिटिशशासकैः) समं योद्धुं जापानदेशस्य सहयोगेन ''आजाद–हिन्द–फौज'' इति सङ्घटनस्य स्थापनां विधाय तत्रत्यानां भारतीयानां जनमानसे क्रान्तेर्बीजारोपणं चकार। बोसमहोदयस्य प्रमुखा उद्घोषाः ''जय हिन्द'', ''दिल्ली चलो'', ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' इति प्रभृतय आसन्। यतः स्वतन्त्रतासेनानीगणः प्रेरितो भूत्वा ब्रिटिशशासनविरोधे प्रबलं सङ्घर्षम् आरब्धयत्। शीघ्रमेव ''आजाद–हिन्द–फौज'' इति दलम् अण्डमान–निकोबारद्वीपद्वयम् आङ्ग्लशासनाद् अमोचयत्। ययोर्नामकरणं ''शहीदद्वीपम् (बलिदान द्वीपम्)'', स्वराज्यमद्वीपञ्च इति चकार। अन्ततो ब्रिटिशशासनं भारतीयविरासतं सन्त्यज्य पलायनम् एव उपयुक्तम् इति अचिन्तयत्।

सुभाषवर्यस्य प्रबलं सङ्घर्षं दृष्ट्वा भारतीया जनाः तं राष्ट्रभक्तं ''नेताजी'' इति नाम्ना सम्बोधयन्ति स्म। बोसमहोदयः पूर्णस्वाराज्यस्य पक्षधर आसीत्। सुभाषचन्द्रबोसस्य जन्मदिवसे (जनवरीमासस्य २३ दिनाङ्के) अद्यापि निखिले भारते सोल्लासं ''नेताजी–जयन्ती'' आयोज्यते। ततः प्रेरितो भूत्वा भारतसर्वकारः २३ जनवरी २०२१ ई. इति दिनाङ्के नेताजीसुभाषमहोदयस्य १२५तमीं जयन्तीं पराक्रमदिवसरूपेण आयोजयितुं निर्णयम् अकरोत्। यस्योद्घोषणां भारतीयप्रधानमन्त्री श्रीमान् नरेन्द्रमोदी २०१८ ईसवीयस्वातन्त्र्योत्सवस्य उपलक्ष्ये रक्तदुर्गतः (लालकिलातः) अकरोत्।

बोसमहोदयस्य मृत्युरहस्यम् अद्यापि न केनापि ज्ञायते। १८ अगस्तमासः, १९४५ ई. इति दिनाङ्के ताइवानदेशस्य तथाकथितविमानदुर्घटनायां बोसमहोदयस्य मृत्युरभवदिति केचन आमनन्ति परं तत्र न किञ्चिच्चदपि प्रमाण। नेताजी सुभाषचन्द्रबोसो वस्तुतो भारतीयस्वतन्त्रतासङ्ग्रामस्य अग्रणीः अभूतपूर्वः क्रान्तिवीरश्चासीत्।

''जय हिन्द'' ''जय हिन्द की सेना''

क्षणशः कणशश्चैव विद्यां अर्थ च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्।।

सीखने के लिए हर क्षण का उपयोग करना चाहिए और इसे संरक्षित करने के लिए हर छोटे सिक्के का उपयोग करना चाहिए। क्षण को नष्ट करके शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती और सिक्कों को नष्ट करने से धन प्राप्त नहीं किया जा सकता।

वाणी रसवती यस्य यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मीः दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम्।।

जिस मनुष्य की वाणी मीठी हो, जिसका काम परिश्रम से भरा हो, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त हो, उसका जीवन सफल है।

गणतन्त्रदिवसः

विनीता
बी. ए. प्रोग्राम (संस्कृतम्), तृतीयवर्षम्

भारतवर्षस्य त्रिषु प्रमुखेषु राष्ट्रियपर्वसु अन्यतमं स्थानं बिभर्ति गणतन्त्रदिवसः। इदं राष्ट्रियं पर्व प्रतिवर्षं निखिलेऽपि देशे जनवरीमासस्य षड्विंशे दिनाङ्के सोल्लासम् आयोज्यते। यतोहि अस्मिन्नेव दिवसे शासनपद्धतिरूपे ''भारतीयं संविधानम्'' अङ्गीकृतं स्वीकृतञ्च। वयं समेऽपि जानीम एव यद् भारतीयं संविधानं सकलेऽपि विश्वे सर्वाधिकं बृहदाकारं लिखितं संविधानं वर्तते। यस्य वैशिष्ट्यं सर्वधर्मसमानादरः, सामाजिकसमरसता, अखण्डता, भेदभावराहित्यं विश्वबन्धुत्वाख्य–उदात्तभावना च वर्तते। भारतीयसंविधाने सर्वेषां जनानां जीवनविकासाय कर्ततव्याधिकाराणां वर्णनं विशिष्टं स्थानम् आधत्ते। तस्मादेव सम्यग् विधानं संविधानम् इति अन्वर्थं नाम उच्यते। भारतीयसंविधानानुगुणं भारते गणस्य (समूहस्य) तन्त्रम् (शासनम्ध्प्रधानम्) वर्तते। यत्र जनाः परस्परं मिलित्वा शासकानां चयनं कुर्वन्ति। अतः गणतन्त्रं जनशासनं जनतन्त्रं लोकतन्त्रं प्रजातन्त्रं वा उच्यते। अमेरिकादेशस्य भूतपूर्वराष्ट्रपतिना अब्राहमलिंकनवर्येण उक्तम् – ''Democracy is the of the people] by the people and for the people'' अर्थात् ''लोकतन्त्र जनता का, जनता के द्वारा जनता के लिए संचालित सरकार है।''

गणतन्त्रदिवसे भारतस्य महामहिम–राष्ट्रपतिः भारतीयद्वाराख्ये (INDIA GATE) उपरि अस्माकं त्रिवर्णस्य ''तिरंगा'' इति राष्ट्रियध्वजस्य समुत्तोलनं करोति तत्पश्चात् राष्ट्रगानस्य गायनं भवति। ततः जलस्थलवायुसैनिकदलानां शौर्यपूर्णं सैन्यशक्तिप्रदर्शनं, विविधराज्यानां संस्थानाञ्च भारतीयसंस्कृतिविभूषिता प्रदर्शनी (झांकी) पदसञ्चलनम् (परेड) च प्रदर्शयते।

गणतन्त्रदिवसो भारतवासिनां हृदये आत्मगौरवभावनाया विकासं करोति, अस्माकं देशस्य गौरवगाथां बोधयति, राष्ट्राय आत्माहुतिं कुर्वतां वीराणां देशभक्तानां बलिदानं स्मारयति। येन भारतीया वयं निजराष्ट्रं प्रति जागरूका भवेम।

जयतु संस्कृतम् जयतु भारतम्।

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
तथा पुरूषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति।।

जैसे रथ एक पहिए से नहीं चलता, वैसे ही भाग्य बिना मेहनत के नहीं चलता।

गूगलं शरणं व्रज

बोधानन्द झा
बी. ए. संस्कृतं (विशेषः) प्रथमवर्षम्

“ कुत्र किं क्रीयते वस्तु कुत्र विक्रीयते च तत् ।
किं मूल्यं च भवेन्मित्रं” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ १ ॥
“अस्वस्थमद्यमेऽपत्यं को गदः किं च भेषजम् ।
कुत्रास्ति वैद्यो मे बूहि” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ २॥
“भोजनाय क्व गच्छाम किं खाद्यं तत्र लभ्यते ।
किं मूल्यं च कियद्दूरं” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ ३ ॥
“चलचित्रालयं कुत्र तत्र किं चित्रदर्शनम् ।
तत्र दर्शनवेला का” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ ४ ॥
“कुत्रास्म्यहमिदानीं भोः कियद्दूरं हि मद्गृहम् ।
वर्त्मना केन गच्छामि” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ ५ ॥
“विश्रान्त्यै कुत्र गच्छाम तत्रासीदाम वा कथम् ।
तत्र पश्याम किं मित्रं” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ ६ ॥
“कोऽर्थः पदस्य तत् वाक्ये कथं सम्यक् प्रयुज्यते ।
समानार्थपदं किं स्यात्” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ ७ ॥
“चित्राणि द्रष्टुमिच्छामि श्रोतुमिच्छामि गायनम् ।
इच्छामि पठितुं ग्रन्थं” “गूगलं शरणं व्रज” ॥ ८ ॥
“शालायां सहपाठी मे कुत्राद्येति कुतूहलम” ।
“देशकालतत्तायामं गूगलं शरणं व्रज” ॥ ९ ॥
“चेतुमिच्छसि किं पत्नीं पतिं जामातरं स्नुषाम् ।
नवोद्योगं तदा सद्यः गूगलं शरणं व्रज” ॥ १० ॥
“विमानरेलयानानां गमनागमनेषु किम्।
विलम्बं सूच्यते मित्रं“ ”गूगलं शरणं व्रज“ ॥ ११ ॥
“कुत्र वर्षति पर्जन्यः कुत्र शैत्यं कियन्मितम् ।

कुत्र सूर्यप्रखरता'' ''गूगलं शरणं व्रज'' ।। १२ ।।
''नगरे मम का वार्ता मद्देशे वा महीतले ।
क्रीडासु जनसौख्ये च'' ''गूगलं शरणं व्रज'' ।। १३ ।।
''तत्त्वार्थशास्त्रविज्ञानगणिताध्ययने स्पृहा'' ।
''सर्वज्ञानमहाद्वारं गूगलं शरणं व्रज'' ।। १४ ।।
''आत्मानन्दं मनःशान्तिं तृप्तिं वाञ्छसि वा यदि ।
गूगलं संपरित्यज्य श्रीहरिं शरणं व्रज'' ।। १५ ।।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।।

शुभ अथवा अशुभ किया हुआ कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है, करोड़ो कल्प बीत जाने पर भी बिना भोगे कर्म का क्षय नही होता है।

यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव हि।।

जो व्यक्ति निश्चित वस्तु का त्याग कर अनिश्चित वस्तु के पीछे भागता है, उसकी निश्चित वस्तु नष्ट हो जाती है और अनिश्चित वस्तु का नाश तो हो ही जाता है।

सुभाषचन्द्रबोसस्य कतिपयवचनानां संस्कृतानुवादः

आदित्यकुमार झा
बी. ए. संस्कृतं (विशेषः) प्रथमवर्षम्

१. देहि रक्तन्त्वम्मे, स्वाधीनतामहं ते दास्यामि।

"तुम मुझ खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा!"

२. राष्ट्रवादः मानवजातेः उच्चतमादर्शैः "सत्यं शिवं सुन्दरम् "इत्येभिः प्रेरितोऽस्ति।

"राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम्, शिवम, सुन्दरम् से प्रेरित है।"

३. संस्मर! सर्वबृहदपराधः अन्यायसहनम् दोषान्वितेन समं सन्धिकरणञ्च।

"याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।"

४. इतिहासे कदापि विचारविमर्शाभ्यां किमपि वास्तविकं परिवर्तनं न जातम्। यावत् क्रियापरणितिर्न भवति।

"इतिहास में कभी भी विचार–विमर्श से कोई वास्तविक परिवर्तन हासिल नहीं हुआ है।"

५. एकस्य सैनिकस्य रूपे भवद्भिः त्रय आदर्शाः संस्थापनीयाः तदाधारीकृत्य च जीवितव्यम्– सत्यता कर्ततव्यं बलिदानञ्च। यो भटः सर्वदा स्वदेशं प्रति निष्ठावान्कर्त्ततव्यपालको वा भवति, यश्च सर्वदा स्वजीवनस्य बलिदानं कर्तु सिद्धो भवति, सः अजेयोऽस्ति। यदि त्वमपि अजेयो भवितुम् ईहसे तर्हि त्वया एते आदर्शाः स्वहृदये संस्थापनीयाः।

"एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा– सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान। जो सिपाही हमेशा अपने देश के प्रति वफादार रहता है, जो हमेशा अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है, वो अजेय है। अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने हृदय में समाहित कर लो।"

६. एकस्य सद्भटस्य कृते सैन्याआध्यात्मिकयोर्द्वयोरेव प्रशिक्षणयोरावश्यकता भवति।

"एक सच्चे सैनिक को सैन्य और आध्यात्मिक दोनों ही प्रशिक्षण की जरूरत होती है।"

७. प्रान्तीययोः ईर्ष्यद्विषयोः दूर्वारणाय यावत्सहाय्यं हिन्दीप्रचारेण प्राप्स्यते, नान्यस्मात् कस्मादपि।

"प्रांतीय ष्यर्या–द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी, दूसरी किसी चीज से नहीं।"

८. अद्य अस्माकमन्तरङ्गेषु केवलं एकैव इच्छा भवेत् मुमूर्षा। येन भारतं जीवितुं शक्नुयात्। एकस्य हुतात्मनो मुमूर्षा। यतोहि स्वतन्त्रताया मार्गो हुतात्मनां रक्तेन प्रशस्तो भवेदिति।

"आज हमारे अन्दर बस एक ही इच्छा होनी चाहिए, मरने की इच्छा ताकि भारत जी सके! एक शहीद की मौत मरने की इच्छा ताकि स्वतंत्रता का मार्ग शहीदों के खून से प्रशस्त हो सके।"

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

जिस प्रकार से सोये हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं चले जाते, सिंह को भूख–शान्ति के लिए शिकार करना ही पड़ता है, उसी प्रकार से किसी कार्य की मात्र इच्छा कर लेने से वह कार्य सिद्ध नहीं हो जाता, कार्य उद्यम करने से ही सिद्ध होता है।

वरं एको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चंद्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च।।

सौ मूर्ख पुत्र होने की अपेक्षा एक गुणवान पुत्र होना श्रेष्ठ है, अन्धकार का नाश केवल एक चन्द्रमा ही कर देता है पर तारों के समूह नहीं कर सकते।

पण्डिता रमाबाई

नेहा
बी. ए. संस्कृतं (विशेषः) तृतीयवर्षम्

स्त्रीशिक्षाक्षेत्रे अग्रगण्या पण्डिता रमाबाई 1858 तमे खिष्टाब्दे जन्मः अभवत्, तस्याः पिता अनन्तशास्त्री डोंगरे माता च लक्ष्मीबाई आस्ताम्, तस्मिन् काले स्त्रीशिक्षायाः स्थितिः चिन्तनीया आसीत। स्त्रीणां कृते संस्कृतशिक्षणं प्रायः प्रचलितं नासीत्। किन्तु डोंगरे रूढिवद्धधारणां परित्यज्य स्वपत्नीं संस्कृतमध्यापयत्। एतदर्थ सः समाजस्य प्रतारणाम् अपि असहत् अनन्तरं रमा अपि स्वमातुः संस्कृतशिक्षां प्राप्तवती।

कालक्रमेण रमायाः पिता विपन्नः सञ्जातः, तस्याः ज्येष्ठा भगिनी दुर्भिक्षपीडितादिवङ्गताः। तदनन्तरं रमा पद्भ्यां समग्रभारतम् अभ्रमत्। भ्रमणक्रमे सा कोलकातानगरे संस्कृतवैदुष्येण तत्र 'पण्डिता' 'सरस्वती' चेति उपाधिभ्यां विभूषिताः। तत्रैव सा ब्रह्मसमाजेन प्रभाविता वेदाध्ययनम् अकरोत्। पश्चात् सा स्त्रीणां कृते वेदादिशास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती। 1880 तमे खिष्टाब्दे सा विपिनबिहारीदासेन सह बाकीपुर–न्यायालये विवाहं अकरोत्, सार्धैकवर्षात् अनन्तरं तस्याः पतिः दिवङ्गतः। तदनन्तरं सा पुत्र्या मनोरमया सह जन्मभूमिमहाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्, नारीणां सम्मानाय शिक्षायै च सा स्वकीय जीवनम् अर्पितवत्ती हण्टरशिक्षा आयोगस्य समक्षे नारीशिक्षाविषये सा स्वमतं प्रस्तुतवती। सा उच्चशिक्षार्थम् इंग्लैण्डदेशं गतवती तत्र ईसाई धर्मस्य स्त्रीविषयकउत्तमविचारतः प्रभाविता जाता।

इंग्लैण्डदेशात् रमाबाई अमरीकादेशम् अगच्छत् तत्र सा भारतस्य विधवास्त्रीणां सहायतार्थम् अयम् अकरोत् यत् भारते प्रत्यागते मुम्बईनगरे सा 'शारदा सदनम' अस्थापयत्। अस्मिन् आश्रमे निस्सहायाः स्त्रियः निवसन्ति स्म, तत्र स्त्रियः मुद्रणकाष्ठकलादीनाञ्च प्रशिक्षणमपि लभन्ते। रमा परम् इदं सदनं पुणेनगरे स्थानान्तरितं जातम्, ततः पुणेनगरस्य समीपे केडगाँव–स्थाने 'मुक्तिमिशन' नाम संस्थानं तथा स्थापितम्। अत्र अधुना अपि निराश्रिताः स्त्रियः ससम्मानजीवनं यापयन्ति। 1922 तमे खिष्टाब्दे रमाबाई–महोदयायाः निधनम् अभवत्, सा देश–विदेशानाम् अनेकासु भाषासु निपुणा आसीत्। समाजसेवायाः अतिरिक्तलेखनक्षेत्रे अपि तस्याः महत्त्वपूर्णम् अवदानम् अस्ति। 'स्त्रीधर्मनीति', 'हाई कास्ट हिन्दू विमेन' इति तस्याः प्रसिद्धरचनाः वर्तन्ते।

भगवतः श्रीकृष्णस्य द्वादशमहाविभूतयः

धनञ्जय कुमारः
बी. ए. संस्कृतं (विशेषः) तृतीयवर्षम्

1. इन्द्रियेषु मनः

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इंद्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ।।

मैं सभी वेदों में सामवेद हूँ, मैं सभी देवताओं में स्वर्ग का राजा इंद्र हूँ, सभी इंद्रियों में मन हूँ, और सभी प्राणियों में चेतना स्वरूप जीवन–शक्ति हूँ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासंगो मुक्त्यै निर्विषयं मनः ।।

मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का भी कारण है। इन्द्रियविषयों में लीन मन बन्धन का कारण है और विषयों से विरक्त मन मोक्ष का कारण है ।

2. शब्देषु ओंकारः

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ।।

मैं महर्षियों में भृगु और शब्दों में एक अक्षर अर्थात् ओंकार हूँ। सब प्रकार के यज्ञों में जपयज्ञ और स्थिर रहने वालों में हिमालय पहाड़ हूँ ।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।।

जो पुरुष ओ३म् इस एक अक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है।।

3. वृक्षेषु अश्वत्थः (पीपल)

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ।।

मैं सभी वृक्षों में पीपल हूँ, मैं सभी देवर्षियों में नारद हूँ, मै सभी गन्धर्वों में चित्ररथ हूँ और मैं ही सभी सिद्ध पुरूषों में कपिल मुनि हूँ।

4. मनुष्येषु राज्ञः

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ।।

समस्त घोड़ों में समुद्र मंथन से अमृत के साथ उत्पन्न उच्चैःश्रवा घोड़ा मुझे ही समझ, मैं सभी हाथियों में ऐरावत हूँ, और मैं ही सभी मनुष्यों में राजा हूँ।

5. शस्त्रेषु वज्रः

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ।।

मैं सभी हथियारों में वज्र हूँ, मैं सभी गायों में सुरभि हूँ, मैं धर्मानुसार सन्तान उत्पत्ति का कारण रूप प्रेम का देवता कामदेव हूँ, और मैं ही सभी सर्पों में वासुकि हूँ।

6. पितरेषु अर्यमाः

अनन्तश्चास्मि नागानां वरूणो यादसामहम् ।
पितृऽणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ।।

मैं सभी नागों (फन वाले सर्पों) में शेषनाग हूँ, मैं समस्त जलचरों में वरुणदेव हूँ, मैं सभी पितरों में अर्यमा हूँ, और मैं ही सभी नियमों को पालन करने वालों में यमराज हूँ।

7. दैत्येषु प्रह्लादः

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ।।

मैं सभी असुरों में भक्त–प्रह्लाद हूँ, मैं सभी गिनती करने वालों में समय हूँ, मैं सभी पशुओं में सिंह हूँ, और मैं ही पक्षियों में गरुड़ हूँ।

8. नदीषु जाह्नवी

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ।।

मैं समस्त पवित्र करने वालों में वायु हूँ, मैं सभी शस्त्र धारण करने वालों में राम हूँ, मैं सभी मछलियों में मगर हूँ, और मैं ही समस्त नदियों में गंगा हूँ।

9. अक्षरेषु अकारः

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वंद्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ।।

मैं सभी अक्षरों में अकार हूँ, मैं ही सभी समासों में द्वन्द्व हूँ, मैं कभी न समाप्त होने वाला समय हूँ, और मैं ही सभी को धारण करने वाला विराट स्वरूप हूँ।

10. समासेषु द्वंद्वः

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वंद्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ।।

मैं अक्षरों में अकार हूँ और समासों में द्वंद्व नामक समास हूँ। अक्षयकाल अर्थात् काल का भी महाकाल तथा सब ओर मुखवाला, विराट्स्वरूप, सबका धारण–पोषण करने वाला भी मैं ही हूँ।।

11. छंदेषु गायत्री

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ।।

मैं सामवेद की गाने वाली श्रुतियों में बृहत्साम हूँ, मैं छंदों में गायत्री छंद हूँ, मैं महीनों में मार्गशीर्ष और मैं ही ऋतुओं में वसंत हूँ।

12. कविषु शुक्राचार्यः

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ।।

मैं वृष्णिवंशियों में वासुदेव हूँ, मैं ही पाण्डवों में अर्जुन हूँ, मैं मुनियों में वेदव्यास हूँ, और मैं ही कवियों में शुक्राचार्य हूँ।

मैं सामवेद की गाने वाली श्रुतियों में बृहत्साम हूँ, मैं छंदों में गायत्री छंद हूँ, मैं महीनों में मार्गशीर्ष और मैं ही ऋतुओं में वसंत हूँ।

कृष्ण अर्जुन को अपनी महिमा और स्वरूप बताते हुए कहते है, हे कठोर तप करने वाले अर्जुन! मेरी दिव्य विभूतियों का अंत नहीं है। मैंने अपनी विभूतियों का यह विस्तार तेरे लिए एक देश से संक्षेप में कहा है। कृष्ण ने अपनी कई विभूतियों के बारे में अर्जुन से कहा, जीवन से जुड़े हर क्षेत्र से उन्होंने उदाहरण दिए, इतना कुछ कहने के बाद भी उनकी विभूतियों का अंत नहीं हुआ। कृष्ण का कहना है कि उनका कोई विस्तार नहीं, वह तो बिना सीमा के है।

जो जो भी विभूतियुक्त अर्थात् ऐश्वर्ययुक्त, कांतियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उसको तू मेरे तेज के अंश की ही अभिव्यक्ति जान। आप अपने चारों तरफ जो भी देखें, चाहे दमन देखें या प्रभावशाली व्यक्ति देखें, छल देखें या गायन सुनें, हर किसी चीज क्रिया प्राणी में जो भी तेज ऐश्वर्य और कांति से भरे हुए है तो जान लीजिए वो कृष्ण का ही अंश है, इससे सीखना है हमें कि जो भी आप करें उसमें अगर सबसे उत्तम आपको होना है तो उसमें कृष्ण को ढूंढिए।

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ।।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा :– हे अर्जुन! इस बहुत जानने से तेरा क्या प्रायोजन है। मैं इस संपूर्ण जगत को अपनी योगशक्ति के एक अंश मात्र से धारण करके स्थित हूँ।

कृष्ण ने अर्जुन को अपनी एक एक बात बताई, अपने हर रूप के बारे में ज्ञान दिया लेकिन अब वो ऐसा कह रहे है कि अब इन सब बातों से अर्जुन का क्या मतलब, अर्जुन को हमको सिर्फ एक ही बात से प्रयोजन होना चाहिए, अपने युद्ध, अपने कर्म और अपने कर्तव्य से।

अमृतं संस्कृतम्

प्रीति
बी. ए. प्रोग्राम (संस्कृतम्) तृतीयवर्षम्

विश्वस्य उपलब्धासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा भाषास्ति। भाषेयं अनेकाषां भाषाणां जननी मता। प्राचीनयोः ज्ञानविज्ञानयोः निधिः अस्यां सुरक्षितः। संस्कृतस्य महत्त्वविषये केनापि कथितम् 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'। इयं भाषा अतीव वैज्ञानिकी। केचन कथयन्ति यत् संस्कृतमेव सङ्गणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा। अस्याः वाङ्मयं वेदैः, पुराणैः, नीतिशास्त्रैः चिकित्साशास्त्रादिभिश्च समृद्धमस्ति। कालिदासादीनां विश्वकवीनां काव्यसौन्दर्यम् अनुपमम्। कौटिल्यरचितः अर्थशास्त्रं जगति प्रसिद्धमस्ति। गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमम् आर्यभट्टः अकरोत्। चिकित्साशास्त्रे चरकसुश्रुतयोः योगदानं विश्वप्रसिद्धम्। संस्कृते यानि अन्यानि शास्त्राणि विद्यन्ते तेषु वास्तुशास्त्रं, रसायनशास्त्रं, खगोलविज्ञानं, ज्योतिषशास्त्रं, विमानशास्त्रम् इत्यादीनि उल्लेखनीयानि। संस्कृते विद्यमानाः सूक्तयः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति, यथा सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुम्बकम, विद्ययाऽमृतमश्नुते, योगः कर्मसु कौशलम् इत्यादयः। सर्वभूतेषु आत्मवत् व्यवहारं कर्तुं संस्कृतभाषा सम्यक् शिक्षयति। केचन् कथयन्ति यत् संस्कृतभाषायां केवलं धार्मिकं साहित्यम् वर्तते– एषा धारणा समीचीना नास्ति। संस्कृतग्रन्थेषु मानवजीवनाय विविधाः विषयाः समाविष्टाः सन्ति। महापुरुषाणां मतिः, उत्तमजनानां धृतिः सामान्यजनानां जीवनपद्धतिः च वर्णिताः सन्ति। अतः अस्माभिः संस्कृतम् अवश्यमेव पठनीयम्। तेन मनुष्यस्य समाजस्य च परिष्कारः भवेत्। उक्तञ्च–

अमृतं संस्कृतं मित्र! सरसं सरलं वचः।
भाषासु महनीयं यद् ज्ञानविज्ञानपोषकम् ।।

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मम् ततः सुखम्।।

विद्या से विनय, विनय से योग्यता, योग्यता से धन,
धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

संस्कृतध्येयवाक्यानि

मनीषदतः
बी.ए. संस्कृतं (विशेषः) तृतीयवर्षम्

• भारत सरकार	:	सत्यमेव जयते
• लोक सभा	:	धर्मचक्रप्रवर्तनाय
• उच्चतम न्यायालय भारत	:	यतो धर्मस्ततो जयः
• ऑल इण्डिया रेडियो	:	बहुजन हिताय बहुजनसुखाय
• दूरदर्शन	:	सत्यं शिवं सुन्दरम्
• थलसेना (आर्मी)	:	सेवा अस्माकं धर्मः
• वायुसेना	:	नभः स्पृशं दीप्तम्
• जल सेना	:	शं नो वरूणः
• भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	:	हवयाभिर्भगः सवितुवरिण्यम्
• भारतीय प्रसाशनिक सेवा अकादमी	:	योगः कर्मसुकौशलम्
• एन० सी० ई० आर० टी०	:	विद्ययाऽमृतमश्नुते
• एन० सी० टी० ई०	:	गुरूः गुरूत्तमोधाम
• केन्द्रीय विद्यालय संगठन	:	तत्वं पूषन्नपावृणु
• केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	:	असतो मा सद्गमय
• दिल्ली विश्वविद्यालय	:	निष्ठा धृतिः सत्यम्
• डाक तार विभाग	:	अहर्निशं सेवामहे
• भारतीय जीवन बीमा निगम	:	योगक्षेमं वहाम्यहम्
• श्रम मन्त्रालय	:	श्रम एव जयते
• आर्यसमाज	:	कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
• भारतीय तट रक्षक बल	:	वयं रक्षामः
• हिन्दी अकादमी दिल्ली	:	अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्
• आर्यवीर दल	:	अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
• पंजाब यूनिवर्सिटी	:	तमसो मा ज्योतिर्गमय
• राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान	:	योऽनूचानः स नो महान
• पी जी डी ए वी कॉलेज (प्रातः)	:	असतो मा सद्गमय
• आयकर विभाग	:	कोष मूलो दण्डः
• आई आई टी (खड़गपुर)	:	योगः कर्मसु कौशलम्
• आई आई टी (बॉम्बे)	:	ज्ञानं परमं ध्येयम्
• आई आई टी (कानपुर)	:	तमसो मा ज्योतिर्गमय
• आई आई टी (मद्रास)	:	सिद्धिर्भवति कर्मजा

हिन्दी
खण्ड

संपादकीय

डॉ. संदीप कुमार रंजन

डॉ. चैनसिंह मीना

विज्ञान और तकनीकी समय में भले ही मानवीय जीवन, समाज, संस्कृति और उसके सरोकारों को आसान मान लिया जाए, लेकिन ऐसा है नहीं। जीवन के अनेक क्षेत्रों में खूब प्रगति देखी जा सकती है, वहीं कुछ ऐसे पक्ष भी हैं जहाँ अभी प्रगति महज स्वप्न है। राष्ट्र का चहुँमुखी विकास समाज के सभी पक्षों की प्रगति में ही अंतर्निहित है। संघर्षरत मनुष्य के मूल सरोकारों को व्यापक 'विजन' के साथ समझने और समस्याओं के निराकरण की आवश्यकता है। समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े मनुष्य की समस्या जब तक हल नहीं हो जाती राष्ट्र की तमाम प्रगतिशीलता पर प्रश्नचिह्न है। भारत राष्ट्र की जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा युवाओं का है। यह महत्त्वपूर्ण समय और अवसर है कि समूची युवा शक्ति को राष्ट्र के विकास में लगाया जाए।

पीजीडीएवी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अंकुर' निरंतर नई संभावनाओं और नए कलेवर के साथ प्रकाशित होती रही है। जीवन–जगत से सम्बद्ध प्रत्येक विषय पर महाविद्यालय के प्राध्यापक और शोधार्थी अपनी कलम चलाते रहे हैं। निरंतर प्रासंगिक विषयों की व्यापक आयामों में प्रस्तुति एक नई उम्मीद का संचार करती है। वैश्विक महामारी की त्रासदी से अब समूची मानवता धीरे–धीरे उबरने का प्रयास कर रही है। इस विपरीत समय में भी साहित्य ने अपनी भूमिका का निर्वाह किया है। जीवन के यथार्थ का चित्रण इस समयावधि में अनेक रचनाकारों ने किया। निराशा में आशा का संचार किया, जीवन के प्रति नई दृष्टि विकसित की। सामूहिक बोध का महत्त्व इस त्रासदी के दौरान समझ में आया। निस्सहाय मनुष्य की मदद के लिए व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयास देखने को मिले। 'अंकुर' पत्रिका का नया अंक उपर्युक्त विषयों से परिपूर्ण है। युवा रचनाशीलता इसी तरह नित नयी संभावनाओं के साथ सृजनशील रहे, इसी उम्मीद के साथ।

– डॉ. चैनसिंह मीना
– डॉ. संदीप कुमार रंजन

पद्य खण्ड

''जगत् अव्यक्त की अभिव्यक्ति है, काव्य उस अभिव्यक्ति की अभिव्यक्ति है।''

– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आकांक्षा शुक्ला
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

मानवता

ऐ मानव तू अब तो जाग
हो गया कत्ल हर बाग का,
इन्तजार है तुझे किस हस्ती की
तू स्वांग रचना बंद करके देख,
हकीकत जो है बस वही बतला
झूठ के परदे में स्वयं को न छिपा,
जरूरत क्या नजरों से बचने की
तू खुद में ही गुरूर का जश्न मना,
मोहब्बत से गढ़ता था इंसान कभी
तू वही प्यार फिर से जगाकर देख,
तू जो है बस खुद को वही दिखा
स्वयं को अपना नया मार्गदर्शक बना,
खुद का परिचय जब स्वयं से होता है
जिदंगी में हारा हुआ भी शिखर को छूता है,
घमंड न कर किसी भी बात का
तू जरा किरदार को बदलकर देख,
सच–सच कहते झूठ तक का सफर
अब वही पुराना–सा लगता है,
बदलती तस्वीर आज भी हमें
नन्हा–सा खिलौना जान पड़ता है,
धैर्य का वो तेज कभी खोने न दे
इरादों के मंसूबे पर खुद को भी तो चलने दे,
क्या रखा है धोखाधड़ी और कत्लेआमों में
सपनों की दुनिया तू भी जरा सजा के देख,
चीख कर देख उस शोर के साथ
जो निहारती मदद की पुकार है,
संदेशा वही आज भी है और
अंदेशों में वही कड़वेपन की खान,
कितनों के बर्बाद हुए घर–परिवार यहाँ
सिर्फ नफरत और रुखसारों से
कतरे–कतरे बह जाते हैं गोली,
बारूद और तलवारों से,
सहनशाह यहाँ हर कोई है अपना
जताना नहीं कभी अपने ही मुल्क वालों से,
किस अधिकारों की बातें तुम करते हो
उन दरिंदों दिलदारों से
जो कभी खुद भी लूटे गए
गली मोहल्लों और बाजारों से,
हुआ हो असर मेरे झरोखों से तो
खुद को भी झकझोर कर देख!

उलझन

आज मैंने एक सपना देखा,
देशप्रेम में जग अपना देखा,
यादों में, मुलाकातों में, घट–घट के रागों में
नया सुहावना प्यारा–सा भोर हुआ कल अपना देखा,
झलकती वादी के लहरों से,
ताल–मठों के पुराने पहरों से,
किलकारी की गूंजों में वही
सहारा–दर–किनारा अपना देखा,
हुआ मग्न जहाँ हर शासक भी,
जिसने बेड़ों में केवल उजड़ा सितारा देखा,
जिसे उठाया वो घबराया, जाने अंजाने में कई
रातों में जिसने सुकून न पाया,
उलझन की सुलझन को सुलझाकर, जिसने
अनमने ख्वाबों को बिखरते पाया,
छलक जो जाता अश्क कहीं,
कईयों ने तो उन्हें सोते भी पाया,
उद्‌गार न हो सका गहरे छाप छोड़ते वारों का,
शायद वही हुआ जो सोचकर मैं फुर्सत से अब
तक बैठा था!

अमित कुमार कुशवाहा
बी.कॉम. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

माँ

माँ एक शब्द नहीं
माँ एक अनकही कहानी है।
माँ के साथ बचपन से बिताया हुआ
हर एक पल सुहाना है।
दिनभर कहीं भी रहूँ, कुछ भी करूँ
घर आकर सबसे पहले माँ को आँखों
के सामने पाने की इस बेइंतहाँ
खुशी का न कोई सानी है।
मेरी माँ ही मेरी खुशियों
का एकमात्र कहानी है।
मेरा हर संकट, हर विपत्ति माँ के
लिए परेशानी है।
मेरी माँ एक शब्द नहीं,
जरूरत पड़ने पर भवानी है।
उसके माथे पर मेरे लिए सिकन और
पसीना... वह पसीना नहीं...वह उसकी
ममता की निशानी है।
हमारी माँ केवल एक शब्द नहीं
हमारे जीवन की कल्याणी है।
सुबह की पहली किरण से सायं काल तक
हमारे ऊपर अपना सब कुछ
न्यौछावर करने वाली
माँ एक शब्द नहीं
माँ एक अनकही, अनसुनी कहानी है।

बोधानंद झा,
बी.ए. (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

अनंत प्रेम की अनंत यात्रा

प्रेम करना या उसके बारे में लिखना दोनों ही काम बहुत कठिन है। प्रेम हमें बहुत कुछ सिखाता है। यह हमारे अस्तित्व का बोध कराता है। प्रेम हमारे मन को अनेक भावनाओं से साक्षात्कार कराता है। आज की इस दुनिया में जहाँ चारों तरफ लोग ईर्ष्या, घृणा और क्रोध में जी रहे हैं वहाँ प्रेम सरल नहीं है। परंतु वहाँ प्रेम का होना अतिआवश्यक है। प्रेम हमें इन सारी भावनाओं से ऊपर ले जाता है। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने प्रेम का महत्त्व इस संसार को बतलाया है। प्रेम में कोई वियोग नहीं होता। प्रेम ही अंतिम योग है।

अंतिम मिलन है...

प्रेम एक से दो होता है, थोड़ी देर वहीं पे ठहरता है और फिर दो से डेढ़, फिर एक और फिर शून्य हो जाता है। असल में जो प्रेम शून्य हो जाता है, उसी प्रेम को कहते हैं–

''अनंत प्रेम''

प्रेम की सबसे बड़ी ताकत यह है कि वह कभी मरता नहीं, वह सदा के लिए अमर है। इस ''अनंत प्रेम'' की यात्रा में बहुत सी वस्तुओं का मिश्रण है, जो मिलकर ''परम आनंद'' का रूप लेती है।

अल्ताफ
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

गजल

इस दिल की ख्वाहिश है तुम्हें देखने की
तुम्हें देखे बिना मानता नहीं ये दिल
कैसे मनाऊं इसे तुम्हारे बिना
किसी और को जानता नहीं ये दिल।

"व्यक्तित्व की उत्कृष्टता किसी भी बात को काटने में नहीं होती, उसे सिद्ध करने में होती है; बिगाड़ने में नहीं होती, बनाने में होती है।"

– भगवतीचरण वर्मा

चैतन्य खेड़ा
बी.कॉम. (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

इंसान प्रबल है!

आज का ये इंसान प्रबल है!
आज का ये इंसान प्रबल है!
हिंसा–हिंसा कह–कह कर ये शांति की राह दिखाता है
धर्म, जाति के नाम पर ये इंसान को लड़ाता है।

आज का ये इंसान प्रबल है!
आज का ये इंसान प्रबल है!
तरक्की–तरक्की कह–कह कर ये भविष्य को मिटाता है
रंगीन कागज के नाम पर ये इंसानियत को मिटाता है।

आज का ये इंसान प्रबल है!
आज का ये इंसान प्रबल है!
सही–सही की सोच से ये खुद को भगवान बताता है
वेश्याओं को दाग लगाकर खुद वैश्या समाज चलाता है।

आज का ये इंसान प्रबल है!
आज का ये इंसान प्रबल है!
नीम को यह कड़वा बताकर चीनी की मिठास सुनाता है
महिला को शक्ति बताकर उसका ही चीर हरण
करता है।

आज का ये इंसान प्रबल है!
आज का ये इंसान प्रबल है!

शिवानी
बी.ए. (ऑनर्स), तृतीय वर्ष

नन्हीं पलकें

जब नन्हीं पलकें खुली,
देखा कि कुछ अलग है मुझमें
माँ की लोरी, बाबा का कंधा, दादी का लाड,
दादू की टॉफी सब अनजाना सा लगा
देखा मैंने जब खुद को तो पाया
कि एक लड़की हूँ मैं
बस एक लड़की...
आशाएं दबी रह गई मेरी
अपने ही भाइयों की खुशियों के आगे
रेस में थोड़ा पीछे रह गई
उन सब घर के कामों के कारण
दहलीज घर की पार करनी चाही
तो देखा मैंने कि एक लड़की हूँ मैं
आज जंजीरें तोड़कर उड़ने की चाह है
दिल में आसमान छूने की चाह है दिल में
तारों को अपने हाथों से छूने का मन करता है
पर देखा मैंने जब एक लड़की हूँ मैं
सिर्फ एक लड़का बनने को दिल करता है।

माँ

माँ की ममता का क्या कहना
थकावट में भी सुकून मिलता है उसकी गोद में
क्या से क्या बना देती है बच्चे को
कुपूत को भी आशीर्वाद दे जाती है माँ
उनसे पूछो जिनकी माँ नहीं होती
उन्हें क्या पता क्या होती है माँ
और क्या होती है उसकी ममता
सब कष्ट सहकर भी
खुशियाँ दे जाती है माँ
चिता में जाकर ही सुकून पाती है माँ
बच्चों की जरूरत पूरी करते–करते
अपनी इच्छाएँ भूल जाती है माँ
चाहे हम खुशियों में माँ को भूल जाएं दोस्तों
जब मुश्किल सिर पर आती है तो याद आती है माँ
शुक्रिया हो भी नहीं सकता कभी उसका अदा
मरते–मरते भी जीने की दुआ दे जाती है माँ।

"माँ गोंद की तरह होती हैं। जब आप उन्हें नहीं देख सकते हैं, तब भी वे परिवार को एक साथ पकड़े हुए हैं।"

– सुजन

जल संरक्षण

नभ से झर–झर पानी झरता
प्यासी भू को जल से भरता
अठखेलियाँ करती बूंद धरा से
जैसे बालक अपनी माँ से

अगर कहीं पानी न होता
कहीं न होता जल का स्रोता
क्या पृथ्वी पर जीवन होता?

पौधे, वृक्ष, हवा और पानी
नहीं धरा पर इनकी सानी
यदि पृथ्वी पर ये न होते
हम और आप कहीं न होते

जल तो जीवन की है धारा
बसा है जिसमें जीव हमारा
आओ इसका लाभ उठाएं
जल की बूंद–बूंद बचाएं

जितना हो आवश्यक उतना
जल को इस्तेमाल करें हम
प्रकृति प्रदत्त अमूल्य निधि का
संरक्षण जी–जान से करें हम

व्यर्थ बहाएं न हम जल को
यह शिक्षा हम दें जन–जन को
पोखर–बाँध, तालाब बनाएं
इनमें जल संचित करवाएं

संचित जल जो होगा इनमें
फसल उसी से सिंचित होगी
सूखी बंजर धरती में भी
नव–जीवन की धारा होगी

जल का संरक्षण ही हमको
जीवन जीना सिखलाएगा
देन प्रकृति की है यह तो
इसका मानव क्या मूल्य चुकाएगा

उम्मीद

हमें कभी हारने से डरना नहीं चाहिए
क्योंकि अगर हारेंगे नहीं
तो हार को जीत में कैसे बदलेंगे?
अगर मुश्किलों से डरेंगे
तो उन्हें आसान कैसे बनाएंगे?
इसलिए डरो मत
विश्वास रखो और उम्मीद मत छोड़ो।

"जो किसी एक के लिए सच है, वो कल पूरे देश के लिए सच होगा यदि वे हिम्मत हारने और उम्मीद खोने से इनकार कर दें।"

– महात्मा गाँधी

चेतना
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

परदा

बचपन का वह परदा याद आया
जिसके पीछे छुपकर बचपन है बिताया
परदे को ही था साथी बनाया
क्योंकि गलती करने पर उसने हमें अपने पीछे है छिपाया
परदे पर न जाने कितने निशान लगाए
इसी परदे ने चॉकलेट के निशान है छिपाए
परदा ही छिपने का ठिकाना था, इसके अलावा और कहीं नहीं जाना होता था
परदे पर ही चित्रकारी कर रंग है लगाया
इसी पर हमने हाथ का निशान भी बनाया
परदा तो हमारी संस्कृति की ही पहचान है
फिर क्यों सब अब इस संस्कृति से ही अनजान हैं
परदे ने संस्कृति की इज्जत को और है बढ़ाया
परदे ने ही है हमारा सम्मान बढ़ाया
परदे ने जब इतना सब करके दिखाया
फिर क्यों हमने परदे को एक वस्तु के रूप में दिखाया
परदे ने ही हमारा बचपन संवारा
परदे ने ही हमारा सम्मान निखारा
परदे ने हमारे घर को सजाया
परदे ने ही हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाया।

रेप

ये दिल को दुखाता है अक्सर
उस बच्ची से पूछो जो इससे होती है 'सफर'
तुम करके रेप अपने आप को बेगुनाह हो बताते
अरे अब बस भी करो तुम इंसान नहीं, दरिंदे हो कहलाते
एक छोटी सी बच्ची के जिस्म को
निचोड़ा है तुमने ऊपर से कहा है तुमने
होगी गंदी तभी तो रेप हुआ
होंगे कपड़े छोटे तभी तो रेप हुआ
ये जो मेंटालिटी रखते हैं न लोग
वे यह भी न जाने की क्या केस हुआ
आओ हम सब मिलकर करते हैं दुआ
आगे से कभी न हो किसी के घर
ऐसी दरिंदगी का फिर सिलसिला
अपनी हैवानियत को अब बंद भी करो
यह रेप का सिलसिला अब खत्म भी करो।

रूस, बेलारूस, यूक्रेन

रूस, बेलारूस, यूक्रेन ने ही
अपने आप को सबसे पहले स्वतंत्र है कराया
फिर क्यों ये अब दुश्मन हैं बन आए
जहाँ लोगों, पक्षियों ने घर है बसाया
आज वही देश छोड़कर दूसरे देश में
वह क्यों है आया जहाँ लोगों ने एक दूसरे की मदद कर
इंसानियत है दिखाई आज वही बात हाथ में बंदूक लेकर
क्यों है जताई जीत–हार के चक्कर में
हर मुल्क बदनाम सा हो गया है
लोगों का मरना यहाँ आम सा हो गया है
जिस घर का कोई उस देश में होगा
कैसा होगा, कब आएगा वह
यही उस घर का सवाल होगा
जब आएगा वह उसे देख खुशी होगी
या आँसुओं की धार होगी
न जाने कैसा होगा वहाँ का हर व्यक्ति
यही सबका सवाल होगा
ये जीत–हार का सिलसिला
अब बंद भी करो
इंसान हो इंसान की तरह ही दिल्लगी करो
युद्ध को अब खत्म भी करो
एक जहान है यह
इसे यूं टुकड़ों में बर्बाद न करो
पूरा संसार जब भगवान ने है बनाया
फिर क्यों हम इंसानों ने
इसे अलग टुकड़ों में करके है दिखाया।

राजकुमार
बी.ए. (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

हिंदी माथे की बिंदी

हिंदी से हैं हम–तुम बने
हिंद से बना सारा हिंदुस्तान है

तमन्ना हमारी भारत संस्कृति
हिंदी उन्नति सारा जहान है

हिंदी हमारा क ख ग हमारा गान है
हिंदी शांति का प्रतीक शूरवीर का ज्ञान है

हिंदी में रोते–गाते हमारा अभिमान है
हिंदी भावना का शहद–सुंदर अमिट हमारी पहचान है

गंगा–सी मिलती लिपि हमारी प्रचंड तेज हमजोली है
सागर–सा अखंड भारत हिंदी माथे की बिंदी है

हिंदी मंदिर भंडार हमारा इसे कोई बचा लो
हिंदी हमारी चेतना वाणी अमर–वरदान कोई दिला दो।

टिप्पणी

मन करता है...टिप्पणी दूँ।
पर जबान को...सामाजिक–सा बना लेता हूँ...
बार–बार।

समन्दर देखने को...अखंड बहुत है।
पर अख्शों को...पानी–सा बना लेता हूँ...
बार–बार।

याद आती है...भविष्य देख।
यही सोच मैं...आंतरिक दूरियां–सी बना लेता हूँ...
बार–बार।

कई बार लिखता हूँ मैं...और ओझल हो जाता हूँ।
क्योंकि जीवन को...चक्का जाम–सा बना लेता हूँ...
बार–बार।

समुद्र में बूंद सा पा लेता हूँ तो...जीना–सा आ जाता है।
मासूम–सी सूरत है तेरी और...यह भोला–सा संसार...
बार–बार।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।"

– सुमित्रानंदन पंत

जेसिका पूर्वे
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

एक पिता, पुत्री और दहेज की कुप्रथा

इस नए युग के बदलते समाज में कई बदलाव आए
किंतु अभी भी कई जगह इस समाज में,
दहेज की कुप्रथा को न मिटा पाए
जब से पैदा होती है एक बेटी
तब से बाप लग जाता है कमाने में
कि जैसे भी हो दहेज तो जुटाना है
अपनी प्यारी बिटिया को अच्छे से विदा कराना है
इसी दहेज प्रथा की एक कहानी
मैं तुम्हें सुनाती हूँ, अपनी जुबानी
इस आशा से कि अब भी समझ जाए यह समाज
और बंद कर दे यह बेटियों की सौदेबाजी।
छोटे से गाँव में रहता था एक परिवार
जिसमें एक लड़की थी, कबसे कुमारी
पिता था एक गरीब मजदूर,
पैसों की कमी से था वह बहुत मजबूर
दिन रात यह बात पिता को सतायी जाए
कि किस तरह अपनी प्यारी बिटिया की विदाई की जाए?
मुश्किल से खाने को दो रोटी मैं जुटा पाऊँ
न जाने किस तरह मैं अपनी बिटिया की डोली सजाऊँ
जब भी लड़के का बाप कहता शादी की आगे बात हो जाए
तो उस मजदूर का दिल बैठ जाता
उसके दिल में केवल एक ही बात उठती थी
कि अब यह दहेज की बात करेगा
न जाने कितनी रकम की मांग करेगा
यह सोच वह बेचैन हो उठता
कि न जाने मैं इतनी रकम जुटा पाऊंगा या नहीं
और अपनी प्यारी बिटिया को
खुशियों से विदा कर पाऊंगा या नहीं
ये सारी चिंताएं उस गरीब बाप को मन ही मन खाई जाती
साथ ही उसके शरीर को गलाई जाती
पिता की ऐसी हालत देखकर वह लड़की हुई लाचार
और करने लगी इस पर गंभीर विचार
इन सबका जिम्मेदार उसने खुद को माना
और पिता के इस बोझ की गठरी को हटाने का फैसला ठाना
खुद को बोझ मानकर कर लिया
उसने अपने जीवन को खत्म
और कह गई अपने पिता से
कि अगले जन्म में बेटा बनकर आऊंगी उनके घर में
तब न तो इस दहेज की चिंता उन्हें सताएगी
और न ही यह जमाना उन्हें रुलाएगा
इस तरह दहेज की कुप्रथा ने
न जाने कितने बाप से उनकी प्यारी बेटी को छीना है
और गरीबी लाचारी सा तकलीफों को बीना है
कुछ हद तक बदलाव ने
"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" को स्वीकारा है
पर फिर भी इस दहेज कुप्रथा को
अभी भी कितनों ने नहीं दुत्कारा है
आओ हम साथ मिलकर एक नई पहल करें
एक बेटी का पिता होने के कारण उसे विवश नहीं अपितु
गौरवान्वित करें
चलो दिल और वचन से समाज में एक अभियान चलाएं
और इस दहेज कुप्रथा का अंत कराएं।

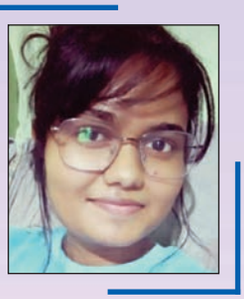

कोमल रैकवार
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

गुरू की महिमा!

गुरु वह है जो जीवन की ज्योति है
जो आत्म चिंतन की मोती है,
पुराणों से लेकर आधुनिकता की
गुरु हर संगम का वह किनारा है
जो भूले को राह पर और
टूटे को आशा देता है
वे अपने ही कर्मों से सबको
जीने की कला सिखाते हैं
गुरु अज्ञानता से तार देने की वह लेखनी है
जो सोचनीयता के भेद को खोलती है,
वे सच्चे आदर्श और श्रेष्ठ उपकारी हैं
जो अपने तेज से शिक्षा का मंत्र दान करते हैं
बड़े सौभाग्यशाली होते हैं वे
जिनके सर पर दुआएं सभी गुरुओं के होते हैं।

आस...

तवक्को न है अब मुझको किसी से,
हर सच्चाई को जान लो तुम भी झर्फ से
हर अल अब श्रेष्ठ है, भांपों न तुम अपने किसी मजहब से
अस्काम को तुम पहचान लो अपनी
तो झुक न पाओगे सामने किसी और के
अस्ल को बनाकर तू मजबूत
बना ले अपनी एक नई पहचान
देखेगा संसार भी तुमको
और लेगा अपने आगोश में
क्योंकि तुमने बना ली होगी तब अपनी
एक नई आदमियत की सही पहचान।

"ईश्वर एक है और उसे पाने का तरीका भी एक है। यही सत्य है। वो रचनात्मक है और वो अनश्वर है, जिनमें कोई डर नहीं और जो द्वेष भाव से परे है। इसे गुरु की कृपा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।"

– गुरू नानक जी

कुनिका
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

तय तो कर

मंजिलें हैं बहुत पर है जाना कहाँ क्या पता?
है इधर कोशिशें है उधर ख्वाहिशें
पर है जाना किधर क्या पता?
जिंदगी एक है कल का न 'वेट' कर
है तुझे जाना किधर तय तो कर
तय तो कर...
मुश्किलें हैं बहुत रास्ते में मगर
कोशिशें कम न कर है अगर जाना तुझे
मन में कोई बहाना न रख
आज है ख्वाब ये कल उन्हें सच तो कर
है तुझे जाना किधर तय तो कर
तय तो कर...

कुशाग्र शुक्ला
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

साधु

बड़े जतन से छोड़ा मैंने
अब रब–रब न दोहराऊँ
मिट्टी की मूरत पर अब
श्रद्धा न लुटाऊँ
कृष्ण राम बने मित्र मेरे
जब शिव सा ध्यान लगाऊँ
मैं क्यों भक्त बनूं साधु का
मैं खुद साधु बन जाऊँ
मैं मंदिर मस्जिद न तोडूं
मैं न उन्हें बनाऊँ
मैं खुद में मंदिर हूँ साधु
मैं खुद में दिए जलाऊँ
तोड़े भय के द्वार सभी
अब हर भय पर मुस्काऊँ
मैं न हिंदू मैं न मुस्लिम
मैं सब पर जान लुटाऊँ
बड़े जतन से छोड़ा मैंने
अब रब–रब न दोहराऊँ

"संत शब्द का प्रयोग प्रायः बुद्धिमान, पवित्र आत्मा, सज्जन, परोपकारी या सदाचारी व्यक्ति के लिए किया गया मिलता है और कभी–कभी साधारण बोलचाल में इसे भक्त, साधु व महात्मा जैसे शब्दों का भी पर्याय समझा जाता है।"

– आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

लिपिका कुमारी
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

चाय

बिन तेरे दिन शुरू होता नहीं
दो वक्त पर अब चाहिए, होता है तू
हर दिन की शुरुआत करता है तू
और शाम तलक सोचता मैं रहूँ
छोड़ूँ न छोड़ूँ है उलझन बहुत
थक गया हूँ मैं अब सोचकर
अब न पिऊं तुमको तो सर फटता मेरा
क्योंकि तेरी आदत हो गई है
कुछ जिंदगी की तरह
कभी लगता है तू अच्छा नहीं
अब पिऊंगी नहीं सोचती मैं रही
फिर भी आदत से मजबूर हूँ
दिल की बातें सुनी है सारी
इसे कैसे मैं अनसुना कर दूँ
अब तुझे छोड़ने का विचार आया है
मैं चाहती तो हूँ कि मंजूर किया जाय,
पर दिल के हाथों मजबूर हूँ
चाहती तो हूँ कि तुझे रोजाना पिऊं
पर बात मेरी आदत की थी
अब सेहत का ख्याल आया है
इसलिए तुझे छोड़ रही हूँ
यही विचार मन में छाया है
बेचैनी है बहुत तुझसे दूर जाने की
फिर मिलेंगे यार अभी बाकी है कई हिस्से कहानी के
अब छोड़ चुकी हूँ तुझे हो चुके काफी साल
अब तू आदत नहीं शौक बन चुका है मेरे यार!

रितिका
बी.ए. (ऑनर्स), प्रथम वर्ष

वाक्या

उँगली पकड़ जिस नाम की
ऊँचे शिखर पर चढ़ गए,
चढ़ के देखा उस शिखर पर
अभिमान से तब भर गए।
हमने पायी है ये मंजिल
महानता में भर गए,
मुड़ के न देखा फिर कभी
उस नाम को पंगु कर गए।
जिस नाम ने बोलना सिखाया
जब वाचालता से भर गए,
मौन कर दिया फिर उसी को
वाक्या ये कैसी कर गए।
सोचो समझो गुनों सभी
क्या संस्कार खो गए,
रितिका क्यों है नवयुग की इतनी कमजोर कड़ी
ये वाक्या माँ–बाप के संग हो गए।

"इस दुनिया में सबसे खूबसूरत चीज, अपने माता–पिता को मुस्कुराते हुए देखना है, और यह जानना कि उस मुस्कुराहट के पीछे कारण आप हैं।"

शिवम योगीराज
बी.ए. (आनर्स), द्वितीय वर्ष

पुरुष

कभी नारी के लिए लड़ा पुरुष
कभी देश के खातिर मरा पुरुष
कभी पत्नी के तानों से अपनाया पथ वागीश पुरुष ने
कभी मातृ–भूमि की रक्षा के लिए कटाया अपना शीश
पुरुष ने

कभी राम बनें कभी श्याम बनें
कभी माँ के लिए बन गए गजानन
नारी रक्षा में किया विद्रोह पिता से
कभी नारी हर के बना दशानन।

युद्ध विराट में पुरुष कभी भाई–आदर्श के
सम्मुख खड़ा कभी साथ खड़ा
पुरुष ने कभी दिया भेद भाई का
जो माने भाई से धर्म बड़ा!

वह भी पुरुष थे जो नारी को शतरंज द्युत में हारे थे
वह भी पुरुष थे जो नारी के लिए सीताहरता मारे थे
वह भी पुरुष थे यह भी पुरुष हैं ये भेद बताया
जाएगा
कलयुग के हर राम के अंदर रावण दिखलाया जायेगा

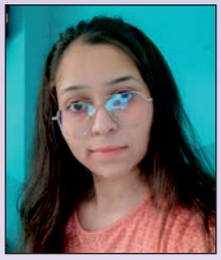

शिवानी रघुवंशी
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

दो फूल

एक डाल पर खिले दो फूल कहीं
बचपन एक साथ, पर एक सा नहीं
एक को बहुत सँवारा गया, पर एक का मोल नहीं कहीं
एक को मिला सब कुछ, पर एक समझौते में ही रही
गुजर रही दोनों की जिंदगी, पर कोई बदलाव नहीं
भूख लगने पर एक को थाली हाथ में मिलने लगी
पर दूसरे को खाने से पहले बनानी पड़ी
उमर दोनों की वही, पर अंतर कई
एक के सामने खुला आसमाँ और गली
दूसरे के बाहर निकलने पर छड़ी की जरूरत पड़ी
एक को इजाजत अपनी जिंदगी जीने की
और दूसरी जबरदस्ती के बंधन में बंधी
थी परिवार की इज्जत इसलिए एक भी शिकायत नहीं
अब आगे बड़ी जिंदगी
कुसुम वही पर शक्ल नई
एक था आजाद, पर दूसरी रश्मों,
इज्जत, फर्ज के तराजू में तुली
फूल बनकर भी वह कभी न खिली
समाज की वजह से कली ही रही
यही थी उस फूल की जिंदगी, कली ही रही
और एक दिन कली बनकर ही नीचे गिरी।

स्नेहा
बी.ए. (ऑनर्स), प्रथम वर्ष

माप

मान पिता का नभ से ऊपर,
ममता माँ की क्षिति से भारी है।
घर का मित्र घनी है घरनी,
वैद्य रोगी की सच्ची यारी है।
विद्या धन सबसे है बढ़कर,
संतोष सुखों में भारी है।
प्रेम जगत में अमृत से बढ़कर,
कलंक कालिख से कारी है।
ईर्ष्या जग में तेज अग्नि से,
चिंता चिता पर भारी है।
सुन स्नेहा माप जगत का,
कल्पना कवियों की न्यारी है।

"आपकी सफलता केवल आप ही तक सीमित नहीं है, इसलिए आपका कर्तव्य सफल होना है।"

– स्वामी विवेकानंद

तनुश्री भाटिया
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

वो चाहत लौटा दो

एक बीवी के नाते तुमसे तुम्हारी चाहत वापस चाहती हूँ
न जाने कहाँ गए वे दिन, जब नजरें हटती नहीं थी मुझसे
जब मेरे पास रहने के बहाने ढूंढा करते थे
जब मेरी जुल्फों में अपना हाथ सहला कर, मुझसे मेरे दिन के बारे में पूछा करते थे
जब तबीयत खराब का बहाना कर घर ही रुक जाते थे
और मेरे कंधे के उस तिल से खेला करते थे
अगर मुझे कुछ हो जाता, तो पागल से हो जाते
छोटी सी खरोच के लिए भी अस्पताल जाने की जिद करते
न जाने कहाँ गए वे दिन, जब बातें करने के लिए किसी मुद्दे की जरूरत नहीं पड़ती
जब बातें करते–करते मेरे ऊपर ही सो जाते
न जाने कहाँ गए वे दिन, जब अपनी जरूरतें याद दिलानी नहीं पड़ती
जब कहीं ले चलो कहना ही नहीं पड़ता
जब कैसी लग रही हूँ, पूछना ही नहीं पड़ता
जब आँखों–आँखों में इशारे हो जाते
जब हमारे उन इशारों से हर कोई जलता
जब तुमसे तुम्हारी चाहत मांगने की जरूरत ही नहीं पड़ती
न जाने कहाँ गए वे दिन
ये दूरियाँ मुझे अंदर ही अंदर खा रही हैं
तुम्हारी उस चाहत के बिना मैं अधूरी हूँ
मुझे बस वो चाहत लौटा दो।

तन्वी
बी.ए (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

भारत के माथे की बिंदी हमारी हिंदी

भारत देश का सम्मान, शान और स्वाभिमान है हिंदी
भारत देश की चेतना, वाणी का वरदान है हिंदी
अनेक बोलियों से निर्मित हमारी हिंदी
भारत देश की संस्कृति को दर्शाने वाली हमारी हिंदी
अनेक धर्मों के लोगों को एक ही माला में पिरोने वाली हमारी हिंदी
सरल एवं विस्तार पूर्वक प्रदर्शित होने वाली हमारी हिंदी
प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभाने वाली हमारी हिंदी
भारत देश का सम्मान और स्वाभिमान हमारी हिंदी
हमारी हिंदी निराला, प्रेमचंद की रचनाओं की शान है
हमारी हिंदी में बच्चन, दिनकर जी जैसे कवियों का मधुर संगीत है
कृष्ण की मुरली सी है आकर्षणकारी हमारी हिंदी
देश–विदेश में प्रसिद्ध हमारी हिंदी
भारत देश का सम्मान और स्वाभिमान है हमारी हिंदी
भारत देश की गौरव गाथा है हिंदी
एकता की अनुपम परंपरा है हिंदी
भारत देश की जन्म भाषा है हिंदी
भारत देश का सम्मान और स्वाभिमान है हमारी हिंदी

सपनों पर भरोसा

सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा
मत डर अपनी गलतियों से बस तू अपना कर्म किए जा
अपनी कमजोरी को तू अपनी हिम्मत बना
सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा
भूल जा अतीत में क्या हुआ था
उससे सबक लेकर तू आगे बढ़ता जा
कहने पर नहीं करने पर भरोसा रख
सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा
अपनी गलतियों को स्वयं पहचान
दोबारा न करने का वादा कर
सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा
कभी नकारात्मक सोच अपने मस्तिष्क में मत ला
सकारात्मक सोच से तू आगे बढ़ता जा
सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा
दुनिया की बातों से ध्यान हटा अपने लक्ष्य पर ध्यान लगा
अनेक बार गिरेगा,स्वयं उठने का प्रयास कर
सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा
दृढ़ संकल्प, हिम्मत से आगे बढ़ता जा
छोटी–छोटी अड़चनों से मत घबरा बस आगे बढ़ता जा
सपनों पर रख भरोसा अपना कर्म किए जा।

गुफरान
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

स्कूल की जिंदगी

याद आता है वह स्कूल का जमाना
दोस्तों के साथ टिफिन छीन के खाना
अगर हो कोई परेशान, तो उसे समझाना
याद आता है वह स्कूल का जमाना
वह साथ बैठकर हँसना, मुस्कुराना
शरारत करके चुप हो जाना
अपना इल्जाम दूसरों पर डालना
याद आता है वह स्कूल का जमाना
'हिस्ट्री' के पीरियड में सो जाना
सर के आवाज की नकल उतारना
न भूलेंगे वे दिन, वे बातें
क्योंकि याद आता है हमें स्कूल का जमाना
बहाने बनाकर स्कूल न जाना
अगले दिन स्कूल में सफाई देना
भरी कक्षा में डांट खाना
याद आता है वह स्कूल का जमाना।

"शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।"

– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

ज्योत्सना
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

ये ठंडी हवाएँ

ये ठंडी हवाएँ
रोजाना मुझसे कुछ कहती हैं
कभी मैं इनकी खामोशियों को
पनाह देती हूँ,
तो कभी ये मेरी गुफ्तगू
समझती हैं।
जाने क्या बात है!
दोनों बहुत अलग
फिर भी साथ हैं।
दोस्त कहो या साथी,
जीवन के अंतिम साँस
तक बनी रहूँगी
हमराही।

पराया घर

पराया घर...
कभी समझ नहीं पाई इसके मायने,
अगर वह पराया ही है, तो क्यों जाना उस घर में?
अपना घर खुद ही बना लूंगी।
लेकिन अगले ही पल मेरी उम्र की अस्थिरता
माँ की ख्वाहिश और पराए घर का ख्वाब
मुझ पर हावी होने लगता है...

शीतल तिवारी
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

कभी–कभी

कभी–कभी मैं खुद से ही, कहीं दूर चली जाना चाहती हूँ
अगर जो तुम परेशान हो मुझसे, तो तुम अकेले तो नहीं हो
कभी–कभी मैं खुद भी, खुद को नहीं भाती हूँ
कभी–कभी सब कुछ बस यूँ ही, बिखरा छोड़ देना चाहती हूँ
कभी–कभी सुकून की तलाश में मैं, बस घंटों यूँ ही बैठी रहना चाहती हूँ
कभी–कभी मेरा मन बेवजह ही खराब हो जाता है, कभी–कभी मन को कुछ भी नहीं भाता है
कभी–कभी मन खाली सा लगता है, जैसे अंतर्मन में सब अस्पष्ट हो
कभी–कभी बस सब कुछ यूँ ही छोड़ देना चाहती हूँ
नहीं पता क्यों?
बस घंटों यूँ ही बैठे रहना चाहती हूँ और अपने अस्तित्व की खोज करना चाहती हूँ
कभी–कभी मैं खुद से ही कहीं दूर चली जाना चाहती हूँ।

"बीते समय के लिए मत रोइए, वो चला गया और भविष्य की चिंता करना छोड़ो क्योंकि वो अभी आया ही नहीं है, वर्तमान में जियो, इसे सुन्दर बनाओ।"

– गौतम बुद्ध

सौरभ यादव
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

था अध्यापक का ब्लैक बोर्ड, कभी ज्ञान का खजाना

था अध्यापक का ब्लैक बोर्ड, कभी ज्ञान का खजाना
अब तो ये किस्सा पुराना, अब है मोबाइल का जमाना ।
मिल जाते हैं मोबाइल पर ही अध्यापक
पाँच इंच की स्क्रीन से जानकारी देते व्यापक।
अब मोबाइल है टीचर, टीचर के पास मोबाइल
डाँटते तो टीचर है हीं नहीं, बस करते रहते स्माइल।
बच्चे अब कर लेते हैं वहीं से आज्ञा का पालन
पढ़ाई तो पीछे चलती, आगे होता गेम का संचालन।
ऑनलाइन पढ़ाई से मम्मी पापा भी खुश नहीं
पता है उनको पढ़ाई नहीं लूडो खेल रहा है दुष्ट।
अब टीचर की डांट से बच्चे होते बड़े प्रसन्न
क्योंकि उनको चुप करने का उनके पास है बटन।

"शिक्षण एक उत्कृष्ट पेशा है जो व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य का निर्माण करता है। यदि लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं, तो यह मेरे लिए सबसे बड़े सम्मान की बात होगी।"

– ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हार्दिक शर्मा
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

मुझे तुम दिखाई देती हो!

1 – मौका मिले तो अगले जन्म मैं तुम्हारे बालों की वो लट बनना चाहूँगा,
जो बार – बार तुम्हारे गाल पे आके कभी तुम्हारी खूबसूरती बढ़ाती है तो कभी तुम्हें सताती है।
वही लट जिसे तुम अपना श्रृंगार करते वक्त आईने में देखकर कुछ देर इतराती रहती हो।
वही लट जिसे तुम मुझसे बातें करते हुए अपनी उंगलियों से होले से कान के पीछे ले जाती हो।
क्या तुम अपने झुमके दिखाना चाहती हो मुझे या फिर वो मखमल से गाल जिनपे वो तिल चार चाँद लगाता है? पर माफ करना, मेरी नजर तो बेचारी उस लट पे ही टिकी रह जाती है। क्योंकि उसमें भी मैं एक बावरे मन की परछाई पाता हूँ। क्योंकि उसमें मुझे मैं दिखाई देता हूँ।

2 – क्या वो लट जान बूझकर कर तुम्हारी एक झलक पाने के लिए अपनी राह भूल गई है?
या फिर खुद को बाकियों से अलग दिखाना चाहती है ताकि तुम्हारा ध्यान अपनी ओर खींच सके?
या मुमकिन है मेरी तरह वो भी तुम्हारी सादगी देख कर उन जुल्फों से अलग हो गई हो जो सिर्फ बाहरी सुंदरता की कायल होती हैं।

पर शायद उससे वजह पूछना उसके इश्क पे सवाल उठाने जैसा होगा।
अच्छा कभी मन करे तो अपनी जुल्फों को इकट्ठा करके बाँध लेना।
उनके बिखरे या बंधे रहने में मेरा कोई स्वार्थ नहीं।
मेरा मन तो रात दिन उस लट की चिंता में ही डूबा रहता है।
तुम भी बस उस नादान लट को यूँही लहराने के लिए आजाद रहने देना।
क्योंकि उस आजादी में कैद होकर मैं खुद को जरा महफूज पाता हूँ।
क्योंकि उसमें मुझे मैं दिखाई देता हूँ।

3 – वो लट भी मेरी तरह हर पल तुम्हारे करीब आने के मौके ढूंढती है।
और तुम हो जो मुझे हर बार उस लट की ही तरह पीछे धकेल देती हो।

शायद अंजान हो हमारी मोहब्बतों से,
जानते हैं हम भी कि कितनी पाक हो तुम।
यकीन करो हम दोनों दाग नहीं बस तुम्हारा काला टीका बनना चाहते हैं।
तुम्हारी बलाए लेना चाहते हैं तुम्हें दुआएँ देना चाहते हैं।
गर हो सके तुमसे, तो मेरी एक ख्वाहिश पूरी कर देना,
उस लट को यूँही अपने गालों से लिपटे रहने देना,
उसमें मेरे सपने तुम्हारे साथ अंगड़ाई जो भर रहे हैं।
हाँ और मेरे दिल को भी उस लट के एक कोने में सिमटे रहने देना,
क्योंकि उससे मैं खुद को तुम्हारे करीब पाता हूँ,
क्योंकि उसमें मुझे मैं दिखाई देता हूँ।

4 – शायद नहीं, ये सब तो महज एक खुदगर्ज आशिक के लफ्ज हैं।
एक आखिरी बात कहूँ तुमसे?
अगर तुम्हारी रजा न हो तो मेरे प्यार को उस लट तक ही सीमित रहने देना,
और उस लट को भी कभी तुम्हारे होठों को छूने न देना।
क्योंकि डर लगता है कि कहीं मुझे खुद को उस लट में देखने की कल्पना मात्र से ही तुम मैली न हो जाओ।

चलो उस लट को कान के आगे या पीछे रखने की मेरी पसंद नापसंद को मैं तुम पर नहीं थोपता,
तुम तो एक आजाद पंछी हो तुम्हें भला ये चंद बालों की बेड़ियाँ कहाँ रोक पाएंगी।
चलो मैं खुद को उस लट से भी नहीं जोड़ता,
क्योंकि मुझे लगता है मेरे जुड़े रहने से वो एक दिन तुम्हारी कमजोरी बन जाएंगी,
और तुम्हारी उड़ान की सीमाएं बाँध देंगी।
हाँ पर तुम्हारे लिए अपना सब छोड़ने वाली उस लट को तुम्हारी खूबसूरती का हिस्सा जरूर बने रहने देना।

क्योंकि उसमें तुम सबेरे को पूरब में छाई उस लाली जैसे शांत पर पूर्ण मालूम होती हो।
क्योंकि उसमें मुझे तुम दिखाई देती हो।

"प्रेम केवल एक भावना नहीं, एकमात्र वास्तविकता है। यह सृष्टि के हृदय में रहने वाला चरम सत्य है।"

– रवींद्रनाथ टैगोर

गद्य खण्ड

"भावना, ज्ञान और कर्म जब एक सम पर मिलते हैं तभी युग प्रवर्तक साहित्यकार प्राप्त होता है।"

– महादेवी वर्मा

डॉ. मनोज कुमार कैन

दिल्ली से ग्वालियर तक की रोमांचकारी यात्रा!

गुरुवार का दिन था। मेरा बेटा अपने दोस्तों के साथ मुंबई घूमने चला गया। मेरी प्यारी बिटिया ने कहा पापा हम भी कहीं घूमने चलते हैं। कोरोना के बाद हम बहुत लंबे समय से कहीं बाहर घूमने भी नहीं गए थे। काफी खोजबीन के पश्चात यह तय हुआ कि क्यों न इस बार ग्वालियर की यात्रा की जाए। ग्वालियर मेरी बिटिया पहले ही स्कूल की ओर से जा चुकी थी। उसे ग्वालियर बहुत पसंद आया। शायद तभी से मेरी बिटिया ने यह सोच लिया होगा कि मैं अपने मम्मी–पापा को भी ग्वालियर जरुर दिखाऊंगी। स्कूल की ओर से वह अकेली ही गई थी। इस बार वह हमारे साथ जाना चाहती थी। लंबी पारिवारिक चर्चा के पश्चात हमने ग्वालियर जाने का निश्चय कर लिया। रात में ही हमने जरूरत के हिसाब से अपनी पैकिंग कर ली। अगले दिन शुक्रवार को तड़के जल्दी उठकर हमने अपनी गाड़ी ओरा से सड़क मार्ग से ग्वालियर जाने का अपना रोडमैप भी तैयार कर लिया। जाने से पहले हमने गूगल देवता से ग्वालियर से संबंधित कुछ जानकारियाँ भी प्राप्त कर ली थी।

सुबह गाड़ी में हवा–पानी चेक कराकर, ईंधन भरकर हम तीनों– मैं, मेरी बेटी और धर्मपत्नी नोएडा–आगरा हाईवे से ग्वालियर की यात्रा पर निकल पड़े। सुबह का मौसम बहुत सुहाना था। हा. ईवे की खूबसूरती देखते ही बनती थी। लंबा–चौड़ा बेहद खूबसूरत हाईवे, जिसके दोनों तरफ हरियाली ही हरियाली थी। जो गाड़ी दिल्ली में खिसक रही थी, वह अब हाईवे पर सरपट दौड़ने लगी थी। हाईवे पर गाड़ी चलाने का आनंद अलग ही होता है। मैं उस आनंद का लुत्फ उठा रहा था। सुबह उठकर हमने हल्का ब्रे. कफास्ट किया और दोपहर के लिए घर से ही लंच भी पैक कर लिया था। वैसे तो हाईवे पर बहुत खूबसूरत रेस्टोरेंट बने हुए हैं, लेकिन रेस्टोरेंट और घर में हम अक्सर लंच–डिनर करते ही रहते हैं। अतः हमने अपनी ओरा कार के छोटे से स्पेस में बैठकर लंच का लुफ्त

उठाया, जिसका एक अलग प्रकार का ही आनंद था। हमें छोटी–छोटी चीजों में भी अपने आपको व्यवस्थित करके आनंद लेना चाहिए। बिटिया ने अपने अनुकूल खाने की चीजें रख ली थी। पूरे रास्ते के दौरान वह उन चीजों का आनंद स्वयं भी ले रही थी और हमें भी दिला रही थी। मौज–मस्ती का यह सफर जो सुबह 10 बजे आरंभ हुआ य शाम को 5 बजे गंतव्य स्थान पर पहुँचने के पश्चात समाप्त हुआ। अब हम ग्वालियर में थे। हमने दिल्ली से ही होटल में अपने रुकने की व्यवस्था कर ली थी य लेकिन वहाँ पहुँचने के बाद जब हमने होटल का निरीक्षण किया तो हमें पसंद नहीं आया। इससे एक बात हमारी समझ में आयी कि बुकिंग के समय इंटरनेट पर जो रेट और तस्वीर होटल की दिखाई जाती है, उसमें और वास्तविकता में बहुत बड़ा फर्क होता है। हमने दो–तीन होटल और देखे, लेकिन हमें कुछ समझ में नहीं आया। फिर हमने मध्य प्रदेश राज्य सरकार का 'होटल तानसेन रेजीडेंसी' देखा। वह होटल बहुत अच्छा, खूबसूरत और हमारे खर्च की सीमा में भी आ रहा था। होटल वाले ने प्रोफेसर का सम्मान करते हुए हमें कुछ डिस्काउंट भी दिया। होटल वाले से ही हमने अगले दिन घूमने के लिए कुछ जानकारियाँ प्राप्त कर ली थी। उसने बताया कि अभी आप शाम को 'बड़ा बाजार' घूम सकते हैं। वह ग्वालियर का सबसे बडा बाजार है। सामान कमरे में रखकर फ्रेश हुए और चाय–पकौड़े का नाश्ता लेकर हम लगभग 7 बजे 'बड़ा बाजार' घूमने के लिए निकल पड़े। बड़ा बाजार देखने की पश्चात हमें वही अनुभूति हुई जो दिल्ली में चाँदनी चौक घूमते हुए होती है। यह बाजार चाँदनी चौक जितना विराट तो नहीं था य लेकिन इसकी अनुभूति हमें अवश्य करा रहा था। वापस लौटते हुए हम डीएनडी मॉल भी घूमे ! मॉल कहीं के भी हो सब एक जैसे ही लगते हैं !हमने एक अच्छे रेस्टोरेंट में खाया। खाना बहुत ही स्वादिष्ट था। जैसा हम सोच रहे थे कि छोटे शहरों में खाने–पीने का सामान थोड़ा सस्ता होगाय ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। सभी चीजें उसी रेट पर थी जिस रेट पर दिल्ली में मिलती हैं।

अगले दिन शनिवार को हम आराम से सोकर उठे। उस दिन हमनें होटल तानसेन में ही ब्रेकफास्ट किया। होटल का ब्रेकफास्ट और वहाँ के कर्मचारियों का व्यवहार लाजवाब था। इसके पश्चात विचार आया कि ग्वालियर घूमने के लिए किराए की गाड़ी कर ली जाए। फिर सोचा जब अपनी गाड़ी है, तो भाड़ा क्यों दिया जाए ! अंत में निर्णय हुआ कि अपनी गाड़ी से ही ग्वालियर का भ्रमण किया जाएगा।

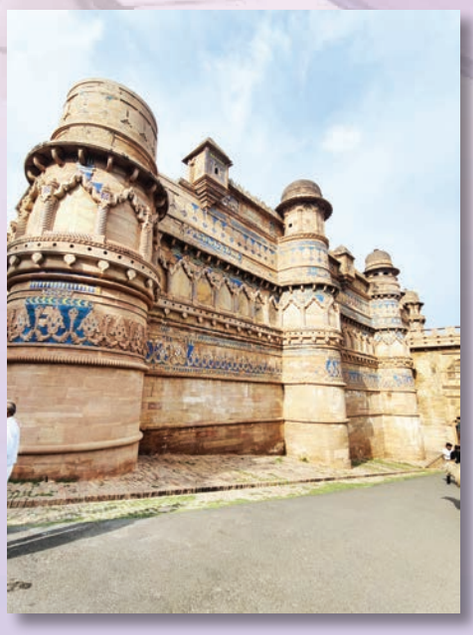

फिर हम पहुँच गए 'जय विलास पैलेस'। यहाँ पहुँचते ही उसके प्रवेश शुल्क ने मुझे बहुत कष्ट पहुंचाया। प्रत्येक व्यक्ति उसका प्रवेश शुल्क 300 रुपए था। एक सामान्य व्यक्ति के लिए यह बहुत बड़ी कीमत थी । इससे पता चलता है कि पहले राजा महाराजा किस तरह आम प्रजा का शोषण करते थे और अब इस तरह से आम आदमी का शोषण किया जा रहा है। 'जय विलास पैलेस' दर्शन के बहाने लोगों को लुटने का काम जारी था। जब यहाँ आ गए तो देखना था ही। 900 रुपए में हमने तीन टिकट लिए और महल में प्रवेश कर गए। इस महल का निर्माण 1874 ई. में किंग एडवर्ड के आने के बाद महाराजा जयाजीराव सिंधिया ने करवाया था। इस विराट महल में 400 कमरे

थे। उन्हीं में से 40 कमरों में जीवाजीराव सिंधिया संग्रहालय आम जनता के लिए बनाया गया है। झूमर, इतालवी संगमरमर की फर्श, दरबार हॉल, भव्य फारसी कालीन, अलंकृत सामान, दुनिया भर से एकत्रित की गई अत्यंत दुर्लभ वस्तुएँ यहाँ की अनुपम निधि हैं। सांस्कृतिक विरासत, इतिहास की कहानी और वास्तुकला के अद्भुत उदाहरण इस पैलेस में देखने को मिलते हैं। भारत के ऐसे भवनों को खानदानी राजघरानों से मुक्त करके जनता के उपयोग में लाना चाहिए। लगभग 2 घंटे 'जय विलास पैलेस' में व्यतीत करने के बाद हम ग्वालियर गेट से पहुँच गए 'गुजरी महल'।

15वीं शताब्दी में निर्मित 'गुजरी महल' राजा मानसिंह और रानी मृगनयनी के गहन प्रेम का प्रत्यक्ष प्रमाण है। 'गुजरी महल' के अंदर भी संग्रहालय था। इस संग्रहालय में ग्वालियर के आसपास से प्राप्त मुर्तियां को सुव्यवस्थित रूप से रखा गया था । यह महल अपनी कहानी स्वयं प्रस्तुत कर रहा था। यह महल उसी तरह खूबसूरत है, जैसे कभी इसमें रहने वाली रानी मृगनयनी थी। गुजरी रानी राजा मानसिंह की तरह वीरांगना थी। अपनी तीन शर्तें मनवाने के बाद उन्होंने राजा मानसिंह से प्रेम विवाह किया था। उसके बाद 'ऊरवाई गेट' से हम गाड़ी द्वारा ग्वालियर किला पहुँचे।

'ग्वालियर का किला' विश्व प्रसिद्ध ग्वालियर शहर की जान है। इसका निर्माण सन् 727 ई. में हुआ। यह एक अभेद्य विशालकाय किला है। यह किला गोपाचल नामक पर्वत पर स्थित है। यहां से समस्त ग्वालियर शहर के दर्शन किए जा सकते हैं ! इसका निर्माण करने वाले पहले राजपूत राजा सूर्यसेन थे। राजा मानसिंह तोमर ने इसमें कई निर्माण कार्य करवाएं। उसमें प्रसिद्ध है– 'मानसिंह महल' ! इस महल की सुंदरता अनुपम , अद्भुत और अद्वितीय है । लाल बलुआ पत्थर से बना यह किला ग्वालियर शहर की हर दिशा से दिखाई देता है। '' ग्वालियर '' और '' ऊरवाई '' नामक इसके दो गेट हैं। इस किले के मुख्य आकर्षण बुद्ध –जैन मंदिर, करण महल, विक्रम मंदिर, जहाँगीर महल और शाहजहाँ महल हैं। यहाँ आकर हमें ग्वालियर शहर के संदर्भ में अन्य जानकारियाँ भी प्राप्त हुईं। जैसे ग्वालियर का प्राचीन नाम गोपराष्ट्र है। यह गालव ऋषि की तपोभूमि हैय अतः गालव ऋषि के नाम पर ही इसका नाम ग्वालियर पड़ा। यहीं पर हमने कुछ अल्पाहार किया। कुछ समय यहाँ विश्राम करने के उपरांत सीधा पहुँच गए 'सहस्त्रबाहु मंदिर'। यह मंदिर ग्वालियर किले के समीप ही स्थित है।

'सहस्त्रबाहु मंदिर' को 'सास बहू के मंदिर' और 'हरिसदानाम मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ प्रांगण में सुख की अनुभ. ूति करवाने वाले दो सुंदर मंदिर बने हुए हैं। एक मंदिर बहुत बड़ा थाय दूसरा उससे थोड़ा छोटा। 'सहस्त्रबाहु मंदिर' का निर्माण 11वीं शताब्दी में हुआ था। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। राजा महिपाल ने सन् 1093 ई. में इसका निर्माण करवाया था। सास बहू मंदिर के नामकरण की भी एक कहानी प्रचलित है। एक रोचक कथा के अनुसार महाराज महिपाल की पत्नी भगवान विष्णु जी की परम भक्त थीं। इसलिए राजा ने भगवान विष्णु जी के सम्मान में सास के

लिए बड़े मंदिर का निर्माण करवाया। राजा महिपाल की पुत्रवधू शिव जी की भक्त थी। इसलिए उन्होंने विष्णु मंदिर के समीप ही बहू के लिए शिव जी का मंदिर भी निर्मित करवाया। दोनों ही मंदिरों की छटा एकदम निराली है। शाम के भाव विभोर कर देने वाले वातावरण में मंदिरों को बार–बार देखने को मन करता है। तीन मंजिला इन मंदिरों को हिंदू–मुस्लिम लड़ाइयों में बहुत क्षति पहुँची हैय जो मंदिर में द्रष्टव्य है। हमें हल्की–हल्की थकान का अहसास होने लगा था। अब हम सीधे पहुँच गए 'तेली का मंदिर'।

'तेली का मंदिर' विष्णु, शिव और अन्य देवी देवताओं को समर्पित है। इसका निर्माण काल 8वीं शताब्दी से लेकर 9वीं शताब्दी के आरंभिक काल के बीच माना जाता है। मंदिर का निर्माण प्रतिहार राजा मिहिरभोज के शासनकाल में तेल के व्यापारियों द्वारा दिए गए धन से हुआ था। इसलिए इस मंदिर को 'तेली का मंदिर' कहते हैं। ग्वालियर किले में विद्यमान समस्त स्मारकों में यह सबसे ऊँचा है। इसकी ऊंचाई लगभग 30 मीटर है। मंदिर की सुंदरता सम्मोहित करने वाली है। इस मंदिर की बनावट दक्षिण भारत के मंदिरों की तरह लगती है। यहाँ से चलकर हम पहुँच गए 'तानसेन का मकबरा'।

तानसेन के मकबरे के लिए एक बड़े बाजार में से अंदर की ओर रास्ता जाता है। यह एक हरे–भरे मैदान में स्थित है। तानसेन की इच्छानुसार उनकी कब्र उनके गुरु मोहम्मद गौस के बगल में ही स्थित है। तानसेन का असली नाम रामतनु पांडे था। अकबर ने इन्हें नवरत्न में शामिल कर 'संगीत सम्राट' की उपाधि से नवाजा था। यहाँ प्रतिवर्ष तानसेन संगीत समारोह का आयोजन भी किया जाता है। हमने भी संगीत सम्राट की समाधि पर शीश नवाया। हमारा आज का सफर अंतिम पड़ाव में था। वहाँ से हम अपने होटल की ओर निकल पड़े। अंधेरा हो गया था। रास्ते में हमने एक स्थान पर सावन का मेला लगा हुआ देखा। इस मेले मेंअनेक प्रकार के झूलों और व्यंजनों की व्यवस्था थी। हमनें दोनों का भरपूर आनंद लिया। अब हम बहुत अधिक थक गए थे। वहाँ से सीधा अपने होटल आए और डिनर करके सो गए। अगले दिन हमें दिल्ली के लिए रवाना होना था।

रविवार को बहुत देर से सोकर उठे। सोचा था कि सुबह जल्दी उठकर कुछ देखने के लिए छूट गया होगा, तो उसको देखते हुए दिल्ली की ओर चल पड़ेंगे। लेकिन अब ज्यादा समय नहीं होने के कारण हम सीधा दिल्ली की ओर रवाना हो गये। वैसे तो ग्वालियर में एक–दो और भी जगहें देखने योग्य थीय जैसे सूर्य मंदिर और एक छोटा सा चिड़ियाघर। सूर्य मंदिर मरम्मत के कारण बंद था। चिड़ियाघर यह सोचकर नहीं देखा कि दिल्ली के चिड़ियाघर से बड़ा और कोई हो ही नहीं सकता। धैर्य धारण करके हमनें सीधा दिल्ली की सड़क पकड़ ली। एक बार को मन में विचार आया कि आगरा या मथुरा होते हुए चलेंगे।परंतु यह सोच कर विचार टाल दिया कि इनको देखने के लिए एक अलग से कार्यक्रम बनाएंगे।

रात के 8 बजे हम अपने घर में थे। ग्वालियर यात्रा हमारे लिए सदैव स्मरणीय रहेगी। परिवार के साथ सड़क मार्ग से की गई इस यात्रा के दौरान ग्वालियर के पूरे इतिहास को जानने–समझने और देखने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ। यात्रा के दौरान मौसम थोड़ा गर्म जरूर रहाय लेकिन हर मौसम का अपना एक आनंद है। हमने इस गर्म मौसम में भी आनंद लेते हुए पूरे ग्वालियर के दर्शन किए।

रजनी जगोता
एसोसिएट प्रोफेसर

घर का खाना

आज करीब दो महीने पश्चात फोन की ऐसी घंटी बजी जिसके कॉलर में अपनी बेटी का नाम, जो उसने 'माई वेरी ओन' (My Very Own) के नाम से 'सेव' किया था, देखकर उसकी बांछें खिल गईं। उसकी प्रसन्नता उसके चेहरे पर झलक रही थी। उतावलेपन में फोन हाथ से छूट गया। जल्दी से उसने फोन उठाया तो आवाज आई – माँ कल मैं अपने चार साथियों के साथ ट्रेन से दिल्ली पहुँचूंगी, ट्रेन वहाँ दो मिनट के लिये रुकेगी। आप पाँच लोगों के लिये अच्छा–सा खाना बनाकर ले आइएगा। सही तरीके से 'पैक' करने की हिदायत के साथ फोन काट दिया गया।

शाम ढल चुकी थी। बाजार से जरूरी सामान मंगवाया। गाजर का हलवा तो बिटिया को बहुत पसंद है, उसने सोचा। कब सारी तैयारी करते–करते रात के 12 बज गए मालूम ही न चला! सुबह 4 बजे उठकर उसने गर्म–गर्म पूड़ियाँ बनाईं। गाजर के हलवे में खोया घिसकर डाला, खूब सारा।

सहसा पति की आवाज आयी कि जल्दी करो टैक्सी आ गयी है। खीरा, टमाटर काटते हुए वह कह रही थी कि न जाने उसने कब से सलाद न खाया होगा। अरे पेपर नैपकिन रखे क्या? बच्चे हाथ कैसे पोछेंगे? खाना ठीक से पैक किया और पूरे जोश से कदम बढ़ाए। स्टेशन पहुँचकर मालूम हुआ कि ट्रेन एक घंटा लेट है। आँखे पथराने लगी। कुछ नींद न पूरी होने से और कुछ इंतजार की घडियों में। शोर ने चेतावनी दी ट्रेन के आने की। ट्रेन रुकी। उसकी निगाहें चारों और दौड़ने लगी, अपनी बेटी को ढूंढती हुई। बेटी दौड़ी हुई आयी और बोली जल्दी खाना दो सबको बहुत भूख लगी है। खाना लेकर जल्दी से गाड़ी में वापस चली गयी। दूर हवा में 'थैंक यू' की आवाज गूँजी खिड़की से। जब ट्रेन ने रफ्तार पकड़ ली तो वो भी बेंच से उठकर स्टेशन से बाहर की ओर बढ़ी। शाम 7 बजे जब से बेटी का फोन आया था उसने सही से पलक न झपकी थी। क्या बनाऊँ, कैसे बनाऊँ इन सब में जैसे वो गुम हो गयी थी।

अब उसे याद आया उसने तो कल रात खाना भी नहीं खाया, न ही किसी और को खिलाया!

धीमी गति से टैक्सी घर की ओर बढ़ रही थी। अब सड़क पर ट्रैफिक बहुत हो चुका था। आधे रास्ते पहुँचे तो उसने अपने पति से कहा, क्यों जी आज कहीं बाहर खाना खा लेते हैं क्योंकि उसमें हिम्मत न बची थी आज घर पर खाना बनाने की।

शकील अहमद
लाइब्रेरी कर्मचारी

ग्रीन लाइब्रेरी : वर्तमान की आवश्यकता

आधुनिक काल में पुस्तकालय की एक नई छवि स्थापित करने के लिए ग्रीन लाइब्रेरी (हरित पुस्तकालय) की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ग्रीन लाइब्रेरी शब्द का उदय 1990 के दशक में हुआ था। ग्रीन लाइब्रेरी से आशय ऐसे पुस्तकालय से है, जो नवीनतम अत्याधुनिक तकनीकी का उपयोग करके बनाए गए हों और वह अपने उपयोगकर्ताओं को पर्यावरण के अनुकूल सेवाएं प्रदान करती हो। ग्रीन लाइब्रेरी के संदर्भ में उन सभी उपायों को शामिल किया जाता है, जिसमें ऊर्जा के संसाधनों का दोहन कम हो सके तथा नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग अधिकतम हो सके।

ग्रीन लाइब्रेरी की आवश्यकता क्यों? वर्तमान समय तकनीकी युग का है। तकनीकी के कारण ही प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग, कार्बन उत्सर्जन, नवीकरणीय संसाधनों का कम उपयोग आदि कारणों से ग्लोबल वार्मिंग की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अतः स्वच्छ जल, ऊर्जा तथा नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए ग्रीन लाइब्रेरी भवनों की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

ग्रीन लाइब्रेरी भवन का निर्माण करते समय हमें मुख्यतः तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है– अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिकी और समानता। इन्हीं तीनों को ध्यान में रखकर ग्रीन लाइब्रेरी भवन का डिजाइन निर्धारित किया जाना चाहिए, जिससे भवन के अंदर नकारात्मक प्रभाव कम किया जा सके तथा सकारात्मक प्रभाव ऊर्जा का प्रसार हो। जगह का चुनाव ऐसा होना चाहिए जो परिस्थितिकी के अनुकूल हो। बारिश के पानी का उपयोग किया जा सके। लाइब्रेरी भवन की बनावट ऐसी होनी चाहिए जिसमें प्राकृतिक प्रकाश का ही अधिकतम उपयोग किया जा सके। उसमें ऐसी व्यवस्था का समावेश हो, जिसमें लाइब्रेरी जब खाली हो तो लाइट निर्धारित समय में स्वतः ही बंद हो जाए। लाइब्रेरी भवन निर्माण में प्राकृतिक निर्माण सामग्री और बायोडिग्रेडेबल उत्पाद सामग्री का इस्तेमाल होना चाहिए। लाइब्रेरी की छत ऐसी हो जिस पर ऊर्जा प्लांट लगाया जा सके। लाइब्रेरी के आसपास हरा–भरा गार्डन और सदाबहार वृक्ष लगे होने चाहिए, जिससे वातावरण में शीतलता बनी रहे।

ग्रीन लाइब्रेरी आंदोलन के बावजूद ग्रीन लाइब्रेरी भवन के निर्माण एवं पुनर्निर्माण के लिए बहुत

सारी चुनौतियाँ अभी भी महसूस की जाती हैं। ग्रीन भवन के निर्माण की लागत सस्ती होती है, लेकिन पुनर्निर्माण गतिविधियों में लाइब्रेरी के लिए सीमित बजट का आवंटन प्रमुख चुनौती है। महाविद्यालयों में पुस्तकालय को सबसे उपेक्षित स्थान माना जाने लगा है, जबकि पुस्तकालय संस्थान का हृदय कहलाता है। फिर भी पुस्तकालय अध्यक्ष को सीमित जगह में ही काम चलाना पड़ता है।

हाल के वर्षों में भारत में ग्रीन लाइब्रेरी के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे लाइब्रेरी में एल.ई.डी. लाइट का उपयोग, प्राकृतिक रोशनी, हवा और सौर्य ऊर्जा का उपयोग होने लगा है। स्वच्छता पर जोर, स्वच्छ शौचालय, उपयुक्त स्थानों पर कचरा निपटान की व्यवस्था और नवीनीकरणीय तकनीकों का इस्तेमाल किया जाने लगा है।

"किसी घर में पुस्तकालय जोड़ना उस घर को एक आत्मा देना है।"

– सिसरो

"एक चीज जो आपको बिल्कुल सही–सही जाननी चाहिए वह है लाइब्रेरी का पता।"

– अल्बर्ट आइंसटाइन

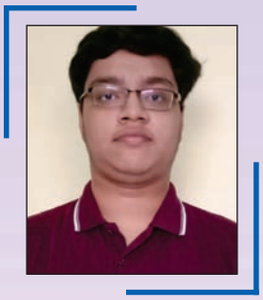

आयुष
बी.ए. (आनर्स), द्वितीय वर्ष

पुस्तक समीक्षा

मानस का हंस

लेखक – अमृतलाल नागर
प्रकाशन – राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष – 1972

'मानस का हंस' हिंदी साहित्य के उन उपन्यासों में से है जोकि साहित्य के वांग्मय और जगत में अद्‌भुत और अप्रतिम स्थान अनुग्रहित कर चुका है। यह उपन्यास हमें न केवल गोस्वामी तुलसीदास जी के संपूर्ण जीवन से अवगत कराता है, अपितु तत्कालीन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, शासन व्यवस्था तथा सामाजिक परिदृश्य की चर्चा भी बड़ी तल्लीनता के साथ और सहज तथा समृद्ध भाषा में हम सभी के समक्ष प्रस्तुत करता है।

'मानस का हंस' उपन्यास लिखना नागर जी का एक सपना था। जब उन्होंने यह निर्धारित किया कि वह इस अद्‌भुत व्यक्तित्व को एक उपन्यास की अभिव्यंजना प्रदान करेंगे, तो साहित्य जगत में कौतूहल हो उठा, क्योंकि ऐसा उपन्यास लिखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इसके मानक और प्रामाणिक तत्त्व कहाँ और कैसे प्राप्त हो? कारणतः इस पर लिखना कठिन कार्य था, क्योंकि नागर जी को इतिहास तथा पुरातत्त्व आदि का ज्ञान था और क्योंकि यह उनका सपना था, इसीलिए धुन के पक्के नागर जी ने इस उपन्यास की रचना की।

नागर जी के पहले भी कई साहित्यकार यथा रघुवर दास तथा कृष्णदत्त मिश्र आदि ने इस विषय पर लिखने का प्रयास किया। किंतु वे असफल रहे नागर जी का 'रामचरितमानस' से विशेष प्रेम ही इस उपन्यास को लिखने और तुलसीदास जी पर शोध करने की उर्जा उन्हें अमूर्त रूप से प्रदान करता रहा।

राम जन्मभूमि तथा बाबरी मस्जिद जैसे विषय भी नागर जी की कलम की धार से अछूते नहीं रह

पाए हैं। यह उपन्यास निःसन्देह केंद्रित तो गोस्वामी तुलसीदास पर है, किंतु तत्कालीन परिदृश्य भी इसमें जैसा निखर कर आया है वैसा और कहीं नहीं। एक व्यक्तिगत मान्यता मेरी यह है कि यह उपन्यास गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन चरित्र न होकर यह उनका संपूर्ण जीवन ही है।

क्योंकि उनकी जन्म से लेकर मृत्यु तक सारी घटनाएँ और आसपास का परिवेश कहीं अधिक तन्मयता और शालीनता के साथ इसमें अभिव्यंजित है। अमूमन कई लोग गोस्वामी जी के जीवन से परिचित हैं कि उनके जन्म के समय उनकी माता हुलसी देवी का निधन हो गया था तथा उनके पिता आत्माराम ने जल्दबाजी में उनकी कुंडली का गलत आकलन करके उन्हें त्याग दिया था। इसके पश्चात् तुलसीदास जी को अपना जीवन पार्वती नामक वृद्धा के साथ व्यतीत करना पड़ा और वह भीख माँगते थे भीख माँगना उन्हें पसंद नहीं था किंतु फिर भी वे भीख माँगते थे और एक समय के पश्चात् उस वृद्ध माँ की मृत्यु हो जाती है और तुलसीदास जी की झोपड़ी भी जला दी जाती है। शुरुआती दौर में तुलसीदास नाम उन्हें प्रदान नहीं हुआ तथा वे रामबोला कहकर जाने जाते थे। यह उपन्यास रामबोला से तुलसीदास बनने तक के सफर को भी बेहद अनूठे ढंग से चित्रित करता है।

इसके पश्चात् रामबोला एक मंदिर पहुँचते हैं और वहाँ पर भी श्रद्धालुओं के द्वारा फेंके हुए गुड़–चने आदि का भक्षण करते हैं और कई जन उन्हें जाति व कुजाति के नाम पर अपमानित भी करते हैं, तथा यह अपमान रामबोला से सहन नहीं होता और एक दिन वह यह निश्चय करते हैं कि वह जीवन में अब कभी भी भीख नहीं मांगेंगे और वे हनुमान मंदिर के चबूतरे को साफ कर वह वहाँ पर बैठते हैं और हनुमान जी से कहते हैं कि मैं प्रत्येक दिन आपका यह चबूतरा साफ कर दिया करूंगा, और बदले में आप मुझे भोजन प्रदान करना। बाल मन की ऐसी अद्भुत झलक और कहीं नहीं जोकि लेखन कौशल से निखरी है।

तत्पश्चात् रामबोला उसी मंदिर पर बाबा नरहरी से मिलते हैं, अब वह उनके अभिभावक बन जाते हैं। अभिभावक के तौर पर बाबा नरहरी यह समझते हैं कि तुलसीदास यानी रामबोला का यहाँ कुछ नहीं होने वाला और वह उसे शिक्षा दीक्षा के लिए काशी लेने जाते हैं। काशी में एक शास्त्री परिवार में रामबोला कार्य करता है तथा बड़ा होता है और शास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त करता है। समय बीतता जाता है और 20 से 24 वर्ष की उम्र में अब रामबोला, रामबोला नहीं रहता, वह काशी के प्रसिद्ध नए पंडितों में तुलसीदास शास्त्री बन जाता है।

काशी के प्रारंभिक जीवन में ही जब वे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तभी उन्होंने हनुमान चालीसा की भी रचना की यह प्रसंग कहीं अधिक आश्चर्यजनक व रुचिकर है कि बचपन में उन्होंने अपने मित्रों के साथ लगाई हुई शर्त के कारण उन्हें मध्य रात्रि में कब्रिस्तान जाना पड़ता है जहाँ वह भय के कारण हनुमान जी का नाम जपते रहते हैं और उसी रास्ते में हनुमान चालीसा की रचना करते हैं।

रामबोला से तुलसीदास शास्त्री तक की यात्रा किसी भी स्तर के पाठक के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है तथा उनके जीवन में मोहिनी नामक स्त्री का भी आगमन होता है। वह मोहिनी से प्रेम भी करने लगते हैं

पर उनके मस्तिष्क में यह भी स्पष्ट था कि ईश्वर से ज्यादा महत्वपूर्ण उनके लिए कोई नहीं, इसी कारण वह गृहस्थ नहीं होना चाहते। पर कुछ समय पश्चात् उनका विवाह रत्नावली से हो जाता है, रत्नावली भी एक विदुषी कन्या है और अब तुलसीदास को अपने इस गृहस्थ जीवन से कोई शिकायत नहीं होती और वह रत्नावली से प्रेम करने लगते हैं तथा उसे एक भी दिन के लिए अपने से दूर नहीं होने देना चाहते। यहाँ तक कि उसे अपने मायके भी नहीं जाने देना चाहते और साथ ही उनके मन में यह विचारातन भी रहता है कि मैं ईश्वर से अधिक किसी और को प्रेम नहीं कर सकता।

इसमें भी एक प्रकरण बहुत अधिक प्रसिद्ध है कि रत्नावली के विरह में तुलसीदास अर्द्ध रात्रि में तीव्र वर्षा में नदी पार करके अपनी पत्नी रत्नावली से मिलने जाते हैं, और तब रत्नावली उन्हें वास्तविक ईश्वर यानी श्रीराम के बारे में पुनः याद दिलाते तथा व्यंग्य करते हुए कहती है कि स्त्री की काम आकांक्षा पुत्र के बाद पूर्ण हो जाती है किंतु पुरुष की नहीं होती। इसके संदर्भ में एक छंद भी बहुत प्रचलित है, छंद इस प्रकार है कि–

लाज न आवत आपको दौरऊ आयहु साथ।
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को कहां कहूं में नाथ।।
अस्थि चर्म मय देह मम जासौं ऐसी प्रीति।
ऐसी तो श्रीराम मा होत ना थी भवभूति।।

इस छंद ने तुलसीदास का संपूर्ण जीवन बदल दिया और वह फिर से श्री राम की भक्ति में लग गए। इसके पश्चात् ही उन्होंने रामचरितमानस की रचना की और इसके कुछ समय पश्चात् रत्नावली पुनः तुलसीदास जी से मिलने आती हैं और उन्हें अपने साथ रहने को कहती हैं, तब तुलसीदास जी के कई मित्र शास्त्री भी उन्हें यह समझाते हैं कि इससे पहले भी मंदिर में कहीं महापंडित अपनी पत्नियों के साथ रहकर गृहस्थ जीवन तथा ईश्वर की उपासना दोनों ही किया करते थे किंतु तुलसीदास को अब पुनः यह स्वीकार नहीं होता, क्योंकि वह दो बार ऐसा कर चुके होते हैं और दोबारा इस गृहस्थ जीवन में तल्लीन होना नहीं चाहते।

अंततः रत्नावली उनसे कहती है कि हे प्रभु मेरी मृत्यु के समय मुझे दर्शन अवश्य दीजिएगा और ऐसा ही होता है, रत्नावली की मृत्यु के समय तुलसीदास जी उससे मिलते हैं और रत्नावली की मृत्यु के एक वर्ष बाद ही तुलसीदास जी की भी मृत्यु हो जाती है। यह तुलसीदास जी का अद्भुत जीवन है जो हर स्तर पर पाठक को प्रेरित करता है समकालीन इतिहास से भी परिचित कराता है और रामायण के कई वृहद प्रसंगों का भी खंडन करता है। मानस प्रेमियों को तो यह उपन्यास अनिवार्य रूप से ही पढ़ना चाहिए, किंतु यदि आप समकालीन इतिहास और एक सफल व्यक्तित्व के बारे में भी पढ़ना चाहते हैं तो यह उपन्यास आपके लिए संस्तुत है।

गोलू कुमार
बी.ए. (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

मेला और समाज

जब किसी एक स्थान पर बहुत से लोग किसी सामाजिक धार्मिक, व्यापारिक, साहित्यिक एवं अन्य कारणों से एकत्र होते हैं, तो उसे मेला कहते हैं। हमें कई प्रकार का मेला देखने को मिलता है और एक ही मेले में तरह–तरह के क्रियाकलाप भी देखने को मिलता है। मेला में विविध प्रकार की दुकानें एवं मनोरंजन के साधन होते हैं। बच्चे, बड़े, बूढ़े एवं महिलाएँ इत्यादि सभी मेले में आते हैं और मनचाही वस्तु खरीद कर घर ले जाते हैं। मेले से हमारी संस्कृति, धार्मिक एवं आर्थिक इतिहास आदि का परिचय मिलता है। मेले में सभी समुदाय के लोग आते हैं, जिससे आपसी एकता बढ़ती है। मेले में सामाजिक और धार्मिक भेदभाव भी देखने को नहीं मिलता है। सभी लोग खुशी–खुशी मेला का आनंद लेते हैं। भारत तो मेलों के लिए प्रसिद्ध है। भारत के कुछ प्रमुख मेले निम्नलिखित हैं– कुंभ मेला (प्रयागराज), सूरजकुंड मेला (हरियाणा), सोनपुर मेला, छपरा मेला इत्यादि।

कुंभ मेला हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण मेला है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुंभ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नाशिक में एकत्र होते हैं और पावन नदी में स्नान कर मेला का आनंद लेते हैं।

सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला भारत का सबसे लोकप्रिय हस्तशिल्प मेला है। पंद्रह दिनों तक चलने वाला यह मेला लोगों को ग्रामीण माहौल और ग्रामीण संस्कृति का परिचय देता है। इस मेले में हर वर्ष किसी एक राज्य को 'थीम' बनाकर उसकी कला, संस्कृति, सामाजिक परिवेश और परंपराओं को प्रदर्शित किया जाता है। यहाँ अंतरराष्ट्रीय लोग भी मेला देखने आते हैं। मेले में लगे स्टॉल हर क्षेत्र की कलाओं से परिचित कराते हैं। सार्क देशों के कलाशिल्पी भी यहाँ आते हैं।

सोनपुर मेला बिहार के सोनपुर में हर वर्ष कार्तिक पुर्णिमा (नवंबर–दिसंबर) में लगता है। यह एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। मेले को हरिहर क्षेत्र मेला के नाम से भी जाना जाता है। एक जमाने में यह मेला जंगी हाथियों का सबसे बड़ा केंद्र था। मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य से लेकर वीर कुंवर सिंह ने भी यहाँ से हाथियों की खरीद की थी।

डॉ. रामवीर
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

विवेकपूर्ण जीवन

विवेकपूर्ण जीवन जीने की कला के चार सोपान हैं–

1. उद्देश्यपूर्ण योजना
2. प्रार्थना पूर्वक तैयारी
3. सकारात्मक क्रियान्वयन
4. दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ना

विवेकपूर्ण जीवन जीने की कला का आनन्द आनन्दमयी दृष्टिकोण में निहित है। दृष्टिकोण दो प्रकार के हैं। आप विश्व को विचारपूर्ण अथवा विचारहीन दृष्टिकोण से देख सकते हैं। जब आप संसार को विचारपूर्ण (विचारमय) नजरिये से देखते हैं, तब आपको सूक्ष्म प्रदूषण की उपस्थिति से सचेत रहना चाहिए। विचार याददाश्त से आते हैं और यादें भूतकाल के अनुभवों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार वर्तमान को आप भूतकाल के स्तर से देखते हैं और इसी प्रकार प्रदूषण घटित होता है।

क्या विश्व का विचारमय दृष्टिकोण द्वारा अवलोकन प्राकृतिक नहीं है? अगर उत्तर हाँ में है, तब उच्च ज्ञान की सम्भावना नहीं बनती। सामान्यतः कह सकते हैं कि आप विचारपूर्वक देखते हैं। जो भी हो यह जीवन दर्शन का एक असामान्य तरीका है। क्या आपने शारीरिक रुप से विक्लांग लोगों की ओर ध्यान दिया है, जो जीवन में असामान्य कार्य कर रहे हैं?

आपने संसार में अनेक व्यक्तियों को देखा होगा जिन्हें शारीरिक विकलांगता के मानसिक अक्षमता पर नियंत्रण कर पाना अधिक कठिन होता है। क्योंकि यह लोगों को अप्रभावी बनाता है। ये लोग 'मैं कर सकता हूँ' की बजाय 'मैं नहीं कर सकता हूँ' से संचालित होते हैं। ये लोग प्रचुरता की बजाय अभाव के दृष्टिकोण से ग्रसित होते हैं। सम्पन्नता की चेतना के बजाय दीनता में जकड़े होते हैं।

हमें अभाव की बजाय प्रचुरता की ओर से आ रही कला को सीखना है। इसमें क्रियाशीलता आवश्यक है।

प्रभावी होने का क्या अर्थ है? प्रभावी व्यक्ति तनाव को कम करना सीख लेता है एवं खुशी प्रचुरता में वृद्धि करती है। तनाव को किस प्रकार कम किया जाए? तनाव आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार का होता है। बाह्य तनाव के अंतर्गत खाने–पीने की आदतें, प्रदूषण एवं दोषपूर्ण शयन की आदतें शामिल हैं। आंतरिक तनाव में व्यवहार, विश्वास, उपदेश एवं नकारात्मक तरीके के सिद्धांत शामिल हैं। व्यक्ति को आध्यात्मिक शैली में इस पर काबू पाने की कला सीखनी होती है। इस कार्य में ध्यान और चिंतन का सहारा उत्तम है।

जीवन में व्यक्ति वास्तव में क्या चाहते हैं? हममें से अधिकतर लोग समूह में बिना कम्पास वाले जहाज की तरह हैं। हमें जीवन में जो चाहिए वह है सफलता तथा जो कुछ प्राप्त हुआ है उसका पसंदीदा होना संतुष्टि है।

जो कुछ इच्छित है उसको प्राप्त करना तथा जो कुछ मिला है उसको पसंद करने की कला आध्यात्म के प्रयोग से सीखी जा सकती है। आवश्यक बात यह है कि हममें से अधिकतर प्रसन्नता की तलाश में हैं। अधिकतर व्यक्ति उस प्रसन्नता को भौतिक वस्तुओं में तलाशते हैं और इस तथ्य को समझने में असफल होते हैं। भौतिक संसार की चीजें हमें आराम तो दे सकती हैं परंतु प्रसन्नता नहीं दे सकती हैं। इस तथ्य की अनदेखी करने के कारण ही लोग दुःखी रहते हैं। वास्तव में आनंद स्वयं के अंदर ही निहित होता है और कला जो हमें सीखनी है वह स्वयं के अंदर व पहुँच पाने की कला है। एक बार जब हम आत्मा में ही आनन्दित होने की कला को सीख लेते हैं, तब हम इस जीवन के कहे जाने वाले चमत्कार में भागीदार हो जाते हैं।

क्या आपने सूर्योदय की सुंदरता को देखा है? हम एक मनोरम खूबसूरत दुनिया में रहते हैं परंतु फिर भी हम दुःखों के दल–दल में जीते रहते हैं। अगर हम दुःखों के तालाब से बाहर खींच लिये जाते हैं, हम स्वयं को दुःखी विचार से अलग रखना सीख लेते हैं, तो हम अनंत खुशी अपने चारों ओर ही पा सकेंगे। हम सूर्योदय एवं सूर्यास्त का हिस्सा बन सकेंगे। चलते बादलों से लेकर चमकते हुए सितारों तक की मौजूदगी में भाग ले सकेंगे और यह विश्व आनंद का उद्‌गम बन जायेगा।

"साहित्य मानव–जीवन से सीधा उत्पन्न होकर, सीधे मानव–जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवंत विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है तथा सोचा है और समझा है।"

– हजारीप्रसाद द्विवेदी

English Section

From the Editor's Desk

Uma Gupta
Associate Professor, Department of English

Learning gives creativity, Creativity leads to thinking, Thinking leads to knowledge, Knowledge makes you great.

- Dr. A.P.J. Abdul Kalam

Education is known, not only to dispel the dark clouds of ignorance but also the poverty of the heart and the mind. It not only opens up vistas of greater sensitivities and sensibilities but also nourishes our soul and our spirit. Education, with its tremendous role in nurturing knowledge base, imparting suitable skill sets and also building character in the wider value-neutral manner, has been constantly under tremendous restructuring and innovation. As a method of value-addition, education is now seen as an important parameter of any sustainable model of social formations the world over. The famous knowledge economies of the world are built on extremely robust systems of engagement with learners at all levels.

The institutions of higher learning or tertiary sector are precisely those temples of knowledge which seek to nurture these capacities to think creatively and innovate compassionately. India, with its diversities of language, culture, region, religion, ethnicities, very predictably needs a nuanced, layered and differentiated approach to the education issue. Any nation, of the size and magnitude of India, is bound to have unequivocally unique policy imperatives especially in the field of education. Inclusive, equitable, ease of access and affordability are some of the legitimate expectations and aspirations from any such policy document. The National Education Policy, 2020, stipulates a roadmap for India in the field of education for coming times. National Education Policy 2020 does seek to bring in paradigmatic changes in our world of education in terms of structures as well as content. It seeks to create holistic roadmap for the legitimate expectations and aspirations of a diverse population on the question of education in India.

Living in a world that's changing at neck breaking speed truly brings enormous responsibility and poses new challenges for our institutions, our delivery mechanisms and also our human and non-human knowledge assets. With the whopping population of roughly 8 billion people in the world, cataclysmic changes in our earth environment due to our problematic development models,

advancements in the fields of information technology impacting other fields such as biotechnology, challenges of artificial intelligence and our forever enhancing capacities for self-destruction, humanity is indeed poised precariously on the proverbial edge. For our young people getting ready to take on this world, these challenges naturally translate into real questions of knowledge systems, methodologies of knowledge acquisition and related material considerations.

We, as civilisational ethos, have always revered the 'Guru' and though 'the one who imparts knowledge' may use newer methods to cultivate, guide, mentor us, will never be redundant. A classroom today is a fluid entity more than ever before. To prepare institutions that disseminate knowledge that helps prepare our students for their future varied roles and sculpt an all rounded personality that can match the technical skills of an automated robot, be a decision maker and find creative solutions to the problems of the world and stay grounded in strong ethical principles and compassionate view of fellow beings would indeed be enviable goals.

Our students today strike balance between all these aspirational aspects and remain motivated, committed to being innovators and remain empathic thinkers. The present volume is one effort to create those spaces for engagement where our students reflect, cogitate, wonder and express the churning in their consciousness. One gets glimpses into awareness of these responsibilities and courage of commitment in their creative expressions in this anthology of prose, poetry and institutional engagements. There are myriad hues of courage, commitment and empathy in the writings in this edition of English section of Ankur magazine. We witness the strong voice of women empowerment alongside verbalisation of ecological consciousness, moments of wanderlust alongside voyages through the printed pages, diplomatic angst along with the wonder at baby steps. I wish to thank my team of committed faculty advisors Dr. Reshma Tabassum, Dr. Pritika Nehra, student editors Srijony Das and Preeti Deepa Dash, and student subeditor Sanskriti who have made the current edition possible. I hope the readers will find the pieces enjoyable. I wish them happy reading.

Dr. Uma Gupta

Prerna
B.A. (Hons), Economics I Year

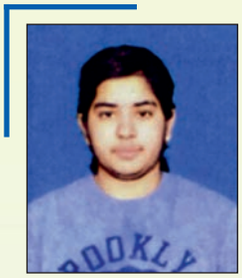

Palak Soni
B.A. (Hons),English, III Year

Patriotism

Flourishing over the East and the West,
A country represents its honour among the rest.
Plumes of victorious aura kindle the fire
Striving for peace and vital health: the only design a country desires.

Blots of blood, marks of their sacrifice,
Each wilted-smile dwindles with a new peaceful night,
Bouncing on the colours, hail of patriotism earns the victory,
And patriots again sing “Jai Hind “ in their memory.

Every sunset ceases stabbing down the beast
Motherland is waiting for another knock, at least.
Boundless with the sprinkles of blood
Shall the patriot be well with a scattered breath?

The pages of history are filled with patriots gore
A blank page holds their title honourably
Against death and wars, they stand audaciously
For the peace of all ages, they return wrapped in tricolour’s spark.

“Where liberty dwells, there is my country.”

- Benjamin Franklin

Why to Feel Low

Don’t worry! You are beautiful.
Don’t worry! You aren’t a fool.
Let others call you ugly,
But tell your ears to let those words flee.

Don’t worry the black spot, it suits you,
Don’t worry the black skin, it suits you,
Don’t buy those skin-whitening products,
Your shade scale doesn’t define you.

It doesn’t matter if you have short hands
You won’t get help from other hands.
Why do you worry about your thick lips?
To make them thin, don’t use any tips.

Though overweight, call yourself beautiful,
Don’t worry, you are still blissful,
Being beautiful at heart is important
So that others start calling you lucent.

Today, everyone admires the beauty of the face
For beauty today is a rat race.
Let others call you ugly,
But tell your ears to let those words flee.

Be like the patient coal,
If you don’t want to achieve your beauty goals.
Don’t worry!
You are, and will be beautiful, and that is the Truth.

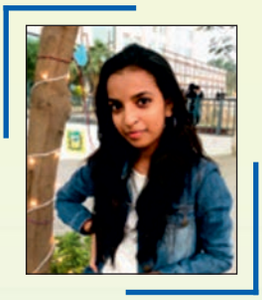

Aarzoo Agarwal
B.A. (Hons),English, III Year

To Be or Not to Be

‘To Be or Not to Be’ is the question Shakespeare wrote years back
Today, I asked myself, ‘To do or not to do?’.

To swim across the ocean and drench myself in the thirst for knowing what lies ahead
Or just sit and live an ignorant life.

To jump from the aeroplane and understand how it feels to let go,
Or simply hold the bucket of guilt till my hands turn yellow.

To wear my heart on the sleeve and be vulnerable, to know what love is,
Or just let it be tied with a tape and know what hate is.

To soak in the sun and let the skin breathe,
Or just let my fingers obstruct the light and wait for years to uncover the light.

To keep chasing the one who isn’t walking towards me, to be conditional in every way,
Or just face one more piece of my jigsaw heart.

To keep gazing at the moon and its spots, to realise that it is okay to have flaws,
Or just never know that imperfections also deserve applause.

To speak of love and consider it not for sale,
Or just let my lips turn pale.

To be a dreamer, believer, achiever,
Or to be in the enigmatic utopia of inertia.

To take a step forward and know that,
Or take a step backwards and escape.

A Woman by Choice

I am a woman,
And I have a choice.

I carry my grandmother's silence,
From all the spices in the kitchen to the earthen pots,
Strangers looking at me, staring at me as if I am helpless, I carry it all…

My mother's too,
Yes, the bags of oppression…
She was brave enough to scream but not loud enough to be heard.
From the wounds on my back to the mental abuse.
But I am afraid, I don't want to pass these heavy trunks to my daughters or sisters,
My burned feet walked the road of violence and so much more…

I want to break the shackles the society forced on me.
I want them to know what consent is.
My heart is tired of the weight of this dupatta,
I want to make it fly
It seems easy, you know…

All I look for in this world is egalitarianism
Is it too much to ask for?
Why do I even have to ask?
I carry the past, present and the future
I choose to speak up because
I don't know if I can stay quiet anymore…

Don't tell me that histories are permanent and difficult to erase.
I know that I have lived through it.
Let us open our eyes and our hearts.
Enough! I am done now.
Bravely and loudly change is coming.
I know, you know, let's tell them…

"Each time a woman stands up for herself, without knowing it possibly, without claiming it, she stands up for all women."

— Maya Angelou

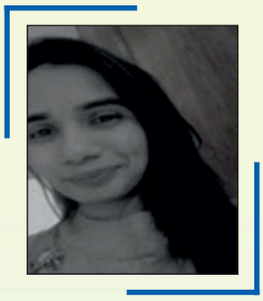

Nitishika Pandey
B.Com (Hons), II Year

Desperation

Desperation hangs in the air like a rope around the neck
The water streams are drowning under the weight of the red, we try to wash it off,
But no matter how hard the world tries,
Bloodshed seeps into their lives like filth in water bodies.
We are throwing blame around like a ball in the backyard of the vacation homes.
While families struggle under the crushing agony of unsaid goodbyes.

We're not them and they're not us,
But together we did this.
To them, to us and to everyone,
To a child who waits for his parent's return,
To a transfer-student who wanted some gain,
To a corporate worker who desires to live peacefully.

The books of history, forever scarred by our mistakes
While the voices in our heads, singing praises to the 'devil'.
Ancient grudges, crippling the nation's futures and
We are so spellbound by the illusion of winning.
We don't realise there's no winner,
Only a survivor.

Guilt is our biggest opponent in this boxing match.
And in this tug of war,
The oppressor can become oppressed with just a few pushes
Tears melting down with the ink stains of letters undelivered,
Crematoriums echo prayers of hope and goodbye.
With a single fenced wire separating us
We drew a line in the sand.

Content to blow them up like a house of cards because
they happen to be on the other side
Warfare is a cruel master who asks for peace.
It throws you into a cage of violence, agony and loss
You think your nemesis is the one in front of you
But what if I told you,
It resides in the darkest recesses of your mind like a rich tenant
And you're the poor landlord.

Strategies and survival; sorrow and scars; sugar-coated lies,
Until nations are a distant echo of what they had been
Weariness sticks to your soul like ashes in fingernails
While hope hops on a long lost train to nowhere
Chaos becomes your closest confidante and every moment is spent
Wondering what's next.

Desperation hangs like a rope around the neck
Desperation hangs like a rope around the neck
Desperation hangs like…
But compassion never allowed any ceiling fans.

To create this orange that shines brighter than life.
The journey was hell, but together it might bring us to heaven
Breaking the ancient spells, taking an axe to fenced wires
We're burying the corpses of ancient grudges, sitting by a bonfire
Telling tales of our new friendship
The memories play on flashback in the reel of our mind
But the prospect of peace short circuits the reel player.

You're me and I'm you.
Together we shall build a new home
Shrieks and peals of laughter, stories of hope
Sunny mornings with warmth in our souls,
We will become what we could never be alone
We mix the red with the yellow in the colour palette of life.

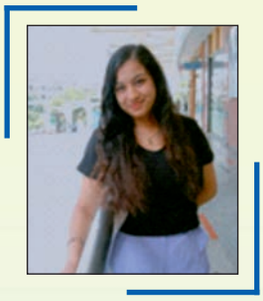

Sanskriti
B.A. (Hons), English, I Year

The Greatest Hits: To All the Lost and Forgotten Friendships

I could be singing about the glory of all the parts and roles we once played in each other's stories.
About my heart and all about pain, I have written it all, somewhere on a piece of pulp, just to keep me sane.
I wonder and wonder how we might have been the 'Greatest Hits' ever and what could have happened if we tried to mean the 'Never Leave Me Ever'.
I will pretend and make myself at peace for I have the letters torn apart, fixed like a puzzle piece.
The bleak night bleeding in the shades of blue, you look so dull, yes, I have been missing my sun.
It can rain and hail but I wouldn't bother, I can wait but it is no fun when the egos stand taller.
I have lost a lot in a little time, and pardon me if I accept that I found it all again
the moment I met those eyes
I am sorry for all the songs and ballads and for the poems and rhymes, because when you lose a friend, the hearts keep tumbling and even the clear clouds seems rumbling.
It couldn't have been easier for us because I wanted the stars and you were already in the sun, made of the same soul but having a different home.
Nostalgia, tell cupid that your pangs of memories pain more than his arrows, and blame him because this pain could have been avoided.
Yes, I know that our souls miss the ecstasy, the excuses and the escape we found in our platonic state
And for a moment, I will also close my eyes to relive the laughter, the love and the life that we shared.
For a moment, you also forget the anger, the agony and the anguish just to smile again.
For a moment of love and mourning, the loss of a friend, don't stand so far if I ever catch your eye.
Smile, if that is all left and we are deprived of words for only we know the secrets we hold and let it be our little rendezvous.
Remember me once, before you burn the letters down for I will be there holding mine collecting the ashes of the 'Greatest Hits'.

Season of Spring

I think I remembered every tiny, complicated bit of this story.
Oh, you all, so confused with the thorns and tales of old forgotten folklore's glory.
A part of me falls in love every day, like a leaf falling in autumn's shine.
Another part of me was fragile and swelled with love, secretly resting in the heart of mine.
The trees don't grow in deserts and droughts.
Look at all the sad faces and complicated mazes that misery brought.
Am I enough? Or am I not?
Does everything on the table look as promising as my left hand's ring?
Does life run on hamster's loops and can't I escape whatever life brings?
At last, I knew my answer, I knew my words right.
One day, a bad witch told me that the future might be bright.
The seasons change, the solar cycle returns,
And after all who we are, just people waiting for the season of spring.
You don't know about all the love, light and happiness you bring in this world.
You are a tiny part of so many stars that blink away, disguising themselves in constellations.
We are in a drought still and might be forever, but the flower flourishes and it feels like we are in the season of spring.

Supriya
B.Sc. (Mathematical Sciences), II Year

If We Ever Fall in Love, Let's Never Fall in Love!

If we ever fall in love, let's never fall in love!
Because it tends to ruin the beauty of a precious relationship.
Let's never fall in love!
Because love is a prison of happiness that seems to be colourful,
But will give you the darkest and most painful memories of life.
Let's never fall in love!
Because love is a thread that not only ties us to our lover,
But binds us to not fly in the sky.
Let's never fall in love!
Because in the desert of true love is a pond full of water,
It is beautiful but it's a mirage: a lie.
Let's never fall in love!
Because love gradually becomes the last leaf of the tree of our happiness.
Not just the only reason, but also the last proof of that tree's survival.
So, let's never fall in love!

If you ever truly loved me,
I will wait for you on the edge of life.
To love you the way I intended to,
To love you the way I wanted to,
To love you the way you deserved to,
I will love you not to be bound to you,
But to be myself.
To fly together with the wings of love in the sky of our dreams.
I will love you passionately, endlessly, limitlessly.
But till then if we ever fall in love with each other,
Let's part our ways and never fall in love again!

Shivani
B.A. (Hons.), Hindi, III Year

College Life

24th July, 2019…
I still remember the date,
When I entered the college through its big iron gate.
My eyes looked around various new faces,
Differently dressed, some with glasses, some with braces
Holding out my hand,
I reached for friendship
With lots of girls,
Still holding tight that grip
Interaction with teachers,
Curiosity to meet seniors,
We the *fuchas*, better called first-years,
Freshers' Party, college elections and finally serious study.
'Semester system *hai bacchon,*'
Teachers said this everyday.
First semester ended,
Exams at Nehru Nagar, the college premise,
With JP tea stall, *Bhelpuri wala bhaiya,*
And that famous *banta* all around us,
With cultural fests engulfing the dancers,
The fashion shows as well as rock dance
And all this in major DU fests.
Oh! So grand!
It's labs, seminar rooms, GCR
None could accommodate as many as the AVR.
Finally, first year *khallas*
And made our entry to second year,
Leaving the space for our juniors so,
Jhakaas
We were getting ready to bid farewell to our seniors
Loads and loads of work and stress,
On how to make the farewell memorable
Those performances and titles made incomparable
'Adieu' to the second year,
Because now we are the super seniors.
Being seniors of the college gives us a great pleasure
Quite experienced we are,
On how to head our freshers'
So, girls enjoy as much as you can,
'Coz once the time is gone, will never come again.
You'll miss your friends and these memories innumerable
Cheers to you first meeting at PGDAV College
That has today made us - inseparable.

Jyotsana
B.A. (Programme), II Year

My Desire

When morning comes, I am stronger
With new ideas and hopes.
And at night, I am weaker
Thinking futures, next scopes.
I argue for what I need
I go to plant my future seed
With kind and cold feet.

I can rise again from the dust
I will run till my last breath
I know I have to work hard and sacrifice.
I know, I know
I will reach my goal with
Some compromises and artwork.

God, I feel you punish me sometimes
With some achievements, I feel
You nourish me sometimes
With you, I feel blessed,
With you, I heal from stress.

Destiny

I cry alone or I cry in the rain,
Because it hides my pain.
There is nobody who cares about me,
Even those who are my main.
I don't get love from anyone
This world makes me insane.
I want to go somewhere far
There is no one to whom I can complain.
Maybe, God has written nobody in my destiny!

He just assigned the desolation and pain
People are selfish here
I love with my heart, and they use their brains.
And I break again and again.

Some people are special to me,
But even for them I am vain,
They only talk to me when they are bored
Just for their entertainment.
The world says time heals the wounds,
But some wounds leave a stain.

"All men want, not something to do with, but something to do, or rather something to be."

- Henry David Thoreau, *Walden*

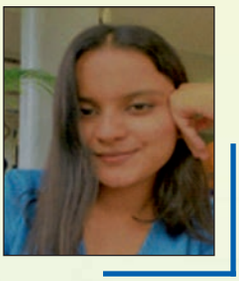

Divanshi Aggarwal
B.A. (Hons.), English, II Year

I Wish I Were the Moon

I wish I were the moon!
I wish I were the moon!
Floating in the darkness
Like an incandescent balloon.

I wish I were the moon,
Dwelling at some sublime yonder place
Here I could find some tranquil air space
For I wish I were the moon!

I wish I were the moon,
For I would beckon the earthly gaze
With all my benevolence,
To help soothe the evil betrayal.

I wish I were the moon,
Swaying the ocean tides
Rising and diminishing
Persuading the lovers,
To make love at the seaside.

I wish I were the moon,
Glistening in the twilight
Peeking from the skylight.
I wish I were the moon!

Vartika Singh
B.A. (Hons.),English, I Year

Futile Hopes

Surrounded by the dense December fog
Between the hinged and the unhinged,
Once upon a time,
I went to deep slumber behind the curtains
Waking up in the midst of chaos-
Only to find myself all on my own.

Wishing my head wasn't paining
Wishing it was a little warmer
After I had decided to go behind the veil
As I tried clearing the haze inside my head
As I gazed at the moon, with the curtains intact on
the windows of my room
it seemed futile to find peace with the late
December moon.

It did nothing to calm my anxious fumes
Perplexed with what had gone wrong
with the heart that was once full of spring blossom
annoyed for not remembering well
When did I put the curtains on?
Not to open them ever again,
But maybe I remembered March all too well
Maybe it wasn't possible to forget the flowers
which smelled of life.

To forget the clouds which flew carelessly
Giving the hopes of staying together
Was maybe not possible for me to forget in this

life,
But now I wish I hadn't forgotten April
That the flowers which smelled of life were meant to be withered
That the clouds that were so careless and playful
And were destined to meet their end in the dead sea.

Now I realise what the old couple meant
When they sat by the park in July end
When they said, 'We aren't meant to blossom forever, one of us will have to leave at the end'.
As I remembered the shedding of once green leaves
It reminded me of my own tears I shed in October sitting behind the oak tree
How the sound of the yellow leaves being crushed to death by random footsteps
Made a painful moan escape my lips
It was when I remembered it all.

In the midst of the December fog
It wasn't October that made me put my curtains on
It was March after all
That gave me futile hopes.

Hemant Choudhary
B.A. (Hons.), Political Science, I Year

What Makes Us Who We Are?

What makes us who we are?
From the burst of a star, between every battle that gave a scar
We have come too far
Since the birth of the sun to every soldier who held a gun
Every creature on this planet who made a run
From discovering every diamond that shines
From the fall of us to mine
We have come too far in the discovery of who we are!

"Always desire to learn something useful."

- Sophocles

"May your choices reflect your hopes, not your fears."

- Nelson Mandela

Drishti Verma
B.A. (Hons.), History, III Year

To My First Rented Home

I turned five years old today. The five-plus one flower bracelets hang on you
With the hope that I will turn six years old with you.
Home! Do you know that I will be able to walk down the stairs
Without holding onto anyone when I turn six?
Home! I have decided I will walk to the ground floor
I will reach the post-office that also calls you home
I will take the biggest envelope and put your pictures as the stamp.
Home! I will put your address because when I turn six, the teacher will teach me to write spellings.

I turned nineteen-year old today.
The five-plus-one bracelets didn't work
I turned six, but without you.
The teacher told me that you are abiotic
I refused to believe her; I tried to talk to your bricks
I never stopped believing in you.

The day I stopped believing in you
The day the landlord threw my bags in your backyard.
The day the adults had a spat.
The day they broke my *gullak* and took away the coins I saved to write you a letter.

I realised that day that you were abiotic.
You were all bricks who adorned my flowers so that the landlord could call you well-kept.
Home! you can never be home until I buy you with coins
I don't have what it requires to call you home, but I certainly can write you a letter
I will call you home for the last time; I will send a rupee coin;
I will thank you for keeping five years of my dance and songs in your marble tiles
I will say goodbye home! sleep tight, don't let the bed bugs bite.
Home! Will you become Home again?

Yashi Srea
B.A. (Hons.), English, III Year

Shades

If I had to come up with a synonym for this planet,
It would be ‘shades’ most likely,
For someone who laughed with you last night,
Has probably slept sobbing near the windows today,
Someone who was broken the night before,
Cracks up hard, to conceal his sorrow today
Understand when they tell you they are vulnerable,
The ambiguity is hidden,
Because ‘vulnerable’ is variable.
Some laugh, live, fall, fail, cry and care,
Probably they have no one to share,
So no wonder if it repeats,
Because mankind is nothing but a carcass of falsehoods
With stories buried in the crypts of the past that could not be seen or heard
Isn’t it terrifying?
What’s the truth then?
Blues, oranges, purples or greens?
Will it be feasible to even count?
When the only truth is-
The ‘shades’ are unseen.

Sweety Marim
B.A. (Programme), II Year

My Murk Twin Devour Me

My inner beast, my murk twin,
No Heaven Embrace you.
Wings of the tragic Crimson Moon,
Stared into the darkness too long,
So long that Thou had forgotten how to look away from it.
Being convinced that the only place
Justice actually exist is within the depth of the darkness.
Howl of nasty trauma,
That once stood as love.
Acquired a diabolical form,
Snake of my own vicious thoughts.
To come upon Hyenas in the woods
Consume me whenever Thou take a step,
To climb the ladder of Thou life.

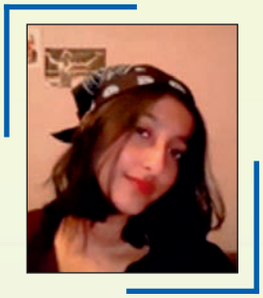

Sanjana Suman
B.A.(Programme), I Year

Slam Poetry by Rape Survivor

Hey Society, not so dear Society,
I am back!
Missed me? I know you didn't.
Forgot me? I won't let you!

I'm just a normal girl, gone through some heartbreaking and soul-wrenching phases,
These days, I'm feeling strange.
I'm not able to accept myself.
I want to talk to people about the landscapes I traverse
The nightmares which do not allow me to sleep
My insecurities, my fears,
But what makes me stop is You.

I'm not blaming you, but I'm begging you!
Sometimes, I don't feel like going outside or talking to people
Or to even trust
I have stopped myself from loving someone
Because I'm scared of betrayal.

My letters are to remind, I still exist,
Yes, I still exist, even after you ate my whole body like a Beast,
I still exist
But you know what-
How difficult is it to trust people now?
How difficult is it to travel alone?
How difficult is it to get stuck in an elevator full of men?
How difficult is it to suppress all those feelings in my tiny heart?
How difficult is it to Live and Breathe?

Talking to people is a big deal
Going out at night is haunting, holding someone's hand is terrible
Eating is just a ritual, sleeping is a nightmare
I close my eyes and flashbacks appear
The six-feet man removed my soul from my fragile body.

I suffered and I am still suffering which makes me stronger day by day,
But making me weaker night after night
Where all I can see is his shadows, his evil laugh, and his painful touches
I wake up with a jolt,
But still, tie my hair up and wear a smile everyday.

Here I'm, standing tall with eyes full of confidence
But on shaky legs.
Do you think I was the victim?
No! I am a warrior and have the courage to face life
I'll come again and knock on the door.
Humans! I am a warrior not a whore
Do let me in…
I still have a lot of pain
Woven in words and left unsaid.

Trisha Pandey
B.A. (Hons.),English, II Year

New Year Gifted Me a Black Sheep

Today there is hope in the air
I woke up quite early which is unusual for winter
mornings that are quite cold and
afternoons too old with whispers of grandma's tales,
I can't find my dancing shoes anywhere
But it's alright!
For hope always gets me a new pair
They say it's a new year but our hearts have been
the same even if rusted
You know it!
It's time to hang in a new calendar and try to live by
the resolutions we made for another
year
But it's a distant dream now.
You know it.
I touch it and feel alive but the light is long gone.
Where are the fireflies of my dreams?
Do I have to dance this new year?
If not, I would like to be the black sheep instead,
And go down the road Robert Frost took
Maybe I will find answers to the questions that haunt
me like my imaginary little ghost friend.

Always standing beside my bed while I inevitably
hide in the comfort of my blanket
Hope, I hope you haven't forgotten my shoes
because I may dance like no one's watching
Even though everyone will be and I'll probably go
viral and some of my worst fears will come true.
Sometimes when I touch you, you turn to stone
And I wake up in a frenzy but lie still in my bed
Stare at the ceiling that holds the fan but never
moves
Why doesn't it move
Hope, I know it's cold but I like cold
It's been four days and I'm already down with fever
Along with my twin sisters: fear and loneliness
All three of us share a big blue blanket and I'm stuck
in the middle like always.

Although I won't lie, I quite like it
It's easy to slip into things that isolate you from
happiness
But you're not walking on eggshells; you live inside
one
With a broken fan that broke my dear hope and
that's why I stopped believing in soulmates
We were never meant to be.

Life is real and nothing without hope, I know
This is a two-way street and we'll crash even without
a car
Now that is the ultimate truth I know
I'm doing my best I think…
Inevitably hiding in the comfort of my blanket,
But tell me Hope, where are you heading this new
year?

Vrinda
B.A. (Hons.), English, III Year

Mother Athene

Everywhere I went
I either saw half-burnt faces
Broken limbs,
Or cries of war –
Where women beat their chests
Looking for their child
Probably dead.

A man somewhere limps
His mouth is parched
And he tries to drink water
Out of a broken pitcher
He cannot see
For blood runs out of his left eye.

Children hide under their beds
'Mama', one of them whispers
'When will this end?
The mother shushes the child
With tears rolling down her eyes
She cannot speak
She only cries.

A soldier who couldn't
Fire because he knew this fight
Was futile and that war
Couldn't bring any good
To him or to the world.

He sat aloof a little farther away
From the tank
Remembering his Afghani friend
Who died recently in the massacre
Brought by Taliban

I write these verses today
And all that comes out of my mouth is –
'The horror, the horror'
Athene, the goddess of war
Are you delighted by the gruesomeness around you?
How can your heart be made of stone?
How can you tolerate a man fighting unjustly?
A psychopath
Trying to put humanity to an end.

Mother, can't you hear the war cry,
Or is this what you really wanted?
To see the bloodshed
To experience destruction and decay
Whatever it may be
Make it stop
I repeat this to myself once again
Before I go to bed –
'The horror…the horror'.

Hritika Lamba
B.A. (Hons.),English, III Year

Adieu

He came to pick me up from school, bought me chocolates
And himself, a pack of cigarettes
He asked me not to tell anyone he smoked again.
I was quiet. Why risk chocolates for a complaint?
A routine then, I ate, he smoked, on the way back from school
I was small, ignorant- ignorant of what smoke could do.
Just knew that *dadi* would scold him
He got sick, sick again. 'What is it ?' I asked. 'His lungs are not working anymore' told mom.

He got hospitalised.
On my visit, he asked me to get my picture framed on the hospital room wall
'It's so boring without you, child,' he said.
'You're not going to stay here forever, *dadaji*,' I replied.
A big oxygen cylinder, his face masked, the sight terrifying others was amusing me.
'You got a cylinder full of smoke, *dadaji*,
But why *dadi* doesn't scold you now?'
A hazy, faint smile was all I could see under his gassy oxygen mask.

'Why doesn't he remove that mask? It's so gassy, I cannot see him under it.
'He can't breathe without it,' mom explained.
A shocker, it was. I knew if one does not breathe, one dies.
But what is death?
No one I knew died before. Why should he die?

The next day upon my visit he was without the mask. 'Are you fine, *dadaji*?'
'It's the time, *beta*' he declared.

Time to be fine, time to go home, I misinterpreted.
'Wear the mask', mom and *dadi* pleaded. He was reluctant.
We all were with him except papa. He wished to see papa.
'Call him, now I cannot wait, it's the time.'
Papa came, held his hands, and asked him to wear his mask. 'It's the time' he said, 'No use Now'
Looking at me he asked 'Did you eat?'
My 'yes' was perhaps the last word that fell into his ears.

His tongue rolled out, eyes wide open, hands went blue and then his whole body, blue.
I strolled near him, 'wake up, I yelled. I touched him, he was cold.
'He's gone,' said the doctor.
'Where? Where? Where has he gone? No one replied.

Everyone was crying.
'Why are you crying? He'd wake up.'
I began chanting the name of every god I knew. In T.V serials I had seen, it brings the gone
back to life.
I found myself in tears, it was gloomy, the sight of his blue body now appeared blurry to my
balling out eyes
And then I heard the whispers say, the bitter, yet inevitable:
'Adieu'.

Sanskriti Negi
B.A. (Hons.), English, I Year

Sun Dial

Inspired by the First Picture of the Red Cabin

My journey started when I was born. The day I took my first breath, so special and yet never acknowledged like our last breath. From all the firsts that I have experienced, I always wondered where the time went? Where did I lose it, or how I never acknowledged the big sundial revolving over my head? Time never stays the same and it is brutal. It is never-ending and unstoppable. One day I realised in the warm embrace of the first sunray of the morning that time is slipping by and one day I'll be old if I continue to live. I felt like I had to do something about it and off I was on another journey called 'Race of Life'.

Before I knew the journey I had embarked on, I was already in the middle of it. Was I winning? Was I losing? Was I second in my own race? Was I running the wrong race? Oh, mercy my god! I didn't know what I was doing. That day I broke down, it was the New Year's eve, I understood that time was like sand slipping through my fingers. I had to just live it. Then, I decided to cover myself with blankets of illusion, not imagination, because illusions are deceiving and imaginations inspire. I thought of myself in heaven, swinging in a rocking chair, like a mother rocking her little one. It is a whole circle of life that swings by, but it was an illusion of time. Another journey began that very moment, where I wasn't running in a race, nor was I chasing heaven.

Acceptance is another journey and it's chaos and you know it too, but it is also calming when you are looking at the trees and remembering the last time you were here: happy times, sad times, 'could have been worse' times, 'I wish I didn't do it' times, 'I think I should have done it' times, failing times, romantic times, lonely times, crying times and laughing times. All the days and moments come rushing back in front of my eyes in the form of love and the crisp air that takes me back in those times. Nostalgia, euphoria and other emotions that I never thought would be the reason for my smile one day. Yes, I do remember all the tiny details of this thousand-piece puzzle and I might have memorised all the words to Shakespeare's 184 love sonnets. Between all of this, I found myself with the last sunset. I thought about the last tea I would drink in a cabin far away from chaos, waiting for time to slip by so that I could take my last breath and say goodbye.

A Calendar Betrayal

Today when I woke up, it was early. Eos was still a tick away from arriving and Selene had her arms lightly embraced around the sky. This is what they call the Blue Hour and it feels completing. The simplicity which is abstract in nature touched me softly. It was indeed chilly, but for the very first time in years, my heart was warm. It felt like it was a new day. For the past two years, days went down, but the calendar remained the same. The numbers might have changed but the year somehow replicated the last one.

Today when I woke up, I saw that my calendar betrayed me. It betrayed me by tricking me into thinking that I'm on a loop. I completely lost the sense of time in my own misery. I washed my face, trying hard to wash away the betrayal of time. *'Et Tu Brute'* I kept saying in my heart, but I knew that was just blaming. Healing is selfish. Love is a violent act. Both of them only require you to surrender and give in and pour in a part of yourself that was guarded. But the day when you wake up in the embrace of Selene, it is not a new day, but a whole new life. You realise you have healed and you love yourself. But still, you feel betrayed, because the calendar never stopped turning.

You look in the mirror and see it reflecting two of you- one who you are and one who you should have been. You have been betrayed not by time but yourself. The guilt of missing out is heavy enough for a heart, but you still turn around and turn the calendar. This time you have control over it. In the paleness of the night, you find a part of yourself. Darkness is threatened by light. You let go, release and connect with your own self. Healing is beautiful. And in the end, Selene kisses the sky and leaves it for the Eos to come over and bring his pervasive light.

Freedom of Women

'Freedom is my birth right and I shall have it', an influential quote by Bal Gangadhar Tilak in the context of the freedom struggle might refer to different interpretations of freedom. For some, it is the freedom to express their opinion; for some, it is to practice their religion; for some, it is leading a life according to their own choices, and many more. Living in the modern era, we believe that all of us are free; however, almost half of the population is still deprived of freedom.

This year we are celebrating the 75th anniversary of freedom of India. We use the slogan Azadi ka Amrit Mahotsav to mark the occasion. Thousands of brave hearts died for the independence of our country, where they envisaged all of us will have complete freedom. The Constituent Assembly of India decided to make freedom a major part of our Constitution. Right to Freedom is included under Article 19-22 in the Constitution of India. But, some did get freedom after independence, some are still struggling for it even now. For the countless women of this nation, freedom has always remained a part of law and never became a part of life.

We see many commercial advertisements, where a man is shown to tell his *fiancée* that he will allow her to work after marriage. The question is why does she need his permission? Isn't it obvious that she has got the right to do whatever she wants? The perils of having survived for so long under a patriarchal society, the idea of freedom simply becomes hollow for most women. It is as if they would perpetually require permission for every action, first from their father, then from husband, and even from their son.

As the national census bears testimony, the literacy rate of females in India is a stooping low. There are clear indications that they are not educated and this deprives them of many choices in life. The scenario of urban India is not very different either.

Women are also subjected to physical abuse and incidents of domestic violence are reported every year. Even when a woman is in an abusive marriage, she is forced by her parents and relatives to stay silent and continue to stay passive for the fear of being rejected from the good books of the society. Furthermore, the problem of child-marriage is quite rampant and according to UNICEF, each year at least 1.5 million girls under 18 years of age get married in India, making it the largest number of child brides in the world. Unfortunately, these happen to be the instances where young women lose freedom before they could understand its meaning.

Women have been told since childhood that doing household work is strictly their responsibility. Why is the responsibility put on them as they surely are not the only member in their respective household? Women are not allowed to worship or go to temple during menstruation, even though it is this phenomenon which gives them the capacity to bring in new life.

Though in recent years the understanding of the expression of freedom for women has changed a lot, there is still a huge gap between preaching and practicing. Governments make the laws, bureaucrats implement them, but it is the society which is reluctant to follow them wholeheartedly. Change is the key and nothing will be possible until it seeps in the remotest corners of the society. Change will take place only when women raise their voice and fight for their freedom. Indian Freedom was achieved after years of struggle. Women too will get their freedom through consistent efforts. As a supportive society, there is a need to give due consideration to the needs of women, respect their freedom, and count them as not the second sex but fellow citizens.

Chandrima Seal
B.Sc. (Hons), Statistics, I Year

Parenting

'I really need some space', 'You need not get so obsessed with me', 'I don't need you' are some phrases often heard in a *cliché* rom-com movie. I vividly recall my fourteen year old self yelling at my parents in my thoughts as they frequented my room, about every two minutes.

'The thing about parenting rules is that there aren't any. That's what makes it more difficult'.

This powerful quote by Ewan McGregor has been a convenient explanation in the guidebook about raising children for many parents as they console themselves after an angry outburst with their kids. How is such a complex theory supposed to be applied in the context of an already confused teenager? Not to forget, a child of that age remains at the peak of hormonal turbulence. Adding to that, the apparent influence of the outside world, academic tensions, future fears, insecurities and the list goes on. On top of that, an insensitive comment or the over-obsessed attitude of the parents simply exhausts us. Hence, snapping back at them sounds justified, doesn't it?

Life isn't always at its best. Indeed, some feel intensely through the situations, some numb them down. The hormonal turbulence or just being in a particular phase in life does not license our conduct, especially rude responses. Through the course of life, we get so occupied with ourselves, our ambitions, and the apparent future uncertainty that we forget to address that our parents are growing up with us as well. Parents might not visibly express it, but behind those angry, disappointed faces is nothing but their desire for us to excel even better. This again does not justify the fact that motivation is not required for parenting. Many guardians are unable to address their true intent and their techniques. Their opinions might appear outdated and unnecessary. Nevertheless, to completely disregard them is probably not a mature step towards betterment. The slightest rude behaviour while losing control over emotions on the part of the child might seem trivial, but such rude practices actually have unsettling effects on the parents. It breaks them down, at moments, it makes them cry too, and being the reason for someone's distress, especially that of our parents, is disheartening.

Rude responses uttered nonchalantly might have negligible impact on the parent, but the guilt, the culpability post our actions are too heavy to immunize. Repentance for the same might not be fruitful as it just might make it hard to evolve as a normal person. We are bound to lose temper as we are not flawless human beings. However, small steps towards creating the bond with parents matter. The generation gap will have obvious differences, but instead of getting offended by the distinctions, we must move towards them in small steps. The small sweet gestures by sitting with them, initiating healthy conversation, helping them, embracing and learning from each other sounds more meaningful, doesn't it?

Navya Tyagi
B.A. (Hons.), English, II Year

Dragon in the Neighbourhood

'Politics is war without blood, while war is politics with blood.', says Mao Zedong, the founding father of the People's Republic of China. By carrying his legacy of a 'dictatorial communist' China, Xi Jinping, the President of China, puts his best foot forward in making his regime a superpower with a GDP of over US$17.7 trillion.

Despite being a superpower, China doesn't have an image of a reliable ally, especially in the eyes of the West. Just like a wolf in a sheep's skin, China's foreign policy tries to entrap countries in its notorious 'debt trap' which has made many countries financial slaves of the Chinese. China is trying to gain influence across the globe not by their human and cultural values, but by their financial, industrial and military dominance over others. China is trying to influence the neighbours of India as well. Thus, China has become an ultimate rival for India. The recent years have witnessed India's growing importance on the geopolitical front - be it Nehru, Gujral, Manmohan Singh or Modi - the strategy of an independent foreign policy has led India again to the path of 'Vishwaguru' - the teacher to the world.

Pakistan, with whom India is always at loggerheads, is slowly moving towards a period of a big political and economic uncertainty. Beijing sold the dream of CPEC to Sharif and Pakistan become a natural ally. Pakistan's political crisis has fueled some hopes of a pro-West government, but the scale of Chinese investment will never leave its influence, whatsoever. Also, the burden of hostilities between India and Pakistan has stalemated SAARC that has been unable to meet since November 2014, closing India's doors toward regional order.

Furthermore, the escalation of events in Afghanistan resulting in Islamabad's favour has given more confidence to China on Afghan soil. This explains Beijing's eagle focus on the North-Western front of the Indian neighbourhood and its slow increase in the influence over the neighbours on the other side of the fence.

Communism has its roots not just in China, but across the border in Nepal as well. Former Nepali Prime Minister, K. P. Sharma Oli, has given his country the legacy of a China - inclined Nepal. The standoff in 2015 has brought Indo-Nepal relations to a historic low and the tussle of power for Kathmandu between India and China has made Nepal more prompt towards the choice of communism. This ideological shift can also be

seen in the Maldives with a rise in anti-India protests. Apart from this, we can see Sri Lanka already succumbed to its economic crisis.

However, New Delhi's fresh focus on the notion of 'Neighbourhood First' has brought back regional politics in the diplomatic channel. Unlike Beijing, New Delhi keeps up its cultural values of **वसुधैव कुटुंबकम** (*Vasudhaiva Kutumbakam* - The World is one family) at the highest priority and comes as a time-tested ally for its neighbouring population. India came up first to feed the war-torn population of Afghanistan under its 'wheat diplomacy' and extended the help by sending vaccines and medical assistance. Moreover, the visit of Nepali Prime Minister Sher Bahadur Deuba sparks a ray of hope in stale relationships. Furthermore, the adoption of the Charter at the Fifth Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation (BIMSTEC) summit
promises to re-energize the 25-year-old grouping at a time of growing global uncertainties. This has given India's regional aspirations a new orientation. The call for a BIMSTEC Free Trade Agreement has shown New Delhi's willingness to exploreregional FTA after walking out from China-led RCEP will give a big edge. Moreover, the lessons from proble matic SAARC and SAFTA will help BIMSTEC in the longer run.

With all of these advantages in its kitty, India strives to push back Beijing's suspicious intentions in its neighbourhood. In this new world order, where the ball is in the Indian court, it'll be good to see how it will confront the dragon slowly trying to swallow the world.

"By three methods we may learn wisdom: First, by reflection, which is noblest; Second, by imitation, which is easiest; and third by experience, which is the bitterest."

- Confucius

"Before you embark on a journey of revenge, dig two graves."

- Confucius

Srijony Das
B.A. (Hons), English III Year

Into the Wilderness: A Picturesque Journey to the Sundarbans

Being a wildlife enthusiast, it becomes near impossible for me to miss any opportunity to visit a place so full of solace and grace. Therefore, with the gloomy ways of the pandemic giving way to brighter sunshine and a way forward to normalcy, I found my way to the wilderness as a much-needed rejuvenation.

Queen of Jungles: The Sundarbans

Just like the grandeur of a majestic queen, the Sundarbans lie amidst a grand delta on the Bay of Bengal, witnessing the picturesque confluence of rivers Padma, Brahmaputra and Meghna. Spread graciously over tens of thousands of acres of land, the presence of the forest is both evident and disguised. Not to forget, the crown of the land are the sundari trees (or mangrove) whose deep-rooted connection with the land promises to preserve its beauty for posterity.

My travel to the Sundarbans unlocked perhaps a key of my consciousness as I started to understand how two very divergent planes of existence rested together in the most peaceful manner. The saline waters and the bountiful trees: a combination so strange yet it is their bond that makes millions of people gravitate towards the region.

It is in human nature to be disheartened at the slightest hint of discontent about something they wished yet could not achieve. However, my heart, which longed to see some amazing sight in this grand delta, calmed at the soothing visual of a glimmering sunset by the sea. A spell-bound moment it was, I vouch it was nothing less than witnessing magic in reality!

And, as if her glory was not yet complete, the Queen of Jungles beamed with extraordinary beauty as it did bring out one of her true sons in its spellbinding splendour of motion, the Bengal Tiger, a testimony that nature is perfect.

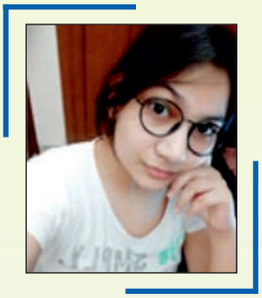

Garima Sharma
B.A. (Hons), English, III Year

Film Review: *CODA*

CODA, a 2021 Oscar winning film in three different categories: Best Picture, Best Supporting Actor, Best Adapted Screenplay is an adaptation of the 2014 French film *La Famille Be`lier.* This reminds one of Linda Hutcheon's comment in her essay 'On the Art of Adaptation': 'It may have taken T.S. Eliot and Northrop Frye to convince me that All Art is derived from other Arts' (sic).

The movie CODA (Child of Deaf Adult) depicts a story of a teenage girl, Ruby Rossi, played by Emilia Jones who balances different aspects of her life including her father's fishing business, her school life, her choir from which she debuts with a shy school boy, Miles (played by Ferdia Walsh-Peelo). She finds her talent and her passion for singing in the choir itself. The title tells a lot about the struggles faced by Ruby Rossi. She is the sole hearer in her family. Accustomed to her being family's sign-language-proficient interpreter, she spends her days translating every single experience in two different worlds: at town meetings, at the doctor's office and at the boat where a hearing person must be present to notice the signals and coastal announcements. Ruby is portrayed as such a balanced and awe-inspiring girl that it takes no time to recognize how exhausting the whole experience can be for a young girl in her position. Even though she makes everything look easy with maturity and a sense of responsibility beyond her years, she is all too aware of everything private about her parents, their medical conditions and their sex life. When the hearing world belittles them and at times becomes harsh on them, she steps in with protective instincts always prioritizing them over herself. But when Ruby joins the school choir and discovers her talent for singing and decides to apply to Berklee College of Music in Boston, she adopts a rehearsal schedule that often clashes with her duties in the family scenario. She becomes highly ambitious and changes her priority and loses her balance that puts her at odds with her family.

It's a delight to watch the British actor's portrayal as a small-town American teenager, desperate to make more of herself than her fisher-girl status at school. Her character brings humanity, self-deprecation and ambition in equal measures on screen. Her parents bring unending embarrassment to Ruby, but also a lot of honest warmth.

Though music is a strong component in this film, it rightfully remains as such and does not overshadow the core storytelling. There are soulful vocals to soothe a music lover in the film. The German critic Friedrich Nietzsche famously stated, 'without music life would be a mistake'. One of the most appealing scenes in the movie includes the one where she explains what she feels when she sings- she gestures with her hands what looks like expressing an emotion of flying away.

Through this movie one can easily get to know the intention of showing how differently abled people are usually treated by the society and what is their perspective of life? Do they also enjoy their life? How do they manage to communicate? How do they get to do their daily chores? How do they bear those offensive comments about themselves? How do they manage to live in a society where people make fun of them?

Does CODA code well with our heroine? How will she manage her tasks? Is she going to leave her family and pursue her dream of studying at the music school in Boston, or is she going to support her family business by staying back? All these interesting questions make this masterpiece worth watching. It is no surprise that the movie has bagged several awards.

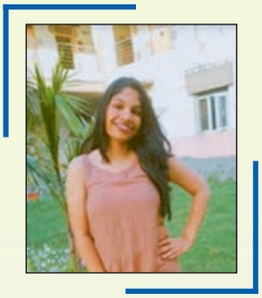

Aruna Bajaj
B.A. (Hons), English, I Year

Book Review- *The Kite Runner*

When I sat down to read the novel 'The Kite Runner' by Khaled Hosseini, I thought that with the amount of work piling on me it would take me three days to finish this book but you know there is a thing about an avid reader, if she likes a book she will forget to sleep, eat, work and immerse herself in it. Not a surprise, I finished the book within twelve hours. Debutant Khaled Hosseini vividly tells a tale of courage, atonement, devotion and redemption through his narrative. The protagonist Amir depicts picturesque descriptions about his life and demands the readers to experience what he has experienced. The novel brings out the interrelationships within a nearly shattered family. The story of Amir and Hassan is so heart-wrenching that it makes the readers teary - eyed.

The book gives me an insight into never judging a person, for everyone has their stories and their own share of wisdom, virtues and vices that shape them into who they are. Next, I agree that all of us felt angry when Amir watched Hudson getting assaulted and hated Amir even more for the way he behaved later on. No doubt, he was at fault, but as Rahim Khan, his father's friend, later says in his letter, 'he was just a child who was scared to face the bullies'. He was a son who wanted to be desperately accepted by his father. The neglect he faced from his father was totally unfair and so was the way he was expected to be like his father.

Children aren't like colouring books. You don't get to fill them with your favourite colours.' On the one hand, this book emphasizes the importance of encouragement to children by their parents and peers. On the other hand, it stirs our emotions for the untainted, blind and selfless devotion of Hassan for Amir.

Lastly, I would like to end this review with my take on Sohrab's character. To be honest, I was a little impatient when I saw Sohrab not adapting to his new family- Amir and his wife. But then, as I read on, I realised that as a child who had seen both his parents getting literally slaughtered and *Rahim Chacha* driven away from his land, both emotional and physical assault were enough to traumatize anyone. The part where he felt guilty for injuring someone who had assaulted him, simply proved his innocence. The way he compared the grave situation to a childhood incident of sour apples too displayed his mature yet innocent personality. As I conclude, if anyone were to ask me if I would read this book ever again, I would say, 'for you, a thousand times over!'

Sanju Meena
B.A. (Programme), III Year

Siddarth Shekhar
B.A. (Programme), III Year

Shakuni, the Misunderstood Villain : Review of *Mahabharata-A Child's View* by Samhita Arni

Shakuni is one of the infamous characters of the Hindu epic, *The Mahabharatha*. He was the man behind the great war of Kurukshetra and is believed to have veritably changed the landscape of the epic. He was the prince of Gandhara kingdom; His character, however, is mired in controversy. Many experts choose to believe that he was not quite as insidious as he is considered to be.

Who was Shakuni really? Was he the villain or just a vastly misunderstood entity, a victim of circumstances? Did he have a better side to him? Was it merely his *karma* and that of the Kuru dynasty that scripted his vote to spearhead the Kaurva clan?

Samhita Arni wrote her book *The Mahabharata- A Child's View* when she was thirteen. In this book, she not only depicts his early life, but also explains and expresses the general conscience of Shakuni. We can understand the child's view of Shakuni with innocence and far from the judgments of society, who is usually perceived as a cunning and extremely conniving character. In fact, he practically masterminded the great war of *Kurukshetra;* he supported Kauravas and planned to kill Pandavas.

The 'Game of Dice' was an episode that changed the very course of Mahabharata. There was a story behind his dice. It is believed that Shakuni used the thigh-bone and back-bone of his father and brothers' body to make his dice. This set of dice is said to have had magical powers, as his father's soul resided within it. The set of dice helped him win all games of dice he ever played during his lifetime. Shakuni, an expert with his dice and a master of illusion could bring his ability to his advantage any time when playing a dice game. He got together with Duryodhana to hatch a plot to destroy the Pandavas and invited them to the game of dice because they knew Yudhishtra had a weakness for the game.

Shakuni defeated Yudhishtra and he kept losing his herds, servants, army, property, palaces, and even his brothers one by one and finally, his wife, Draupadi. The game ended with Draupadi's *Vastraharan,* before the court. Finally, this game worked as a major reason for the great war of Mahabharata.

Shakuni was also referred to as Saubala. His father, king Subala, had a hundred sons and one daughter, Gandhari. Shakuni was the youngest son, also the most intelligent. Since he was the hundredth son, he was named 'Saubala'. He was very fond of his sister, Gandhari. According to the legend, Gandhari was a *manglik.* In Hindu astrology, a manglik is a person whose horoscope contains Mars in a certain house, which is considered unfavorable and inauspicious, especially for marriages. To ward off the ill effects of the stars, Gandhari was first married off to a goat, before being married to Dhritarashtra, the blind prince of Hastinapura. He was a non-manglik and hence her family believed that it would be safe to give her away in marriage to Dhritarashtra, once they sacrificed the goat after getting them married.

Dhritrashtra heard of this incident much after their marriage and was enraged, as her secret of first marriage technically made him her second husband. As punishment, he put Gandhari's family in prison, including king Subala. He decided to gradually starve them to death and so each of them was given only one fistful of rice to eat every day. Knowing that they would not live long on this diet, Gandhari's father asked his youngest son, Shakuni, to consume all the food given to them, so that at least he would survive to avenge their death. In order to make sure that he remembers to take revenge, his father twisted his leg that gave him permanent limp that typically characterizes Shakuni.

The other phase of Shakuni's life relates to a different reason, why he wanted the downfall of Hastinapur. This story, however, has not been mentioned in the Mahabharata epic. Also, Bhishma's ancestors carried out a military attack on the Gandhara kingdom and killed many. No wonder, Shakuni was angry with Bhishma for having requested Gandhari's hand for marriage to the blind prince Dhritarashtra. He found it most insulting and humiliating that his sister had to face misfortune and blindfolded her eyes too. This event led to his revenge to destroy the Kuru clan, slowly step by step. Shakuni had no real animosity towards the Pandavas. He was actually targeting Bhishma, since he was the reason that Gandhari had to sacrifice her vision.

The Kollam district of Kerala has a temple dedicated to Shakuni's worship. Although he was a negative character, there were some undeniably good traits in him. For example, he was very courageous and intelligent which the Kuravar community acknowledges.

Samhita Arni was fascinated by myths. To depict characters in her book she used the style and costumes of Therukoothu heroes and heroines, who performed Mahabharatha in several villages of Tamil Nadu to this day. Samhita's text and pictures complement each other. The tone of the text is reticent and grave while her pictures are playful, extravagant and extremely animated.

Faculty Contributions

Dr. Reshma Tabassum
Assistant Professor, Department of English

Lotus and I

One day I am all forlorn
Assailing the pond by hurling stones

Splash! The sound reverberated
Voyaging through my mind querying whether my life is animated

'Am I worth anything?' I thought.
Staring at the sky for the succour I sought

Volley of questions precipitate nihility
Coerce me to seize my ontological reality

Not one shows solicitude if I exist or not
Insinuates that a dreck I am, or a blot

Why do my parents never bother to talk?
Chagrins me, for with them I want to walk

Friends and cousins manners are in perpetuum gruff
Reckon me amongst nugatory stuff

Who should I reach out to?
Aristotle, Socrates, Lorhard, or Plato

Hey! Does anyone dare to meet my strife?
Piping serenity, tranquility, placidity away from my life

A life, or a seething maelstrom of Weltschmerz, you see!
Why shouldn't I wish I were a honey-bee?

Tired and bemired, I desire to sting everyone turn-by turn
Make them experience the twinge behind every burn

To suck their warm fuzziness and parch their throat
Want to seize the nectar they gloat

But then, my irascible self sees a lotus
The life of which I could discern without any fuss

Covered with awful weeds all around
Escape from that morass is nigh impossible for it is all bound

Even though it is stalked and hooked
Absolutely resplendent it looks 'coz all the biting it has brooked

With stumbling blocks around, it's uniform
Confronting with tumult and storms

It rises high when hurdles try to pull it down
Has enough courage to hold a crown

In spur-of-the-moment, I cogitate about my own self
And feel contrite about being worse than an evil elf

Well, the Lotus vouchsafe discernment
Life could be delightful even without big accomplishment

It equips me with a whole new perspective to find why
I am very much apt to touch the sky

But I pondered again, 'Why should I touch the sky?'
I just want to know my worth before I die

Together with others, Lotus is blissful and graceful
Abandoned, my life is estranged and baleful.

Ah, how lonely I really am!
And in my ocean of forlornness I still swam.

Lallianpuii Ralte
Assistant Professor, Department of English

The Wave We Did Not See Coming

There will be no neat Nietzsche quote to begin this article. You know, the kind of metaphysical musing writers cite to endorse and forebode the solemnity of their topic? There will be none of that here, for one does not need a philosopher – Western or Eastern - to validate the matters of the heart. After all, for the things that matter to the heart, the self-sufficient organ offers its own punctuation mark: it skips a beat. And if that profound pause in the most vital bodily function doesn't pronounce the gravity of the moment, nothing else in this world ever will. And as we go along, we all have our own skip-a-beat moments, our lives essentially a sum of them, including the many unforgettable ones that pop culture allows us to experience collectively. It is a different matter that things that cause these moments are increasingly getting varied as the generation gap widens. Readers of my age or more will remember how a dusky Delhi boy transitioned from the small screen to the big, and into our hearts as the irrefutable Badshah of Bollywood, one skip-a-beat cinematic moment after another. Even the role of a villain in the movie Darr only served to prove the mettle of the actor, the delivery of his 'K-K-K-K Kiran' line made an iconic moment in the history of cinema. But today's youth is a generation for whom an altogether different resident of Mannat in Mumbai gives them their skip-a-beat moment; this generation of the Ys and the Zs is fuelled by the need for speed, whose clocks go TikTok at 500 mbps. They associate the letter K neither with the name nor the chilling performance of King Khan over the years. 'K' for them does not refer anymore to the well-sculpted Hollywood family famous for being famous. K means and only means all things Korean, and this is the wave we did not see coming.

The Korean wave (or Hallyu as it is known in Chinese) is a global phenomenon where Korean cultural components like their cuisine, music, motion pictures, TV shows, fashion, beauty, health, and aesthetics and even the Korean language itself has enjoyed immense popularity and acceptance. The export of their cultural components have contributed exponentially – 12.3 billion USD in 2019 for example - to the South Korean economy. South Korea, an erstwhile underdeveloped country, picking itself up from the ravages of the Korean War, is today the tenth largest economy

in the world. This exceptional rise in economic growth and stability within a few generations makes the country a force to reckon with amongst the power players in global politics, earning for itself a place of respect within global forums like OECD and G-20. Resilient even in times of global recession, the Korean economy rests on its robust export-oriented industrialization. This incredible journey of a nation has been made possible due to keen partakers like us as global consumers of their electronic and technological products to name a few, and now like it or not, of their culture and popular culture. To the Indian youth today, the Korean War makes for a distant association with the country's image, when Samsung and Hyundai make their everyday items to toy around with, and K-Pop and K-Dramas churn out the ultimate in entertainment and aesthetics. Such is the makeover this country has achieved in a matter of a few decades, all planned to meticulous and zealous execution through the Korean wave around the globe.

It is a known fact that South Korea's Ministry of Culture, Sports and Tourism works with the sole intent of being the leading exporter of popular culture in the world. The popular culture industry division specifically works with a dedicated budget of over 5 billion USD to increase the country's economy through Korean culture exports. This, along with other investments from the government and numerous private investors eager to diversify their investments nurture the culture industry. No wonder then, Korean culture centres across the globe like the one which is a few km away from our own college, are synonymous with ambient, distinguished yet welcoming havens of cultural exchange and learning. Strategic PR campaigns, demographic and market analysis pave a conducive way ahead for everything K to be accepted and beloved by the global audience. Interestingly, language has not been a deterrent for this phenomenon to snowball into the influence it has today. Koreans export most of their cultural performances and products unapologetically in Korean. The rest of the world simply learns, sings and dances to their tune. Bong Joon-ho, Director of multiple Academy Award and Golden Globe winning Korean movie Parasite (2020) famously said (in Korean) in his acceptance speech: 'Once you overcome the one-inch-tall barrier of subtitles, you will be introduced to so many more amazing films'. Such confidence in their craft, in their message, in their language and history could only come from the solid backing and appreciation of their mastery by their own government.

For years, even a person as uninterested as I had felt undercurrents, and remained immune to the Korean wave from all around me other than the four times I managed to watch the 2001 hit movie My Sassy Girl in our DU hostel TV room. But beyond this, I never dipped my toes in the wave that has been so softly but surely sweeping the world around me. After all, Korean Ramyeon and kimbap seemed to me a pale imitation of my favourite Japanese ramens and sushis, and I dismissed their Jeju Island volcanic clay infused ten-step skincare routine as merely their version of our 'Himalayan water' marketing overkill. Things changed for me during the national lockdown of 2020 when the world was battling another kind of wave. Under lockdown, my husband and I soon reached our 'I finished Netflix' moment, i.e., we exhausted the movies we loved to watch and rewatch on OTT platforms. That's when I started watching my first ever K-Drama Crash Landing

on You and let my heart skip beat after beat after beat. I understood in that moment what Harvard scholar Joseph Nye's soft power in international politics meant. Nye says that in the power-play of nations, soft power is the ability to get 'others to want the outcomes that you want', and more particularly 'the ability to achieve goals through attraction rather than coercion' as opposed to hard power. Soft power enables a change of behaviour in others, without competition or conflict, by using persuasion and attraction. South Korea achieves this through the machinery of export of a variety of popular culture portfolios, K-Drama being one of them. Through these addictive television shows and movies, music and fashion, Koreans showcase the world their lifestyle and culture, or at least carefully curated versions of them. They familiarize their way of thought and living to the world and slowly but steadily appeal to the sensibilities of their audience and win many followers along the way.

Are we Indians then to borrow a page from the Korean book of influence? Perhaps, and perhaps not. Much as we admire South Korea's rise to political, economic and cultural dominance, the country is not unaffected by the ills of the policies which catapulted it to its current position in the first place. This factor, ironically, forms the canvas of the most appreciated forms of art that Koreans have displayed for the world to see and behold. Take for example the cinematic excellence of a film called Parasite. The Academy Awards' best motion picture awardee tells the story of an impoverished family finding employment under false pretences in the household of a wealthy family. The stark disparity in wealth of the two families forms the theme of this celebrated black comedy. Let's take Squid Game as another example. The premise of this record-breaking television series, Netflix's most popular till date, is the exploitation of debt-ridden citizens by luring them into playing deadly games reminiscent of their childhoods, all for the amusement of bored billionaires. Also, for a population that takes aesthetics and well-being seriously, it is no surprise that sometimes the beauty industry encourages unhealthy levels of cosmetic 'correction'. And for all the screaming, frenzied energy poured over by fan base 'army' of K-pop stars, it will be hard to accept that their favourite band members (or 'bias') have undergone gruelling, often exploitative training in regimented, fiercely competitive special music schools to make it to the concert stage that fans travel all over the world to see and swoon. Stories of dejected trainees affecting their mental health abound, only to show that Koreans are after all humans, flawed just like us. Even so, they are eager and relentless in offering to the world the best of their culture. Their share of failures as a society does not overwhelm their image as affable people because they are still deeply rooted in their culture that values family ties, reverence for elders and superiors, patriotism through military conscription, obedience to the law of the land, and most importantly, their quiet, unflinching sense of self-worth. And that is exactly what we find if we dig deeper in men and women we meet along the way. I have witnessed these qualities in the Koreans I have come to know in my life. One of them a former student of our college, who I now regret not having reciprocated his bowing etiquette in the corridors as well as I should have. Given the rest of our fellow Asians, we'll find the Koreans may be the easiest to form bonds with, perhaps because the ground has already been so effectively laid for us to tread on that very path.

While one may dismiss the new exclusive Korean grocery stores and restaurants cropping up in our city as only catering to a niche, affluent urban youth, it nevertheless speaks volumes about the investment worthiness of the brand of an entire country Korea, and not the individual manufacturers that produce the items that are sold. This perhaps is the page we ought to bookmark – to continue winning the trust of the world as a country. The brand of our country, the image of its diverse people, the harmony with which we build our nation into an indomitable global leadership role in this century will all depend on our how we conduct ourselves to the world in each and every sphere of human interaction. This is a challenge we ought to pledge ourselves to our motherland – that 75 years since Independence, the brand of India is still trustworthy, investment worthy, and the people in it reliable and worthy of the faith the world puts in us. We may not need strategic PR moves to sell the brand of India like the Koreans do, when we have substantial precedents like our history and our diaspora in place. But we need to carry forward and continue the good work done by our predecessors. The onus falls on this current generation, to the students enrolled in our college and we the staff that help realise their goals. United, our focus and strive will positively yield a much bigger wave that no one ever saw coming.

Gamsahamnida.

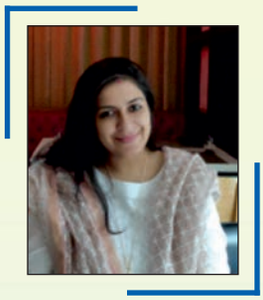

Sakshi Verma
Assistant Professor, Department Of Commerce

The Repair and Maintenance

So what do you find difficult?
Starting a conversation, continuing it or comprehending it?
What do you find difficult?
Making friends or keeping the friendships alive?
What do you find difficult?
Building relationships or maintaining them?

If you are an introvert, there would be a little more difficulty in initiating things.
However, we are blessed with certain relationships by birth and we make some relationships in our lives.
Personally, I feel the concept of individualism is on the rise
And the trend to repair and maintain relations is on the decline.
Repair and maintenance of the relationship means how much effort we put into it to keep it alive.

Do we not take our relations easy, and focus on survival?
Why do we forget to put in efforts in maintaining the relationship as much as we do to build them?
In the name of survival, are we becoming selfish?
Always seeking love and understanding, we often forget to reciprocate it.
We forget our aging parents as we leave them for career advancements to distant lands.
Of course it is important - the growth and the career.
For some, it is a necessity; for some, it is a compulsion; for some, it is their dream.
But in the mad race we often forget our near and dear ones who were there when we were down,
And those who made us smile whenever we would frown.

And then one fine day, we have money and time,

And decide to go back to those who were considered mine.
But they are no longer there, life doesn't wait for anyone forever.
Everyday is a new day, but could be the last one too.
To celebrate each day and always be there for your loved ones, is not possible, I know.
But if you try, how impossible it is, you'll find a way to go.

Don't forget to keep the machinery moving,
Continuous repair and maintenance is necessary for the car you drive,
Else it will also bid goodbye.
Why risk our relationships then?
Built by God or by your own self, the precious bonds,
Will break, no matter how strong,
If you don't provide timely- repair and maintenance.

The Baby Steps

What are they?
Why are they so important?
The baby steps.
An important milestone
For babies and the parents,
Those tiny feet
That get the power
And start moving on their own.

The joy and sense of achievement it brings
Cannot be expressed
And then we grow
We learn to walk and run,
So much so,
That we forget to have fun.

To have fun and to celebrate the small milestones,
Which brought joy once

Chasing goals and wanting more,
We forget to appreciate and love
The blessings already on the shore.

The baby steps is not just a milestone,
They are the magical attempt
Which help us cover miles, miles we cover
As we grow,
the enthusiasm and spark
And our happiness will depreciate
If we forget to celebrate and appreciate.

Remind yourself of the importance of those first steps
Everytime you feel low
Keep moving, Keep celebrating
Every small increment you get in your life
For life is all about the little things
Which get lost in the burden of aims and deadlines.

Anish Kumar
Assistant Professor, Department of English

Falling

The song seeps into my bones
Or where the bones stood before.
I, float down the sky, down
The pendulum of time
Upon the luminous air
Miles and miles off the ground
The wind rushing through
With its murderous tickle
Swishing, lashing upon me.
I circle with hawks
Seeing what they see
Awed by what they were gazing upon
I am caught in the whirlpool
They just made above me
I go down and down
Still seeing them going round
And round the ocean of blue.
I'm falling now
Into the endless abyss of
A profound nothing course.
My wings burn green and grey,

I smell poison in the air
I lose sight
And I burn.

The song is stilled
My ears now aching badly
Wounded by the heavy silence.
The conspicuous stillness and calm
Banging heavily against bare eyes
Seemed to breed smoke.
I could taste ash on my tongue
My throat is parched.
The drunken psyche dwelled
Upon desiccated dreams
Of pieces of sky crumbling,
Becoming dust, falling as a shower
Of curses upon the shrivelled earth.

What remained of it
Was but patches of toxic brownness
And the hollow blackness above.

Sakshi Verma
Assistant Professor, Department Of Commerce

Humare Karne se Kya Hoga : A Practical Guide to Sustainable Living

We often say and often listen, 'Hamare Karne se Kya Hoga', especially when it comes to doing something good which we are delaying. We talk about consumer rights, but we seldom pay attention to the responsibilities. If we look within, we will realize what all changes are required at our own level. Bottles thrown out of the window of cars on the highway, littered roads and littered party halls after events, the plastic floating on the beaches and plastic wrappers scattered on the trekking sites are not an unusual but an unfortunate sight we often come across. So, what can we do? How can we be responsible individuals and consumers?

Let me share my journey and the baby steps I have taken. I was surprised as to how much waste we create and then we demand clean air and water in return. These small tips can not only help you create a better space for yourself and earth, but also once you make it a habit, it will bring joy and satisfaction to you.

1. Mindful Purchases - Please think if you really need to buy what you are about to purchase. Impulsive shopping creates demand for unwanted goods, just increases the load on your pocket and on earth.

2. Sustainable Purchases - If you need to buy, go for sustainable switches. Bamboo toothbrushes, reusable napkins, eco-friendly reusable decorations, shampoos and soap bars are easy switches to plastic next time you buy.

3. Reuse and Rehome - Don't fall prey to buying new goods every time. Repeating outfits, bags and accessories show you are mindful and sensible. Buying preloved goods is a sensible idea to reuse whatever already exists. Fast fashion trends should not always be followed. We live on this planet, let's remember it's to be shared with future generations and hence we must focus on reusing and sharing our resources, else we will be left with nothing worthwhile.

4. Chemical Free life - A life without chemicals is certainly better than one with it. Breads, biscuits, other

packaged food or the house cleaners you use, the lipstick you wear, all have chemicals- which are harmful for us and the planet earth. As a conscious consumer, we should not forget to read ingredients used in packed items and learn about them. It's always better if we opt for sustainable, homegrown brands. Also, beware of greenwashing, using paper bags for packaging is not a surety of ethical business. Bio-enzyme is a healthy alternative which can replace all chemical cleaners at our home.

5. Waste Management - It is a good idea to collect all dry waste for recycling. All plastic packets of groceries, bottles, metal cans, thermocol, bubble wraps etc., can be recycled if waste is segregated and sent to the right place for recycling. Once we start doing this, we all become more conscious of the waste that we generate. For wet waste, composting is the best solution. Waste segregation will definitely help us in getting rid of the garbage problem.

To sum up, we ought to refuse to buy anything till it is needed, we must reuse existing items, donate the excess, and upcycle and recycle things which cannot be reused. Time to introspect and become conscious consumers and start a chain of positive impact by revisiting the phrase, *Humare Karne se hi Sab Hoga!*

"In our need for more and more rapid replacement of the worldly things around us, we can no longer afford to use them, to respect and preserve their inherent durability; we must consume, devour, as it were, our houses and furniture and cars as though they were the "good things" of nature which spoil uselessly if they are not drawn swiftly into the never-ending cycle of man's metabolism with nature. It is as though we had forced open the distinguishing boundaries which protected the world, the human artifice, from nature, the biological process which goes on in its very midst as well as the natural cyclical processes which surround it, delivering and abandoning to them the always threatened stability of a human world."

- Hannah Arendt

Department and Society Reports

Internal Quality Assurance Cell - IQAC

The IQAC is proud of its progressive role in ensuring quality initiatives and facilitation of projects undertaken by the college administration, different societies and departments in the college.

In the academic year 2021-22, IQAC contributed towards making the process of promotion of faculty members smooth and helped in achieving promotions of a hundred and fourteen colleagues, including three promotions to the level of professorships.

IQAC ensured that the opportunities of gaining knowledge through meaningful and upskilling courses were extended to both the faculty and the student communities of the college. The college conducted two 'Faculty Development Programs' (FDP) in collaboration with Mahatma Hansraj Faculty Development Programs in subject areas in keeping with the need of the current time. The Department of Commerce held an FDP on 'Select Issues of IND AS' foregrounding discussions on the accounting standards in India. The Department of Computer Science's FDP on 'Natural Language Processing and its Applications' brought in the interplay of the subfields of linguistics, computer science and artificial intelligence. Study forums have also been constituted and are functioning in every department in which colleagues share and discuss latest research in their respective fields.

Despite the impact of Covid-19 pandemic, the key concerns of inviting innovative ideas for the overall improvement and institution building, enabling various projects in terms of focus and assistance at every stage of their implementation were duly and successfully accomplished. Keeping this objective in view, departments were encouraged to conduct webinars and seminars throughout the academic year.

Apart from the prescribed curriculum, eight online short term certificate courses were held with clear objectives of keeping students ahead of the learning curve. A large number of students enlisted to avail the opportunities provided by these courses held across various departments and obtained their certificates after satisfactory completion.

Under the guidance of IQAC, an 'Entrepreneurship Cell' has also been set up and is already in the process of providing technical and motivational support to various start-ups helping students become job creators rather than job seekers.

This year's specific contributions suggested by IQAC also include equal opportunity initiatives. Infrastructural facilities have been augmented. Tactile tiles have been embedded throughout the campus, and bar codes have been put up outside each classroom to make the campus more PwD friendly.

In keeping with the college's notion of conscious responsibility towards society and environment, more rigorous and earnest projects have been undertaken for improvement of the green environment of the college. This year the college utilized the opportunity of increasing the green cover along the boundary wall. Within the college campus a fruit garden and more native trees have been planted.

The IQAC is determined to continue significant and relevant work to enhance all aspects of college life as well as motivate the societies and departments towards achieving greater heights.

Anu Kapoor
IQAC, Co-ordinator

Library

PGDAV College library has a very rich collection of more than one lakh books on various subjects and disciplines. It subscribes to around sixty five periodicals and seventeen newspapers for the purpose of reading and knowledge acquisition by students and faculty alike. The library infrastructure aims to provide a comfortable and peaceful reading ambience that facilitates students and enhances their concentration while studying for long hours. The library is fully computerised, air-conditioned and wi-fi enabled with high-tech CCTV surveillance mechanism ensuring a conducive and pleasurable reading environment. Library provides free access to both conventional as well as electronic resources like N LIST and Delhi University Library System (DULS) e-resources to its registered users. Students and faculty members can access and download e-books and e-journals.

The College Library extends support to needy students through a book bank facility. Needy and meritorious students can borrow textbooks related to their courses for the entire semester. Library serves differently-abled students through various assistive devices and technology. We have a dedicated lab for accessing Braille library resources, *'Sugamya Pustakalaya'* and an archive of recordings from other resources for visually impaired students.

Students are supported for learning and reading through various softwares like JAWS and devices like ANGEL DAISY Reader, MP3 recorder, Net books, Zoom Ex, Instant Text Reader, Lex Portable Camera, to name a few.

E- Library with Twenty three terminals has been developed for the college students to optimise the use of e-resources and facilitate internet browsing for academic purposes. A peaceful, distinct, and spacious Reference Section is now available in the library. The section is equipped with comfortable furniture for reading and conducting orientation programmes.

College library is distinctively sensitive to contemporary environmental concerns and committed to work on the principle of 3R's: Reduce, Reuse, Recycle. Green/Recycled stationery products are used in exchange for library paper waste. Under the free plantation drive we planted around thirty trees in the college as a tie up with Green-O-Tech Company in exchange for recycling of papers.

Library has a complete LED lighting setup. Emphasis is on using star rated electrical equipment in the library. Also, old computers are refurbished and put to use for the library users.

Library regularly apprises its users about collection, resources and latest resource addition in the field of research. This year the college library, under the aegis of IQAC, organised a webinar on 'Understanding Research Metric for Better Academic Visibility' for its users. Continuous orientation programs are conducted to help the students to use the library resources effectively. Four days' workshop on 'Know Your Library and Learn to Access Resources' was conducted as an information and user literacy programme for the newly admitted students of the college. To motivate library users and provide a wider

platform for book selection, the college library also organised a Book Fair for two days on 2nd -3rd March, 2022. The occasion was graced by two distinguished personalities of the University of Delhi: Chief Guest Prof. K. P. Singh, a distinguished educationist, eminent librarian, teacher, teacher-activist and Guest of Honour, Prof. A.K. Bhagi. Prof Bhagi, a renowned face and popular teacher-activist, former EC member, and President, DUTA, spoke about the importance of books in our lives and asserted the need of digital literacy. Many popular publishers were invited to display their latest publications. The book fair fetched overwhelming response from the faculty and students of the college.

For the last two years, the entire world has been struggling with the COVID-19 pandemic. Libraries are not untouched and to sustain and continue with productive work, the mode of delivery of services and resources has been modified. The college library followed the COVID-19 protocols in its working and offering services to its users. Online new arrival alerts, new and free e-resource updates, online book recommendation facility, overdue reminders, mail alerts, website updates related to library resources and services, remote log facility, plagiarism check facility for faculty of the college are the few initiatives taken by the college library adapting to the current scenario.

Garima Gaur Srivastava
Librarian

National Cadet Corps (NCC)

Under the guidance of Lieutenant Renu Jonwall and Lieutenant Hari Pratap Singh, the flag of Unity and Discipline was held high by the PGDAV NCC COY. The cadets under the leadership of JUO Ekta and SUO Varun Kumar Pandey participated in various NCC activities and camps. When the country was still adjusting to the new norms of the Covid- 19 pandemic, our NCC cadets were a step ahead in finding opportunities for service towards beleaguered humanity.

In April 2021,'Tika Utsav,' an awareness drive regarding the need for vaccination under the mass vaccination drive, was organised. Video blogs for various social media platforms were created during the drive. All the SWs enthusiastically took part in the 'Slogan Writing Competition' held from 1st of April to 31st May 2021. These slogans were intended to generate social awareness regarding the spread of COVID-19 and the importance and role of vaccination in tackling the novel coronavirus.

All the cadets spread the message of 'Yoga For Wellness' on the occasion of International Yoga Day on 21st June 2021 by performing Yoga and created awareness about its benefits by sharing videos of performing various *asanas*. Be it physical training or seeking opportunities digitally, NCC cadets have shown equal enthusiasm at all the platforms. The SDs and SWs of PGDAV COY wrote articles, poems and created videos for the NCC digital forum, and registered their presence in a large number digitally during a month-long activity in July.

To take pride in our Mother Nation and to salute the bravery of our martyred soldiers, 4 SW cadets participated in a month-long activity, held to celebrate 'The Swarnima Vijay Varsh' from 1st July to 31st August 2021. CDT Priyanka, CDT Ekta, LCPL Aanchal, and CDT Vanshita presented their paintings made to pay tribute to the bravehearts of the war of 1971. All the cadets participated with commendable enthusiasm in a quiz competition held on the 4th August 2021, imparting knowledge about the historical events during the war of 1971. Physical fitness and always being ready to act are what make NCC cadets stand out from the crowd. Our NCC cadets proved that they are

physically as well as mentally fit by participating enthusiastically in large numbers during the 'Fit India Campaign' held from 17th August to 2nd October, 2021. The data of the daily exercises of this two and a half month-long campaign was maintained meticulously.The daily physical exercises like cycling, running, walking, etc. were performed by our cadets.

Various 'Ek Bharat Shreshth Bharat' camps were organised in virtual mode. Our SDs Cadets and SW Cadets attended these camps and registered their presence by performing activities like presentation and poster making.

Challenging circumstances are the coveted element that shape the true qualities of an NCC cadet. Our brave cadets not only undertook the adventurous trekking camp but also adapted extraordinarily to the harsh conditions of various trek ranges.

Familiarising the cadets with the military's meticulous lifestyle is one of the many aims NCC serves. Our SUO Varun Kumar Pandey attended the prestigious 'Indian Military Academy Attachment Camp', held between 21 December 2021- 8 January 2022.

To walk on the Rajpath is a dream of many. JUO Priyavansh, JUO Sudhir Singh Chauhan, and JUO Ashish Bhatt achieved this dream and walked on the Rajpath and marked their presence in the prestigious' 'Republic Day Parade Camp' of 2022, held between 18th December 2021 to 29th January 2022.

The PM Rally camps were held with gusto and vibrancy, combined along with SNIC where cultural and adventurous activities were organised and the cadets of PGDAV COY embellished them with their stellar performances, conducted from 1 December to 29th January 2022. JUO Hari Om and CDT Preeti achieved the prestigious 'ADG Appreciation Award' for their contributions to the 'PM Rally Cultural Camp' on 29th January.

5 cadets participated in 'Vijay Parva' held on the 11th of December whereas 25 Cadets marked their presence in the 'National Youth Festival' held on 12th of January 2022.

From attending online NCC classes every Saturday and aiding the government by attaining COVID-19 training on the Diksha app on 24 April 2021 to undertaking adventurous camps like trekking, the cadets of PGDAV Coy presented their greatest adventurous spirit and discipline as well as maintained their motivation to keep striving for the better.

The session of 2021-22 NCC cadets exhibited great enthusiasm and spirit of discipline while accomplishing all the activities. Our Cadets participated in large numbers in various online drives and offline activities.

Participation in various camps and activities were as follows:-

S.no.	Camps And Activities	Name
1	**Online Activities** Tika Utsav (April, 2021) Slogan Writing Competition (1 April-31st May) International Yoga Day (21 June, 2021) NCC Digital Forum The Swarnima Vijay Varsh [1 July- 31 August 2021) Fit India Campaign (17 of August to 2 October) Vijay Parva, National Youth Festival 12 December	All SDs and SWs 1st + 2nd Year
2	**EBSB** SD:-EBSB Odisha: 20 April- 24 April 2021 EBSB Maharashtra: 19 July- 24 July 2021 EBSB MP and Chattisgarh - 20 September - 25 September 2021 EBSB Uttrakhand: 19 December- 24 December 2021 EBSB Kerala and Lakshadweep: 25 October - 31 October 2021 SW:- EBSB Odisha: 26 April- 30 April 2021 EBSB Maharashtra: 23 August- 26 August 2021	18 SDs 4 SWs LCPL Simran, CDT Ruchi, CDT Renu, CDT P Gayatri
3	**Trekking Camp** UP Trekking Camp 8 - 16 October 2021 Shivaji Trekking Camp, 24 November- 4 December 2022 Bihar Jharkhand Trekking Camp, 1 -10 December Darjeeling Trekking Camp, 15 - 22 November 2021	4SWs LCPL Riya Bhatil, LCPL Puneeta Goswami, CDT Riddhi Ravi, CDT Preeti 9 SDs

	Ajmer Trekking Camp 17 - 24 November	SUO Varun Panday, SGT Aditya SB Dass, JUO Hari Om, CHM Rupesh Ram, COMS Ritik Roshan, COMS Nitin Singh, CDT Kunal Singh, CDT Aniket Prasad, CDT Sonu
4	Indian Military Academy Attachment Camp, 21 December - 8 January	SUO Varun Kumar Pandey
5	Para- Slithering 20 December- 8 January	JUO Ekta
6	Combined Annual Training Camp	10 SWs 94 SDs
7	Republic Day Camp, 18 December to 29 January	JUO Priyavansh, JUO Ashish Datt Bhatt, JUO Sudhir Singh Chauhan
8	PM Rally+ SNIC, 1 December- 29 January 2022	4 SWs LCPL Aanchal Gupta, CDT Preeti, CDT Samiksha, CDT Bhumika 10 SDs JUO Hari Om, LCPL Dheeraj Singh Rawat, CDT Laxman Kumar Solanki, CDT N. Karan Singh Jhakar, CDT Ritik, CDT Santosh BK, CDT Ved Dwivedi, CDT Vinay Kumar Jha, CDT Madhur, CDT Rohit

Lt. Renu Jonwal
Convener

Azadi Ka Amrit Mahotsav - 75 Years of India's Independence

India is celebrating its 75 Years of Independence and to commemorate it, the Ministry of Education launched an initiative titled 'Azadi Ka Amrit Mahotsav'. Dr. Rimjhim Sharma from the Department of History was appointed as the Nodal Officer-In-Charge. Various cultural as well as academic programmes were organised throughout the year 2021-22 in the college under this initiative. The celebrations began with a talk on the 'Role of Mahatma Gandhi in Indian Freedom Movement' in the month of July and was followed by students singing patriotic songs in five different Indian languages. The College also organised events such as 'Freedom Run', Inter-College Essay Competition on the topic 'Communalism was the Colonial Construct', National Seminar on the topic 'Hindi Sahitya me Rashtriye Chetna ke Swar', and Inter-College Slogan Writing Competition in both Hindi and English languages on topics 'Freedom Fighter', 'Self-reliant India', 'Youth Power', and 'Women Empowerment'. N.S.S and various other curricular and cocurricular societies of the college also organised many programmes to commemorate 'Azadi Ka Amrit Mahotsav'. Events like 'Plantation Drive', 'Swachhata Pledge', 'Cleanliness Drive on Ekta Diwas', inter-college self-composed poetry competition on the topic 'Patriotism', and 'India of My Dreams' created an environment of awareness in the students. College also organised 'Suryanamaskar', 'National Voters Day Awareness Programme', 'PPT Making Competition', and 'Vasantotsav'. Events were organised on *Shahidi* Diwas, International Women's Day, and Guru *Ravidas* Jayanti. Inter-college photography competition was also held on the topic 'Heritage of India'. All the programmes were extremely energetic and knowledge enhancing and saw engaged participation from the students and faculty alike.

National Service Scheme (NSS)

OUR JOURNEY

The National Service Scheme (NSS) is a time-tested and extremely effective scheme of the Government of India, Ministry of Youth Affairs and Sports. It was established on the auspicious occasion of the birth platinum jubilee of one of the most selfless men, Mahatma Gandhi, in 1969. The aim of NSS is to provide hands-on experience to young students in delivering community service and help them grow individually and collectively as a group. It helps students to become confident, composed and calm human beings. Its extremely effective in developing leadership skills and gaining experience in the students as they are exposed to different kinds of people from different walks of life. NSS works with the motto 'not me, but you', thereby prioritising the public good, selfless social service rather than personal comfort.

With the help of ten extremely motivated and hard working departments, the core team consists of spirited volunteers who work tirelessly and ceaselessly exemplifying dedication and involvement with the issues of society. These volunteers happily take up the tasks at every stage in their lives and make society believe that everything is possible.

NSS successfully arranged more than 15 online webinars and one offline seminar. Under the Project *Sahaayata*, there were other sub-projects that included: 'Hope– Help Other People Eat',

'Vaccination Campaign', 'Covid Campaign', 'Blood Donation Campaign', 'Book Donation Campaign', '14-days Yoga Session' (including more than twelve *mantras*), 'Vigilance Awareness Week Programmes', 'Cleanliness Drives', 'Nukkad Natak', to name a few.

The wide range of activities were possible under the guidance of Programme Officer, Sanjay Singh and Co-Convenor, Dr. Aparna Pandey. The office bearers for the session were President, Vidhi Luthra; Vice-President, Esha Arora; Secretary, Ayushi Agrawal; Treasurer, Himanshu Kumar; Student Programme Convenor, Ashutosh Yadav; and Student Program Coordinator, Samarth Singh.

The NSS wing, PGDAV college, pledges to keep the determination high and serve the society with utmost faith and devotion.

Sanjay Singh
Convener

Diligentia - The Entrepreneurship Cell

'Diligentia, The Entrepreneurship Cell' of PGDAV College, was established in September, 2021, in the gracious presence of Principal Prof. Krishna Sharma, Ms. Rashmi Chadha Founder & CEO, Wovoyage Travel Pvt. Ltd., as the chief guest, and other faculty members. The cell was created with the vision of kindling a spirit of innovation and entrepreneurship among the college students.

Right from its inception the cell has seen a very promising start. The cell organised around ten webinars, workshops and skill learning sessions with various well known industry experts and entrepreneurs. Each one of these events witnessed resounding participation from students across the University of Delhi and the entire country. Some of these included 'Growth and Success in Entrepreneurship' with Ms Aarti Ahuja, Entrepreneurial Coach, 'Entrepreneurship in Food & Beverage Industry' with Mr. Sandeep Kapoor, Founder and CEO, SPS Food Specialities, 'Personal Finance 101 For Aspiring Entrepreneurs' with Mr. Dhawal Pant, Investment Banker, 'Entrepreneurship and Creativity' with Dr. S Laxmi Devi, Founder Principal at Shaheed Rajguru College of Applied Sciences and Prof.

S.K. Palhan, Founder Director at Great Lakes Institute of Management, among others. These sessions proved to be extremely beneficial for our students who are the aspiring entrepreneurs of tomorrow.

The cell also organised in-house learning sessions conducted by senior members of the

cell to pass on the indispensable entrepreneurial skills like pitching, LinkedIn, stock-market, sales etc. to the entrepreneur cell members.

From Startup To Funding (Shark Tank India X Diligentia)

The cell was one of the first in the country to host participants from the popular and inspirational TV show Shark Tank India for a discussion with the students. It was a three-day mega event where the show contestants Ms. Riya Khattar (Founder, Heart Up My Sleeves), Ms. Rakhi Pal (Founder & COO, Event Beep) and Mr. Pratik Gadia (Founder & CEO, The Yarn Bazar) shared the lessons from their entrepreneurial journey, future opportunities and experiences on the show. The event was a great success with more than eight hundred participants reflecting pan-India presence. The recorded sessions were also uploaded on PGDAV College's YouTube channel.

Project *Gulaabo*

The 'E-Cell' also launched a social entrepreneurship cum hands-on training venture titled Project Gulaabo in March, 2022. It was conceptualised and implemented to boost the experiences and business skills of the student-members. It involved procurement, testing, packaging, labelling, marketing, and sale of herbal *gulaal* "Gulaabo". The event ended up making the festival of Holi joyous not just for humans but also for animals as 20% of the total profits were donated to the animal welfare organisations in the city. This initiative enabled students to put their skills to test and get practical entrepreneurial exposure. This live project marked the end of the session 2021-22 for the cell.

E-Skills with E-Cell

The seven-day entrepreneurial boot camp

conducted from 1st July to 7th July 2022, by the team with the view to provide a chance to learn entrepreneurial skills that would go along the way. The seven-day mega event hosted seven extremely versed speakers for sessions on some of the most sought-after skills.

The work of the cell is internally coordinated by four major teams, namely: the Operations Team, the PR Team, the Tech Team, and the Content Team.

The social media handles of the cell, @diligentia_ecell (Instagram) & Diligentia - The Entrepreneurship Cell of PGDAV College (LinkedIn), regularly share informative content about entrepreneurship per se as well as the news from the business world.

Under the guidance of convener Dr. Rajni Jagota, co-convener Dr. Urvashi Sabu, and other faculty mentors, and with the leadership of the core team and the support of all the members, the cell aims to provide the best entrepreneurial training experience and exposure to all the students and inspire upcoming entrepreneurs to be the change-makers of tomorrow.

Dr. Rajni Jagota
Convener

Hyperion: The Cultural Society

The college has always been bustling with cultural activities throughout the session. This session has been a special one for 'The Cultural Society of PGDAV College – Hyperion', as it was conducted under hybrid mode. The session started in online mode and progressed into full-fledged offline mode. Thus, Hyperion had competitions and programmes held online as well as offline. It displayed its prowess by being one of the best cultural societies that faced the challenges. Hyperion's team for the session 2021-22 which was led by President Paritosh Awasthi and Vice-President Amishi emerged successfully in all domains. All the members (students as well as faculty) used social media extensively to circulate information about public events.

Hyperion started its work from the ECA admission process onwards. The society received sixteen admissions under ECA. But that was not a deterrent for the team and the new students. This year Hyperion added around two hundred new students to the various societies through college auditions. The annual celebration of the talent of first years' Exploranza paved the freshers' way towards making an extraordinary display of their talents in twenty-four different competitions.

The students ceaselessly proved their mettle at university, state and national level competitions and brought laurels and fame to the college. In this session, students won one hundred and twenty-nine prizes in various events.

Hyperion celebrated the 12th annual National Voters' Day, on January 25, 2022. The programme witnessed a poster making and a live public speaking competition on the topic 'The state of India's elections with special emphasis to inclusive voting'. The poster making competition had twelve entries, out of which seven were shortlisted by the judges. The public speaking competition witnessed the finest speakers. The programme was attended by over one hundred people in the online meeting. The program ended with a pledge to increase the voting awareness among the youth of our country.

Aaghaz'22, the annual festival was held from April 5

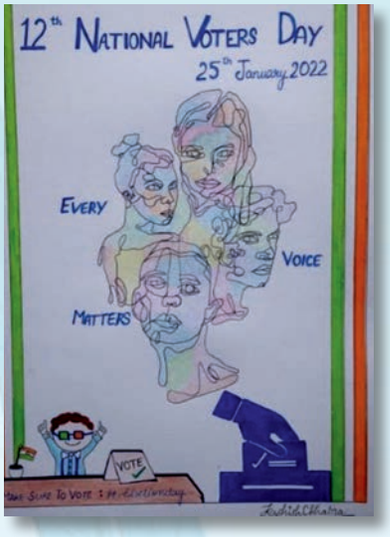

to 6, 2022. The two-days fest was held in blended mode. The theme of the festival this year was 'स्पंदन' # Celebrating Vibrancy. Twenty-six competitions in various categories sach as vocal music, instrumental music, theatre, poetry, digital media etc. were held. Nine of them were held on college campuses and the rest were conducted in virtual mode. During these two days the annual exhibition of IRIS (the Filmmaking and Photography Society) and the annual mega *Nukad Naatak* event Shor of Rudra (the *Nukad Naatak* society) were also held. The closing ceremony of Aaghaz'22 was held online on April 10th, 2022 where winners were announced and Niraj Chaudhary of 6 Nerves performed. Hyperion laid down their blood, sweat and tears to make Aaghaz'22 a success, as it was the first Aaghaz, after a pandemic having some offline events. Despite the obstacles present, Hyperion made sure to not leave any corner unattended. With their hearty efforts, Aaghaz celebrated the vibrancy of college students from across the nation attending the festival.

Ten societies work under the aegis of Hyperion, each corresponding to a field related to cultural activities:

Chanakya

Chanakya, the Intellectual Society of PGDAV College is the buzzing centre of thoughts, anchoring, poetry, debate and quizzing in the college campus, with clubs Spectrum, Qafiya, Buzzer and Gray Matter respectively. Chanakya has established its name in online screens and offline audiences under the leadership of President Preeti Deepa Dash and Vice-President Drishti Verma.

Chanakya won more than sixty prizes in colleges throughout the country in all disciplines it coordinates. It organised their flagship events in hybrid mode under Aaghaz'22 which received more than six hundred registrations. It continues to level up their skills and achievements with their creativity.

This year we also started Padantu- The Book Appreciation Club in college. The club recommends every month one book each of Hindi and English for the readers. Also, book discussion events were held for the recommended books.

Conundrum

Conundrum, the Western Music Society of PGDAV College is the personification of stars in all college events. With their melodious voices and coveted instrument playing skills, they continue to win hearts and awards under the leadership of President Pragya Bhardwaj and Vice-president Jai Mathur.

Conundrum participated and won prizes throughout the Delhi University circuit. With the onset of offline Aaghaz, they organised their flagship events Fantasia- The Western Singing Competition and Resonance- The Western Solo Instrumental competition which met with over eighty entries throughout the nation. Conundrum continues to pave its way with their exquisite skills and melodious voices.

Diversity

Diversity, the Dance Society encapsulates the rhythm of the college. Diversity made the college campus and online screens resonate with their bright energy. Diversity performed under the leadership of President Harshita Vashisht and Vice-President Reshmi.

The society showcased their mesmerising dance moves and won various prizes in Galgotias University and G L Bajaj Institute. The society continues to conquer hearts by their stupendous performances.

Iris

Iris, the Film and Photography Society, led by President Tanya Sharma and Vice-President Shivansh Saraswat proved its vision for creating visual content.

In the session 2021-22, Iris' photograph got featured in Photobug's Annual magazine, Capturra. At Picture-O-Mania by ANDC, Iris' entry was amongst the finalists. One of its short films, 'An idle mind is the devil's workshop' was screened at 'Filmtantra's Drishyam-Filmmaking Competition organized by Shaheed Bhagat Singh College. In addition to that, Iris won the Cine Impact Fellowship worth one lakh rupees. The film crew traveled to Vadodara, Gujarat, to film a documentary on Champaben.

At Ebullience 2022 in Aaghaz, Iris hosted

'Scrapbook - The Annual Photography Exhibition' along with their flagship event, The Darkroom Improvisation Competition and the Photography Competition-Showbizz. It was met with a grand success featuring entries from all over India.

Impressions

Impression, the Fine Arts society is focused on helping students to develop their artistic skills and gives them a platform to embrace their love for art. Impressions displayed its vibrant artistry throughout the academic year 2021-22 in various hues under the leadership of President Adya Kumari and Vice-President Shefali Dimri.

Impressions achieved a stellar amount of over twenty-five prizes across prestigious institutes such as IIT Bombay, Hansraj College, SRCC to name a few. The students incredible skills were the prime attraction at Aaghaz'22. Like its name, the society leaves its impression across the nation.

Navrang

Navrang, the Stage Play Society of PGDAV College with its outstanding theatrical skills has brought itself to the centre of attention. The post holders of Navrang, President Pranjal Malpani and Vice-President Divyanand Poswal achieved a good turn out of students by blending their events both in online and offline mode.

Navrang organised its annual flagship event 'Stage Is Yours: Stage Play Competition' in offline mode which proved to be an excellent platform to showcase the talents of societies present in the Delhi University circuit. Navrang's energy and passion in stage performances is a spectacle to behold.

Rapbeats

Rapbeats is the first hip-hop music society in the Delhi University circuit which was led by President Mayank Grover and Vice-President Sarthak Srivastava.

Rapbeats with its uniqueness and voice that never ceases to make the stage their playground proved their relentless efforts behind the scenes once again. They won prizes in IIT Kanpur, IIT Gandhinagar and Jamia Hamdard. They are well known at the national level because of their continuous efforts and their melodious voice and compositions through rap and production.

Rudra

Rudra, the Street Play society of PGDAV college is the most well-known society. Rudra continues to establish its name under the leadership of President Shyama Saraf and Vice- President Rhythm.

Rudra organised its annual flagship event 'Shor' under Aaghaz'22 which was the show stealing event in the festival. Rudra won over ten prizes in colleges around Delhi and with their vigour, they continue to stamp their presence in the college.

Raaga

Raaga, the Indian Music Society, led by the talented team of President Sahil Sunil and Vice-President Priyam Tahabilder who specialise in Indian classical music.

No inaugural ceremony can begin without a performance by the students of Raaga. With their melodious voices, they have won eight prizes in different competitions in Ramanujan College and Maitreyi College to name a few. Raaga organised their three events Swaranjali, Alaap and Naad which were the silver lining for Aaghaz'22.

Techwhiz

Techwhiz, the IT society has been the strongest pillar to provide support both during online and offline modes. Led by President Mohit Kumar Jain and Vice-President Anwesha Sanyal, the society continues to prove its expertise in technology.

With a total of more than thirty-five prizes from colleges ranging from Lady Sri Ram College, St.Stephens College and Miranda's House, their strengths remain unparalleled. Techwhiz organised five events in Aaghaz'22 which received a staggering amount of over three-hundred registrations. Techwhiz continues to produce wizards in technology and expand its foothold.

Hyperion didn't cease to work effortlessly towards achieving its goal. It owes its success to its convener Dr. Veenu Bhasin and all the faculty mentors in the cultural committees. The committee members had been working with students persistently throughout the year. The Faculty Members (2021-2022) were:

Dr. Veenu Bhasin	(Convener)
Ms. Bhawna Miglani	(Co-Convenor)
Dr. Awadhesh Kumar Jha	(Treasurer)

- Dr. Aparna Datt (Social Media Coordinator)
- Mr. Sandeep Kr. Ranjan (Mentor – Chanakya)
- Dr. Pritika Nehra (Mentor – Chanakya)
- Ms. RVS Chuimila (Mentor – Conundrum)
- Dr. Pramita Mishra (Mentor – Diversity)
- Ms. Purnima Bindal (Mentor – Iris)
- Ms. Suchitra (Mentor – Impressions)
- Ms. Vandana Kumari (Mentor – RapBeats)
- Dr. Harsh Chandra (Mentor – Raaga)
- Mr. Bharat Pawar (Mentor – Rudra)
- Ms. Avantika (Mentor – Navrang)
- Ms. Kirti Yadav (Mentor – TechWhiz)

Hyperion will always continue to strive for success and endeavour to go against all odds and emerge as a winner.

Achievements of Students in the session 2021-2022

- Pragya Bhardwaj of Conundrum won first prize at Maharaja Agrasen College, Septune'22 - Western Solo Singing Competition.
- Spunk dance crew won first prize in G.L Bajaj Institute.
- IRIS won the Cine Impact Fellowship worth one lakh rupees, with our members also traveling to Vadodara, Gujarat, to film a documentary for Apollo Tyres.
- (IRIS) Chaitanya Chugh's short film 'An Idle Mind is the Devil's Workshop' was the finalist for Drishyam, The Filmmaking Competition organised by Filmtantra,
- Raaga got third position at Vaaditra: Classical Choir Competition, Deshbandhu College.

Independence Day was celebrated as part of the college celebrations.

S.No.	Name	Event	Organized By	Position
Society – Chanakya (The Intellectual Society)				
1.	Purvanshi Singhal	Moksha	NSUT Delhi	2nd
2.	Drishti Verma	Mosaic-Creative Writing Competition	Keshav Mahavidyalaya	Special mention
3.	Drishti Verma	Calliope-Open Mic	MAIMS	3rd
4.	Aayush Kumar Pal	Rhapsody: Creative Writing Competition	Muzahira Institute of Home Economics, DU	2nd
5.	Aayush Kumar Pal	Essay Writing Competition by Samvaad	PGDAV College	3rd
6.	Aayush Kumar Pal	Beej Competition by Paakhi Magazine		1st
7.	Riddhi Ravi	Eartha Essay Writing Competition		1st
8.	Gaurika	Expressathon- The Media Review by Spectrum	PGDAV College	2nd
9.	Prachi Mukhija	Eclectica	IIIT Pune	1st
10.	Prachi Mukhija	Alter Oratorio Declamation	MAIMS	2nd
11.	Taniya Puri	Speech Competition	Venkateshwara College	1st
12.	Taniya Puri	Public Speaking Competition of 26th Jan	PGDAV College	1st
13.	Anubhav Saxena	Techwhizzard	PGDAV College	2nd
14.	Paritosh Awasthi	General Quiz	O P Jindal University	1st

S.No.	Name	Event	Organized By	Position
15.	Paritosh Awasthi	Xenia	ISBF	2nd
16.	Navya Tyagi	Xenia	ISBF	2nd
17.	Shivansh Joshi	General Quiz	SBSC	2nd
18.	Shivansh Joshi	Cyberlympics	JDMC	2nd
19.	Shivansh Joshi	Mind Martians 3.0	KNC	2nd
20.	Shivansh Joshi	Mela Quiz	Ramjas College	3rd
21.	Shivansh Joshi	General Quiz	Ramjas College	3rd
22.	Abhyuday Kalyani	Cyberlympics	JDMC	2nd
23.	Abhyuday Kalyani	MELA Quiz	Ramjas College	3rd
24.	Abhyuday Kalyani	General Quiz	Ramjas College	3rd
25.	Shivansh Joshi	Sports Quiz	Maharaja Agrasen College	3rd
26.	Abhyuday Kalyani	Sports Quiz	Maharaja Agrasen College	3rd
27.	Ayon Jyoti Nath	North east Quiz	Maharaja Agrasen College	2nd
28.	Purvanshi Singhal	Creative Writing	Shivaji College	1st
29.	Harsh Gupta	Open Mic	Shivaji College	Joint winner
30.	Aarzoo Agarwal	Slam Poetry	PGDAV College	1st

S.No.	Name	Event	Organized By	Position
31.	Trisha Pandey	Slam Poetry	PGDAV College	3rd
32.	Khushi Aggarwal	Improverse - storytelling	NSUT	3rd
33.	Manohar Parashar	Moksha : Creative Writing	NSUT	2nd
34.	Vartika Singh	Hirekarma : Open Mic	Hirekarma	1st
35.	Pranjal Malpani	Kavyanjli	Hansraj college	1st
36.	Saumya Khatri	Ek Bharat Shresth Bharat NCC (National) Debate Competition	Maharashtra DTE	1st
37.	Saumya Khatri	Special Yachting Camp, National Camp, Goa	Karnataka and Goa DTE	1st
38.	Abhyuday Kalyani	Know Your Republic (Samvaad) Debate	PGDAV College	1st
39.	Raj Rajeshwari Batra	Public Speech Competition	PGDAV College	3rd
40.	Srishti Das	Ceratus MUN	KNC	3rd
41.	Taniya Puri	Public Speech Competition	PGDAV College	1st
42.	Taniya Puri	Public Speech Competition	Sri Venkateshwara College	1st
43.	Mubarak Ali	Know Your Republic (Samvaad) Debate	PGDAV College	2nd
44.	Hemant Chaudhary	Model United Nations	Kirori Mal College	3rd

S.No.	Name	Event	Organized By	Position
45.	Jayanshu Badlani	Brain - Drain Debate	Mentza	1st
46.	Jayanshu Badlani	Case - Study Competition	Lady ShriRam College	2nd
47.	Shivansh Joshi	Case - Study Competition	Lady ShriRam College	2nd
48.	Soniya	Hindi Vaad - Vivaad Mahotsav	Sri Venkateshwara College	3rd
49.	Hifza	Turn Coat Debate	DCAC	3rd
50.	Shubhi Walia	Disscord Debate	Daulat Ram College	2nd
51.	Saawal Gupta	Hindu Environmental Debate	Hindu College	Best Interjector
52.	Saawal Gupta	Conventional Debate	Amity University, Noida	2nd
53.	Saawal Gupta	Case Study Competition	IP University, Delhi	2nd
54.	Ashish Surana	Amity Extempore	Amity University, Noida	2nd
55.	Ashish Surana	AAWAZ, Conventional Debate	Zakir Hussain College	3rd
56.	Ashish Surana	Hindu Extempore	Hindu College	2nd
57.	Ashish Surana	Panchtatva Extempore/JAM	Panchtatva	2nd
58.	Ashish Surana	General Quiz-cum Conventional Debate	SGND Khalsa College	3rd

S.No.	Name	Event and Organiser	Position
Society – Impressions (The Fine Arts Society)			
1.	Vanshika Verma	Mood Indigo, IIT Bombay	1st
2.	Ayushi Kaushik	Love Art Kal, SRCC	1st
3.	Karan	Poster Making Competition, PGDAV	1st
4.	Shefali Dimri	Elevin Events	3rd
5.	Preksha	Best Out of Waste, Maharaja Agrasen College	3rd
6.	Preksha	Craft , Aryabhatta	3rd
7.	Sweety Marim	Zodiac Reimagined, MSI	2nd
8.	Shefali Dimri	Art on Titans, Ramanujan College	3rd
9.	Sweety Marim	Zodiac Reimagined, MSI	2nd
10.	Sweety Marim	Cloth Painting , NDIM	2nd
11.	Sweety Marim	Art on Titans, Ramanujan College	2nd
12.	Sweety Marim	Doodling Competition, Jamia Hamdard	2nd
13.	Sweety Marim	Poster Making Competition, Samvaad, PGDAV	2nd
14.	Bandna Saroj	Avante Garde, Hansraj College	2nd
15.	Sweety Marim	Painting , Eclectica Society - PGDAV	2nd
16.	Karan	Eve teasing : Poster Making Competition, PGDAV	1st
17.	Adya	Mood Indigo, IIT Bombay	3rd

S.No.	Name	Event and Organiser	Position
18.	Kashish Chhabra	Mood Indigo, IIT Bombay	2nd
19.	Karan	Mood Indigo , IIT Bombay	2nd
20.	Impressions Team	DTU	
21.	Navya	Elevin Events	1st
22.	Aishwariya	Elevin Events	1st
23.	Swasti	Craft Studio, PGDAV	1st
24.	Ayushi Kaushik	Fiesta , PGDAV	1st
25.	Aishwariya	Mono Strokes, PGDAV	1st
26.	Karan	Mono Strokes, PGDAV	1st
27.	Vanshika Saxena	Zenart , IIT Delhi	2nd

S.No.	Student Name	Event Name	Institution Name	Position
Society – Navrang (The Stage Play Society)				
1.	Mansi Gangwal	Ad-Making Competition	GL Bajaj	3rd
2.	Divyanand	Ad-Making Competition (Sankalp 2022)	GL Bajaj	3rd
3.	Richika	Ad-Making Competition (Sankalp 2022)	GL Bajaj	3rd
4.	Vedant Sharma	Ad-Making Competition (Sankalp 2022)	GL Bajaj	3rd
5.	Soubhagya	Ad-Making Competition (Sankalp 2022)	GL Bajaj	3rd
6.	Soubhagya	Light Camera Action! Under Tabir'22	Janki Devi Memorial College	Runner-up
7.	Devashish Mishra	Light Camera Action! Under Tabir'22	Janki Devi Memorial College	Runner-up
8.	Pranjal	Ingenuity''22	NIIT University	2nd
9.	Vedant Sharma	Ingenuity''22	NIIT University	2nd
10.	Vedant Sharma	Masquerade'22	Hindu College	Runner-up
11.	Richika	Monologue Competition	Shayam Lal College	3rd

S.No.	Name	Organizing Institution	Event	Position
Society – Rudra (The Street Play Society)				
1.	Soniya	PGDAV college	Street Stopper	1st
2.	Soniya	PGDAV college	Confront Conflicts	2nd
3.	Soniya	NMIMS Mumbai	Alag Nazariya	Best performance
4.	Soniya	NMIMS Mumbai	News Hours	Best argument
5.	Soniya	NMIMS Mumbai	Kitne Offensive The	Best performance
6.	Soniya	ANDC	Leiothrixx'22 Mono Act	2nd
7.	Soniya	PGDAV college	Enact NSS PGDAV	1st
8.	Soniya	IIT Delhi	Tamasha	Special mention
9.	Atharv	PGDAV college	Street Stopper	1st
10.	Yash Narang	PGDAV college	Street Stopper	3rd
11.	Yash Gambhir	PGDAV Satark	Memezaar 2.O	3rd

S.No.	Name	Position	Competition Name	Organizing Institution
Society – RapBeats Society				
1	Mayank Grover	2nd	Antaragni-Beatbox Competition	IIT Kanpur
2	Shivang Shukla	3rd	Reverb-Music Production	IIT Gandhinagar
3	Shivang Shukla	2nd	Ambience-Music Production Competition	Jamia Hamdard

S.No.	Name of The Participant	Name of The Event and Organiser	Position
Society – TechWhiz (The IT Society)			
1	Mohit Kumar Jain	Brain Boomer, ITS Mohan Nagar	1st
2	Mohit Kumar Jain	Crick Tambola, Commpact, MAIMS	2nd row
3	Vishesh Khurana	X-Centricity 2.0, St. Stephen's College	2nd
4	Prachi Tiwari	SKRIBBL, Sattva, Kalindi college	3rd
5	Ritik Narayan	Tiqnia DSA Competition, Jamia Hamdard	2nd
6	Vishesh Khurana	TechDay 2.0 Gaming Arena, VIPS College	1st
7	Shivansh Joshi	Sennight Gala, SBSC	2nd
8	Shivansh Joshi	Inquizzition, JDMC	2nd
9	Shivansh Joshi	Mind Martians, KNC	2nd
10	Shivansh Joshi	New blood quiz, PGDAV	1st

S.No.	Name of The Participant	Name of the Event and Organiser	Position
11	Mohit Kumar Jain	Paper Presentation, Department of Mathematics, Vivekananda College	2nd
12	Mohit Kumar Jain	TechWiz+Code-a-thon, Avgaahan, Maitreyi College	3rd
13	Mohit Kumar Jain	Math-e-Logic+Math Vlogger, Avgaahan, Maitreyi College	2nd
14	Mohit Kumar Jain	Stock-O-Nomics, Department of Statistics, Ramjas College	2nd
15	Mohit Kumar Jain	Paper Presentation, Department of Statistics, Ramjas College	Presenter awarded
16	Anubhav Shukla	Code Escape 2.0, CurieUx, SGTB Khalsa	1st
17	Ritik Narayan	Code Escape 2.0, CurieUx, SGTB Khalsa	2nd
18	Preksha Agarwal	Code Escape 2.0, CurieUx, SGTB Khalsa	3rd
19	Mohit Kumar Jain	Paper Presentation, Department of Mathematics, SVC	3rd
20	Shivansh Joshi	Milan TA Quiz, Quiz society+BA Programme Society, Ramjas College	3rd
21	Shivansh Joshi	Gen Sangh, Quiz society+BA Programme Society, Ramjas College	3rd
22	Shubhi Walia	Discord, DRC	2nd
23	Khushi Aggarwal	Improverse, Aagaz, NSUT,	3rd
24	Hardik Bhanot	Quizella-The Quiz Hunt, Parikalan	1st
25	Anurag Singh	Brand Aid 5.0, Moments, LSR	2nd
26	Shivansh Joshi	Brand Aid 5.0, Moments, LSR	2nd

S.No.	Name of The Participant	Name of the Event and Organiser	Position
27	Shivansh Joshi	Khel Gaon- Sports quiz, Maharaja Agrasen College	3rd
28	Mohit Kumar Jain	Young Researchers' Forum, Sankhyiki, PGDAV College	2nd
29	Mohit Kumar Jain	In-Q-Zite, Sankhyiki, PGDAV College	2nd
30	Anubhav Shukla	Load the Code, Ciencia'22, Ilustrado, Maitreyi College	1st
31	Mohit Kumar Jain	Mindfest, AMS, PGDAV College	2nd
32	Shivansh Joshi	Spent Quiz, Quizzards, Deshbandhu College	2nd
33	Anubhav Shukla	Codeavour, CompuAda, Miranda House	3rd
34	Anubhav Shukla	SyntaX Cybercept'22, St. Stephens College	2nd
35	Shivansh Joshi	Inquilab 3.0, General Quiz, SBSC	2nd
36	Shivansh Joshi	Mela quiz, Coeus'22, Dyal Singh College	3rd
37	Mohit Kumar Jain	Vedic Gyan, Fundamenta'22, P.G.D.A.V. College (E)	1st

Dr. Veenu Bhasin
Convener

Enactus

Enactus boasts of four faculty advisors, fifty-three members, four running projects and more than sixty budding entrepreneurs. Enactus has been able to recycle 500 kgs of waste (paper and home waste) and generated a revenue of $600. It is also proud of ten collaborations and impacted more than hundred people. It also has nine targeted sustainable development goals on its agenda.

Enactus stands for people who are vulnerable due to various factors like poverty, disability or no help with respect to social and economical terms. It is working towards the vision and objective of 'Transforming Lives and Shaping a Better Sustainable World'. We strategise to illustrate our college projects at many different levels so that our initiatives become more effective in creating a better future for those who need it.

Korakagaz

Initiated in the year 2015, project Korakagaz aims to empower women of marginalised communities by providing them with training in stationery business. It understands the significance of women being socially and economically independent and therefore seeks to help them earn wages for their livelihood.

Nistaaran

It is an initiative to uplift the community of waste pickers. It engages them in production and marketing of compost from urban solid waste, making our waste pickers as the "real heros". It also provides them with training to become social entrepreneurs.

Project निस्तारण
Project
निस्तारण
enactus
BIO ENZYME
#WEALLWIN
DON'T FORGET TO
BRING YOUR OWN BAGS
SAY NO!

Sugandh

Launched in February 2020, it is an attempt by ENACTUS (PGDAV) to protect people from malicious health problems and also the environment from the toxicity emitted by burning of ordinary incense sticks. It provides eco friendly incense sticks and empowers the marginalised women and helps them become social entrepreneurs.

Hope

Our very recent initiative 'Project Hope' aims to provide the young generation with the knowledge they require to safeguard their mental health, and that of people around them, by providing and spreading awareness through social media.

Key Highlights

The work started in the month of March, wherein our IGTV stood as the most engaged POP and we also gave the input of six reels in Passion for Purpose. Furthermore, we feel grateful to share that this year we got the opportunity to get mentored by KPMG, one of the leading financial and business advisors for our projects. In June, our Project Sugandh, Nistaaran, and Korakagaz got selected by the Office of the Principal Scientific Adviser to the Government of India under its "Waste to Wealth'' Mission for its 'Swachhta Saarthi Fellowship'. The fellowship was awarded for a period of one year to student leaders for running the projects. We conducted a volunteer program for two weeks on the 10th of March 2022, wherein we provided people with the opportunity outside our organisation to contribute to social change and gain skills required for the field of social entrepreneurship. We conducted a series of more than eight free webinars by leading mental health professionals under our project hope. The team came up with an innovative idea of conducting a Paper and Plastic Waste Collection Drive on the 1st, 2nd, and 4th of April, 2022 on the college premises to spread awareness regarding the 3 R's: Reduce, Reuse and Recycle.

With a strong devotion and enthusiasm, Enactus has always looked up to something that acts as heroism on a grand scale. It is the collective effort of each member who has made a difference in so many people's lives.

Faculty Advisors:

Convenor,	Dr Richa Agarwal
Co-Convenor,	Dr Aparna Datt
Co-Convenor,	Dr Pardeep Singh
Co-Convenor,	Dr Gaurav Kumar

Core Team :

1.	Ananya Dixit	President
2.	Khushi Rastogi	Vice President
3.	Achintya	Secretary
4.	Avantika	Treasurer
5.	Mansi Pathak	Marketing and Funding Head
6.	Anuj Mahajan	Nistaaran Head
7.	Kavish Choudhary	Sugandh Head
8.	Akhil Goyal	Content Head
9.	Kundan Mishra	Technical Head

Dr. Richa Agarwal
Convener

Satark - The Consumer Club

Today's market throws new challenges at us each day. It is essential that we, as consumers, keep abreast of things. Keeping this in view, Satark, the consumer club, picks up the latest issues that affect us as consumers. We create opportunities for interactive sessions and various lectures/debates/ webinars to apprise the college community of the latest developments in this context. This time it was 'Digital Transactions and its Inherent Dangers'.

Every year, we begin with the Consumer Protection Act, 2019, more so, as new features are added to it from time to time. Its knowledge is absolutely essential and is the best safeguard against getting duped.

Additionally, Satark spreads awareness through its own Instagram page, Facebook page and Blogs. They are updated every Thursday on relevant topics of consumers' interests. We have Satark Alert- a series of updates and 'Consumer Awareness Ft.' Satark – A reel-series in which we talk about all aspects of consumerism from basic consumer rights to international buying laws from social media thrift stores, social causes to all the latest consumer news.

Satark organised four Knowledge Sharing Sessions (KSS) in the academic year 2021-22. First KSS was organised on August 13, 2021 on the topic 'Data Breach'. Joint Secretary, Shivani Arora and Technical Head, Siddharth Dua spoke on the topic and how its tentacles have spread far and wide in business, healthcare, education, banking and government sectors.

Second KSS was organised on October 30, 2021 on the topic of 'Net Banking - A Blessing Or Curse?' Joint Secretary Shivani Arora and Content Member Ritvik Bhayana gave us an insightful session on Net Banking.The Q/A segment made the session interactive as well as informative, cautioning the audience to be cautious of all the frauds happening in this area.

Third KSS was organised on February 06, 2022 on the topic of 'Social Entrepreneurship and Its Impact on Consumers'. Vice President, Ananya Sinha illuminated the audience on the topic. She emphasised how social entrepreneurs can focus on developing an equal and just society by providing economic and social security. She made the session interactive through video clips, graphs and question and answer rounds.

Fourth KSS was organised on April 14, 2022 on the topic of 'LinkedIn Profile Optimisation'. Ms. Pragya, a B2B Social Media Marketer, LinkedIn Strategist and Ed-Tech Enthusiast enlightened us on this very crucial topic. The session gave an insight into many basic yet useful metrics of linkedin. At the end, a Question and Answer session was held to resolve the queries of the participants.

Another mode of engagement employed by the club is through webinars. Consumer First webinar was held on 11th September, 2021. The keynote speaker was Dr. Jayashree Gupta, President, Consumers

India. Speaking on the theme of the webinar, Dr. Jayashree Gupta highlighted how businesses have pushed consumers to the bottom of their priority list. She spoke on deceptive advertising, the reason for costly medicines, animal cruelty in the name of experiments for new cosmetics and provided profound insights into various Consumer Protection Laws applicable in our country and stressed on the importance of filing cases.

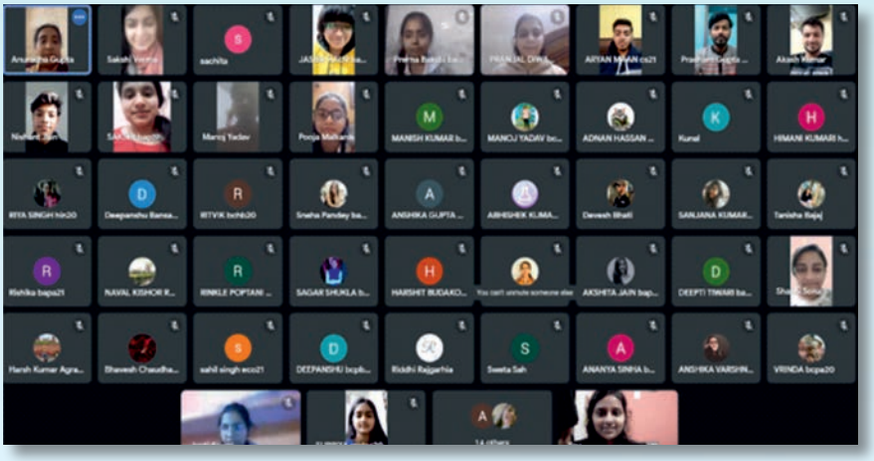

An Inter College Online Poetry Competition namely Kavyanjali 2.O was held from 27th September to 10th December'21 in association with Consumers India.The topic for this competition was 'Whatsapp, Twitter, Instagram: Too Much Information, What is Fake, What is True?' The event generated tremendous response in the form of one hundred thirty nine entries. Tamanna Mendhirattta of PGDAV College was one of the two 1st runners-up and Kashish Chhabra and Achint Arora of PGDAV College were 2nd runners-up.

Another very important webinar on Future is Digital and How Digital Marketing is Future Professional Career was organised on 9th October 2021. This was held in association with Web Seasoning. The session was led by three prominent industry experts: Ms Harpreet Kahlon, Director (Marketing & Growth), Jaspal Singh, Founder and CEO, Mr N Ram Gopal, Manager. They gave remarkable insights into the future of digital marketing and the impact digital currency would have in future.

Another very important highlight of our calender of activities was Inter College Reel Making Competition in association with Consumers India held on 9th October, 2021. The topic for this competition was

बाजार भरा सामान से, नकली जाली खोटा ।
कबीरा खड़ा बाजार में कहे,
सुनो भाई साधो, लेना माल संभाल के।।

The event proved to be a great success with the active participation of students from different universities across India. Mohak Sharma of PGDAV College was declared 2nd runner-up in the competition.

Another very important initiative of the Satark team was when it took to enlightening people about eco-friendly Diwali by using terracotta diyas, indirectly helping local vendors also. Dr. Sakshi from the Department of Commerce, through her reels, showed how to reuse old clothes for decoration and also not use harmful, chemical crackers and celebrate a safe Diwali.

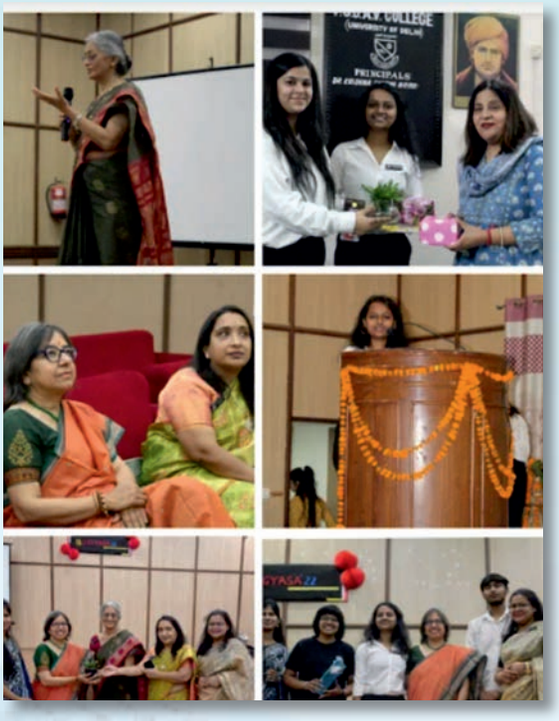

Inter College Meme-Making Competition, 'Memezaar 2.O' was organized in association with Consumers India from 15th February to 5th March which too invited entries from different universities across India. The topic for the competition was:

Misleading Ads
Take You To
La-La Land
Away From Reality
Beware!!

The event received more than ninety entries in which Ishika Gupta of PGDAV College was 1st runner-up and Yash Gambhir of PGDAV College as 2nd runner-up.

An e-waste collection drive for 5 days, a regular feature of our year long activities, was organised from 28th March to 1st April and we disposed of 540 kgs to E-Parisara. The drive also motivated people to produce less chemical waste during festivals, go green and help protect and conserve the environment.

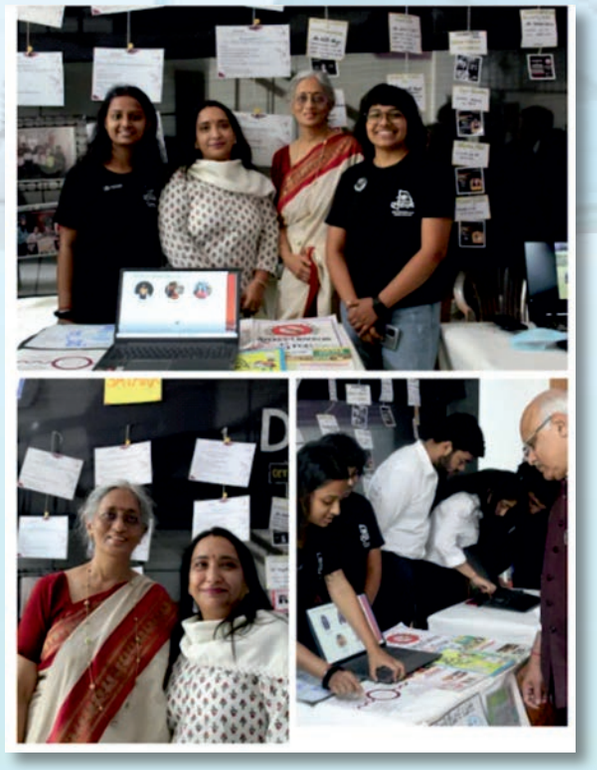

Internship with Consumers India in January 2022, gave students the opportunity to acquire hands-on experience through internship. The thrust area for this collaboration was 'Fake, Spurious and Counterfeit products related to covid-19 and Reduce your Carbon Footprint'. Tanya Sharma, Himanshu and Sakshi Singh, members of the club were selected for this internship. They learnt a lot and came to know how to do research.

Another highlight of the endeavours of the club has been the fellowship opportunities for students as Swachhta Saarthi Fellowship (SSF)'22. It is operational under the Waste to Wealth mission of the government of India. Our students got a chance to outshine themselves by helping the nation through their small contributions with the help of this fellowship.

Jigyasa, a Journey of Learnings, was held on 20th April, 2022. The event comprised of the badge distribution ceremony for the last two years' core team.

Kavyanjali 2.0 competition winners recited their winning entries. Chief guest of the event, Ameeta Gupta, Convener of youth activities at Consumers India, interacted with the competition winners and talked about the importance of awareness among consumers in today's world.

This being the year when the Founder of the club, Dr Vandana Agrawal, bids adieu from her active service. The club reflected on its journey, how it started way back in 2006, was formally christened as Satark in 2011 and has continued to empower students kindling in them a jigyasa to be open to new learning. Members thanked Dr. Vandana Agrawal for this bold initiative, its vision and how Satark is a vibrant society today.

Annual Day was held on 21st April, 2022. The session ended with a lot of bonhomie and camaraderie despite a hiatus imposed due to Covid 19 and a wish that future teams will take the club to yet other levels of commitment, performance and achievement.

We also showcased our journey of learnings of last two years' through an exhibition and displayed different posters, clips and other hand-made items.

Meanwhile, here's a glimpse of team 2021-22, who have managed to make events of this year a great success.

Faculty team consisted of Dr. Vandana Agrawal, Founder & Advisor; Dr. Anuradha Gupta, Convener; Ms. Megha Mandal; Ms. Anindita Goldar; and Ms. Nisha.

Students team consisted of President, Ishika Gupta; Vice President, Ananya Sinha; Secretary, Jasbir Kaur; Joint Secretary, Shivani Arora; Treasurer, Devesh Bhati; Content Head, Kajal Srivastav; PR Head, Rinkle Poptani; Promotion Head, Prince Saneja; and Technical Head, Tanya Sharma.

Dr. Anuradha Gupta
Convener

Kaizen- Career Counselling Club

Kaizen 'The Career Counselling Club' aims to make students aware of emerging career opportunities, assist them in identifying careers best suited for their own strengths and encourage creativity in career selection. It is a student-led community with convenors Dr. Rajni Jagota, Ms. Geetika Jaggi, and Dr. Aditi Bhateja. These mentors are determined to provide overall guidance and assistance in obtaining logistical support for society activities and create valuable opportunities with the resources at their disposal for their students.

Our robust team for the session 2021-22 included:

President:	Rishika Tomar, B.Com(Hons), IIIrd year
Vice-President:	Kashish Antil, B.Com(Hons), IIIrd year
Secretary:	Yashi Srea, B.A English(Hons), IIIrd year
	Drishti Gambhir, B.Com(P), IIIrd year
Joint-Secretary:	Disha Wadhwani, B.A Political Science(Hons), IIIrd year
Treasurer:	Shalini Khinchi, B.Com(Hons), IIIrd year

The club holds two types of activities: 'In-House Events' and 'Speaker Events'. Our regular in-house sessions featured activities on diverse topics such as book reviews of Napoleon Hill's Think *Rich Grow Rich*, Neerja Madhav's *Yamdeep*, James Clear's *Atomic* Habits, to name a few, Current events, shlokas, historical updates, quizzes, highlights of the union budget, the global hunger index, theatre commands, RuPay, Netaji Subhash Chandra Bose, vocabulary building segments (Hindi and English), and feminism in India before independence. These activities provided an active platform to students to engage, discuss and deliberate upon these wide-ranging areas.

Students are also encouraged to showcase their creative bend of mind through self-composed poems and share their individual experience of personal growth.

In addition to these, the students this year have been very active in sharing stories and reels on the Instagram handle of the club which are both informative and captivating. In the current session, Kaizen launched its monthly newsletter that consists of the details of activities that take place every month. A new initiative was launched to enlighten students about the numerous career alternatives available to them and to assist them in making the best career decisions. Some of them include cyber security, fashion modelling and graphic designing.

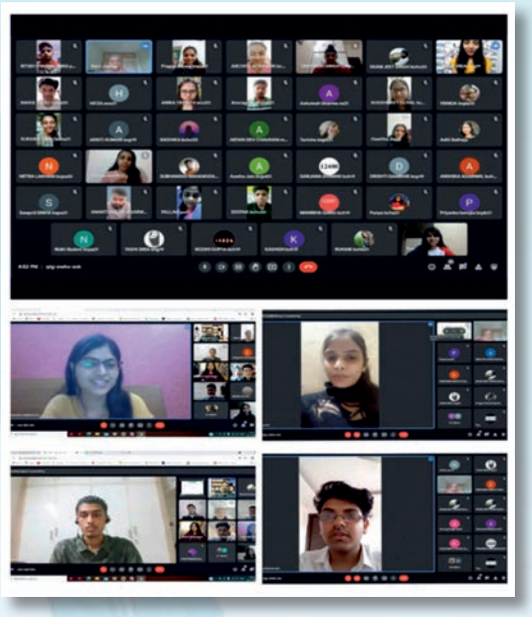

Like previous years, this year as well the club hosted some well-known speakers to apprise students about career opportunities in various traditional and emerging sectors. The speakers made them aware of various career paths available in different fields and also helped them prepare for the same.

Dr Jyoti Ahluwalia, Associate Professor and an expert on Data Analytics and Machine Learning delivered a talk on 'Career Opportunities in Artificial Intelligence' on September 10, 2021.

Ms Akanksha Parashar, IIMC alumnus, highlighted the power of 'Mindful Journaling' on September 23, 2021. She explained the importance of self evaluating exercises and how to develop a positive outlook in life through her talk.

A session by Mr. Mukund Thakur, Assistant Collector Kozhikode, IAS-2020, AIR-54 on 'Preparation Strategy for the Civil Services Examination' was conducted on October 7, 2021.

A talk on 'Careers in Law' by Advocate Bibhuti Bhushan Mishra was held on October 28, 2021.

Kaizen co-hosted an event with Diligentia- The Entrepreneurial Cell of the college on the topic 'Entrepreneurship in the Food and Beverage Industry' on November 12, 2021. The speaker was Mr. Sudeep Kapoor, Strategy Consultant for F&B Entrepreneurs.

Another talk was on 'Careers in Finance' by CPA Sankalp Sachdev on January 22, 2022. Ms. Deepa Halder, Ph.D. from XLRI, Jamshedpur, shared her views on 'Overview of Business Research- What, Why, and How' on February 5, 2022. Ms. Ruchika Kanoi, Senior Project officer, Barefoot College International, delivered an insightful lecture on 'Social Work as a Career' on February 24, 2022. There was also a talk on 'Career as an Artist' by Mr. Mariyappa Martin on March 9, 2022. Even when things were tough and everything came to a halt, the society worked diligently throughout the year and set a positive example before students.

For more details related to our activities, we could be reached through our facebook page and Instagram handle at:

Instagram handle - kaizenofficialpgdav
Facebook ID: Career Counselling Club- Pgdav College.

Dr. Rajni Jagota
Ms. Geetika Jaggi
Dr. Aditi Batheja
Convener

Placement Cell

While Covid-19 continues to impact the economy and the job market, the Placement Cell leaves no stone unturned in bridging the gap between the students and the corporate world. The Placement Cell has had another fruitful year of placements and internships as several new companies visited the campus for the recruitment drive. Recruitment drive witnessed a gratifying start with the arrival of EY, Deloitte, PwC, and WTW. Pool of students applied for placement and their number was above five-hundred, out of which more than hundred students have been placed in over hundred companies including ICICI, Wipro, Cvent, Aditya Birla, Topmore Hire, TresVista, Fractal Analytics, NIIT, ISA Global, etc. and counting. There has also been a significant rise in the number of students hired in the big four firms. Deloitte's hiring increased by 1200 percent. While the average package stands at INR 5.75 LPA (23.1263% greater than last year), the highest package is as high as INR 23 LPA offered by D.E. Shaw Group.

The cell saw a huge surge in paid internships, live projects, volunteering and fellowship programs offered by D. E. Shaw Group, Teach for India and so on. More than two hundred companies have come with internship offers in more than seventy domains and still counting. As of now, over two hundred students have been placed. The highest stipend this year was INR 1,25,000 per month (92.3077% greater than the last year) offered by ProAce International, whereas the average stipend was INR 8,500 per month.

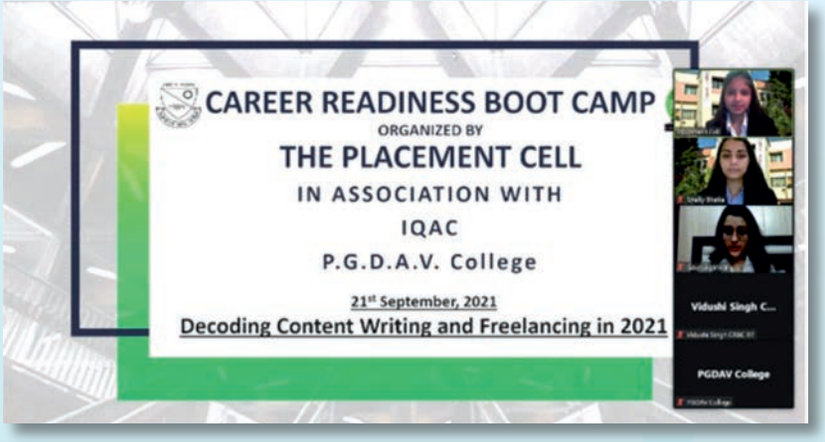

The team also floated over fifty alumni opportunities with the highest package of INR 12 LPA. To succeed in the contemporary corporate world, the cell has taken various initiatives to equip the students with the requisite skill set required to deal with challenging circumstances. The three-day 'Placement Training Program' was conducted to prepare the students for placement drives. The team also launched a twelve day

‘Career Readiness Boot Camp’ for the students across India with industry professionals addressing the students on integrated topics like CV building, photoshop, freelancing, and so on. Around eighty students were part of this boot camp and benefitted from the same.

In addition, the team also conducted several webinars based on topics which are essential for the college students like group discussions and personal interviews, business communication etc.

The cell has helped the students with a variety of online courses through Coursera, Microsoft etc. The cell also organised competitions in association with Career Launcher, Deloitte, to name a few and students participated enthusiastically in such competitions.

A new blog series, ‘Hear from the Alumni’ has been introduced this year in which the alumni of PGDAV answer queries of students. This year the flagship event of the cell ‘Converge’22’ was conducted virtually on a unique three dimensional platform with over eighty companies onboard offering internships in more than fifty profiles with the highest stipend of INR 1,50,000 per month by ProAce International. The team had top-notch companies on board with them including Jio, Jio Creative Labs, Make a Difference, Teach for India, Bajaj Capital, Wise Finserv, Tradeshala, Decathlon, Feedough, Pratham IIFM, Koozies, and many more.

Apart from this, the cell had conducted orientation sessions for the final year as well as the third year students to provide them insights into the recruitment process and other opportunities. To conclude, all the activities of the cell were carried out tirelessly by the student body of the placement cell under the support and supervision of the faculty.

Dr. Kiran
Convener

Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar Memorial Lecture Series, 2021-22

To commemorate Dr. Bhim Rao Ambedkar's birth anniversary, a lecture-series is organized every year by P.G.D.A.V. College. This year also it was organized on 18 April 2022, in New Seminar Hall on the topic '**आधुनिक भारत के निर्माण में बाबा साहब डा. भीम राव अंबेडकर का योगदान**'. The talk was delivered by Prof. Sheoraj Singh Bechain, Head, Department of Hindi, University of Delhi. In his lecture, he briefly described the indelible contributions of Dr. B.R. Ambedkar to India. Principal, Dr. Krishna Sharma also highlighted the contribution of Dr. B.R. Ambedkar in modern India. On this occasion, Dr. Avanijesh Awasthi also made the audience aware of the thoughts of Dr. B.R. Ambedkar. A documentary based on the life of Dr. B.R. Ambedkar was shown to the students. Special thanks to our principal, Dr. Krishna Sharma for her cooperation and encouragement. Had she not given her unconditional support, it would have been impossible to conduct this programme successfully.

Dr. Shamsher Singh.
Convener

संस्कृत विभाग

''संस्कृत–समवाय''

वार्षिक रिपोर्ट 2021–22

''संस्कृत–समवाय'' पीजीडीएवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति है। वर्तमान शैक्षणिक सत्र के विभागीय गतिविधियों का संक्षिप्त एवं सम्पादित विवरण प्रस्तुत है।

इस सत्र में नए छात्रों का प्रवेश पूर्ण रूप से ऑनलाइन माध्यम से हुआ। छात्रों के प्रवेश के उपरान्त 22 नवम्बर 2021 से नए छात्रों की कक्षाएं भी ऑनलाइन शुरू हो गई। नए छात्रों के प्रवेश से संबंधित सभी कार्यों को विभाग के अध्यक्ष डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा, रोहित कुमार और डॉ. प्रमिता मिश्रा जी ने व्यवस्थित रूप से सम्पन्न किया। नए छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से संस्कृत विभाग के द्वारा एक विभागीय आभासी मिलन कार्यक्रम के तहत विभाग एवं महाविद्यालय के गतिविधियों की जानकारी दी गई।

इसके पश्चात् 02 मार्च 2022 को संस्कृत विभाग की संस्कृत समवाय समिति के तत्वावधान में एक विभागीय स्तर पर संस्कृत श्लोक गायन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें संस्कृत (ऑनर्स) और संस्कृत (प्रोग्राम) दोनों पाठ्यक्रम के बच्चों ने भाग लिया। इस आयोजन की शुरुआत संस्कृत की गौरवशाली परम्परा मंगलाचरण से की गई। मंगलाचरण लौकिक और वैदिक दोनों किए गए। तदुपरान्त विभाग के अध्यक्ष डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा सर का आशीर्वचन हुआ। अपने संबोधन में डॉ. गिरिधर सर ने कहा कि आप सभी उपस्थित बच्चों का विभाग की तरफ से स्वागत करता हूँ। हमारी इस तरह का मिलन दो वर्षों के बाद हो रहा है, इसलिए आप सब की उत्सुकता को महसूस कर रहा हूँ। बाकि सबको आशीर्वाद और शुभकामनाएं। उस उद्‌बोधन के बाद प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। उसके बाद विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ. दिलीप कुमार झा सर का भी उद्‌बोधन हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि आपकी पीढ़ी इंस्टाग्राम और फेसबुक की पीढ़ी है। जिसकी अपनी चुनौतियां हैं। अभी तक हम सब आभासी माध्यम से मिलते थे। अब इस तरह से मिल रहें हैं। यह हम सबके लिए अच्छा है क्योंकि संस्कृत के पठन पाठन का तरीका आमने–सामने का है। उन्होंने आगे कहा कि हाल में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आई है। जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा को फिर से फोकस किया गया है, जिस कारण हम सभी संस्कृत का अध्ययन–अध्यापन करने वालों की जिम्मेदारी बढ़ गई है। संस्कृत के बारे में नासा के शोध की भी चर्चा उन्होंने की। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन रोहित कुमार के द्वारा किया गया। जिसमें उन्होंने कहा कि आगामी अप्रैल में जब एक विशिष्ट विद्वान का व्याख्यान होगा, उस कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इसके बाद शान्ति पाठ के द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

इसके पश्चात् संस्कृत विभाग की संस्कृत समवाय समिति के द्वारा 19 अप्रैल 2022 मंगलवार को ''वेद व्याख्यान मञ्जरी'' व्याख्यान माला के अंतर्गत प्रसिद्ध वैदिक गणित के विद्वान और दिल्ली

विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. दयाशंकर तिवारी जी का व्याख्यान आयोजित किया। इस व्याख्यान का विषय ''वैदिक वाङ्मय में ज्ञान–विज्ञान परंपरा'' रखा गया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित करके किया गया। संस्कृत की परंपरा अनुसार मंगलाचरण किया गया। वैदिक मंगलाचरण तृतीय वर्ष के छात्र पीयूष भास्कर ने किया, वहीं लौकिक मंगलाचरण द्वितीय वर्ष से शिवानी और राजकुमार ने किया।

विषय प्रवर्तन करते हुए संस्कृत विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ. दिलीप कुमार झा ने कहा कि संस्कृत भाषा ज्ञान विज्ञान की भाषा है। संस्कृत आत्मा का उद्घोष है, आवाज है, हमारी विरासत है। इस गौरवशाली विरासत को भूला देने की कोशिश की जा रही है। पूजापाठ, दकियानूसी सोच की भाषा संस्कृत को माना जाने लगा है। जबकि वास्तविकता यह है कि संस्कृत प्रगतिशील सोच, विचारों, गतिविधियों की भाषा है। प्राचीन भारत के किसी भी तरह के ज्ञान विज्ञान की बात करते हैं तो उसके मूल संस्कृत में देखने को मिलता है। जहां तक विज्ञान का सवाल है तो विज्ञान, दर्शन, धर्म की चर्चा एक साथ होती है। जितने भी बड़े दार्शनिक रहे हैं, वे सारे वैज्ञानिक भी रहें हैं। 1687 ई. में न्यूटन सेव के वृक्ष के नीचे लेटे थे। पहले भी सेव गिरता था। उस समय भी गिरा। तब न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत दिया। परन्तु उससे हजारों वर्ष पहले महर्षि कणाद ने कहा था कि प्रत्येक क्रिया के बराबर प्रतिक्रिया होती है। हम अपनी विरासत को भूल गए हैं। इसी तरह डॉ. झा ने आर्यभट्ट, बौधायन इत्यादि महर्षियों का उल्लेख करते हुए, उनके योगदान को रेखांकित किया। संस्कृत विभाग के ही आचार्य और प्रभारी डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि यह हम सब के लिए परम सौभाग्य का विषय है और यह संयोग भी है कि जिसके विजन और सोच से यह वेद–व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला को हम लोगों ने प्रारंभ किया था वे आज यहां स्वयं उपस्थित हैं। पूर्व प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल सर की प्रेरणा से यह बौद्धिक श्रृंखला 2017 में प्रारंभ की गई थी।

डॉ. मुकेश अग्रवाल ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि आपके इस व्याख्यान की महत्ता तभी है जब आप उस वैदिक ज्ञान की चर्चा अपने मित्र, घर परिवार में करेंगे। गौरवशाली अतीत को अपने डी ए वी के बच्चों को बताने के लिए हमने यह व्याख्यानमाला प्रारंभ किया था। प्राख्यात राष्ट्रवादी विचारक प्रो. अवनीजेश अवस्थी ने इस अवसर पर कहा कि बाबा साहेब अम्बेडकर ने संस्कृत को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए सबसे पहले कहा था। परीक्षा के बोझ के कारण बच्चे विज्ञान और दूसरे पहलू पर ध्यान नहीं दे पाते। जेएनयू के आनन्द रंगनाथन जैसे लोग बहुत ही मेहनत से संस्कृत के ज्ञान विज्ञान पर काम कर रहे हैं। मुझे इस बात का मलाल है कि मैं मूल संस्कृत पढ़ नहीं पाता, बोल नहीं पाता। हमारे मित्र नरेन्द्र कोहली भी बराबर यह कहते थे कि संस्कृत में अथाह ज्ञान राशि है।

इस व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता प्रो. दयाशंकर तिवारी ने बहुत ही विस्तृत व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने कहा कि वैदिक वाङ्मय केवल वेद नहीं है बल्कि वेद के साथ साथ ब्राह्मण और वेदांग शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण छंद और ज्योतिष भी है। वेद इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार के अलौकिक मार्गों को भी बताते हैं। वेद इंसान बनना सिखाते हैं। प्रकृति के पुजारी वेदों के रचनाकार है। वेद में प्रकृति का मानवीकरण किया है, ऋषि सबसे बड़े और सबसे प्रमुख वैज्ञानिक थे। उन्होंने ऋग्वेद, अथर्ववेद के मंत्रों के आधार पर विज्ञान के आधुनिक स्वरूप को समझाया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रमिता मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विभाग के अन्य आचार्य डॉ. वंदना रानी, डॉ. रेणुबाला, नागेंद्र कुमार, रोहित कुमार एवं डॉ. राजेश कुमार उपस्थित थे।

हिन्दी विभाग

विभाग द्वारा साहित्य के नवीन संदर्भों और विषयों को केंद्र में रखकर एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसके प्रथम व्याख्यान में 13 अगस्त, 2021 को विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. वीणा ने हिंदी साहित्य में गद्य के विकास को रेखांकित करते हुए टीका, अन्वय और वार्ता साहित्य के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने गद्य साहित्य के परिचय और विकास के साथ–साथ उसके सामाजिक प्रभाव पर भी विस्तार पूर्वक अपना विचार रखा। कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी डॉ. मनोज कुमार कैन ने किया।

विभागीय व्याख्यानमाला के अंतर्गत 28 अगस्त, 2021 को हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक, समीक्षक और समसामयिक–राजनीतिक मुद्दों के प्रमुख विश्लेषक डॉ. अवनिजेश अवस्थी ने भक्तिकाल के संदर्भ में अपने महत्त्वपूर्ण और नवीन विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने साहित्य के संदर्भ में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रत्येक पाठक और अध्येता का प्रमुख लक्ष्य साहित्य के वास्तविक मर्म तक पहुँचना होता है। बावजूद इसके साहित्य के जिस मर्म तक उसके अध्येता और पाठक अभी तक पहुँचे हैं, वह अंतिम नहीं है। अतः सदैव प्राचीन साहित्य की नवीन दृष्टि से व्याख्या जरूरी है। हमें लकीर का फकीर नहीं बने रहना चाहिए। डॉ. अवस्थी के अनुसार राम ने रावण का वध करने के लिए अवतार नहीं लिया, बल्कि राम ने व्यक्ति विशेष के अंदर आत्मविश्वास जगाने, उन्हें एकजुट करने और उनकी मदद करने के लिए अवतार लिया था। उसी तरह कृष्ण का जन्म भयरहित समाज का सूचक है। उनके जन्म ने कंस के भय और आतंक को सामान्य लोगों के मन से दूर कर दिया। उन्होंने हर तरह के मनुष्य को अवसाद से मुक्त कर दिया। व्याख्यानमाला के दौरान महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा और हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी डॉ. मनोज कुमार कैन ने किया।

'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा द्वारा स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस विचार संगोष्ठी में स्वतंत्रता आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर 'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा के सदस्यों द्वारा विचार प्रस्तुत किये गये।

'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा द्वारा हिंदी दिवस के

उपलक्ष्य पर 13 सितंबर, 2021 को 'हिंदी के विकास में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान' विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया। इस वेबिनार में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रो. ओमप्रकाश सिंह (अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, जे. एन.यू, नई दिल्ली) ने अपने विचार रखे।

आजादी के अमृत महोत्सव की कड़ी में हिंदी विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय और हिंदुस्तानी अकादमी, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में 'हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता हिंदुस्तानी अकादमी के अध्यक्ष डॉ. उदयप्रताप सिंह ने किया। स्वागत वक्तव्य पीजीडीएवी महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा ने दिया। विषय का प्रवर्तन महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अवनिजेश अवस्थी ने किया। मुख्य वक्तव्य दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन, अंतरराष्ट्रीय संबंध, मानविकी एवं समाज विज्ञान प्रो. अनिल राय ने दिया। सत्र का संचालन डॉ. मनोज कुमार कैन और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वीणा ने किया।

कार्यक्रम में वक्ताओं और हिंदी साहित्य के छात्रों एवं शोधार्थियों ने लिया भाग

पीजीडीएवी कॉलेजः 'हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर' संगोष्ठी का आयोजन

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय 'हिंदी पत्रकारिता एवं स्वाधीनता आंदोलन' था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. संजय द्विवेदी (महानिदेशक, आईआईएमसी) ने किया। मुख्य वक्तव्य श्री अनंत विजय (एसोसिएट एडीटर, दैनिक जागरण) ने दिया। सत्र का संचालन डॉ. अवंतिका सिंह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुषमा चौधरी ने किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र का विषय 'राष्ट्रीय काव्यधारा का पुनःस्मरण–संदर्भ स्वाधीनता संग्राम' था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. सच्चिदानंद जोशी (सदस्य सचिव, आईजीएनएसी, दिल्ली) ने किया। विशिष्ट एवं मुख्य वक्तव्य क्रमशः प्रो. निरंजन कुमार (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) व डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह (हिंदी विभाग, पीजी कॉलेज, मिर्जापुर) ने दिया। सत्र का संचालन डॉ. कपिलदेव प्रसाद निषाद और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संदीप कुमार रंजन ने किया।

'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा द्वारा प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा के संरक्षण और प्रभारी डॉ. मनोज

कुमार कैन के संयोजकत्व में 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता महाविद्यालय के पूर्व–प्राचार्य और प्रसिद्ध भाषाविद डॉ. मुकेश अग्रवाल थे। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अवनिजेश अवस्थी और डॉ. वीणा सहित महाविद्यालय के अनेक प्राध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा ने 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए कहा कि लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण हेतु इस दिवस की प्रासंगिकता निर्विवाद है। डॉ. अग्रवाल ने मातृभाषा के स्वरूप और उसके महत्त्व पर विचार करते हुए कहा कि यह मनुष्य के मानसिक और आध्यात्मिक विकास का आधार है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मनोज कुमार कैन ने विषय की रूपरेखा प्रस्तुत की।

भारतीय संस्कृति सभा सत्र २०२१–२२ की गतिविधियाँ

भारतीय संस्कृति सभा महाविद्यालय की सबसे पहली सभाओं में से एक है जिसकी स्थापना महाविद्यालय के शुभारम्भ के कुछ समय बाद ही हो गयी थी। इस सभा का उद्देश्य विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना का भाव जगाने और भारतीय संस्कृति की व्यापकता पर उनका ज्ञानवर्धन करना है। यह बड़े हर्ष का विषय है कि लगभग चार दशकों के पश्चात, महाविद्यालय की यशस्वी प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा जी की प्रेरणा, मार्गदर्शन और संरक्षण में, भारतीय संस्कृति सभा की गतिविधियों को पुनः प्रारम्भ किया गया है। श्री रामवीर जी इस सभा के संयोजक हैं और कई अन्य शिक्षक और विद्यार्थी बड़े उत्साह से इस सभा की गतिविधियों में सहयोग दे रहे हैं। शैक्षिक सत्र २०२१–२२ में सभा के तत्वाधान में तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। वर्तमान सत्र में भारतीय संस्कृति सभा का प्रथम कार्यक्रम ७ फरवरी २०२२ को आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता प्रो. विवेक कुमार रहे। प्रो. विवेक कुमार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली में प्रोफेसर हैं और उन्नत भारत अभियान के राष्ट्रीय संयोजक भी हैं। कार्यक्रम का शीर्षक था – "आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परम्परा"। आभासीय (ऑनलाइन) माध्यम पर आयोजित कार्यक्रम में प्रो. कुमार ने भारतीय सांस्कृतिक परम्परा को उन्नत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़कर प्रस्तुत किया और प्रौद्योगिकी का छात्रों के जीवन पर प्रभाव और उसके उपयोग पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम में भारत कोकिला लता मंगेशकर जी के सम्मान में दो मिनट का मौन भी रखा गया। हिंदी विभाग के डॉ. अरुण मिश्र जी ने सभी अथितियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा का दूसरा कार्यक्रम महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती के शुभ अवसर पर २६ फरवरी २०२२ को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. सुधीर कुमार जी और उनका विषय था "राष्ट्र निर्माण में महर्षि दयानंद का योगदान"। प्रो. सुधीर कुमार ने महर्षि दयानंद के राष्ट्र चिंतन, सांस्कृतिक संवर्धन और भारतीय समाज में उपस्थित तत्कालीन कुरीतियों के निवारण आदि विषयों पर अपने विद्वत संभाषण से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्राचार्य महोदया प्रो. कृष्णा शर्मा, वरिष्ठ प्रोफेसर अश्विनी महाजन जी तथा महाविद्यालय के बरसर श्री सुरेन्द्र कुमार जी ने भी अपने उद्‌बोधन दिए। कार्यक्रम का समापन इतिहास विभाग के डॉ. चंद्रपाल सिंह के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

भारतीय संस्कृति सभा का तीसरा कार्यक्रम २३ मार्च २०२२ को शहीद दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया। शहीद भगत सिंह पर व्यापक शोध कर चुके डॉ. चंद्रपाल सिंह इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने "शहीदे आजम भगत सिंह : अपने समकालीनों की नजर में" शीर्षक पर अपने वक्तव्य में शहीद भगत सिंह के जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। प्राचार्य जी और मीडिया में चर्चित व्यक्तित्व डॉ. अवनिजेश अवस्थी जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अरुण मिश्र और धन्यवाद ज्ञापन सभा के संयोजक श्री रामवीर जी ने किया। कार्यक्रम का आरम्भ और अंत वंदेमातरम के गायन से हुआ।

Department of English

The Department of English organised a short-term online course on 'Trajectories of Popular Culture and Globalisation' which was open for students, research scholars and teachers from colleges and universities across India. This course was designed to create critical literacy about new expressions of popular culture. The course enabled the participants to understand the shifts in the imaginaries amongst the youth in India, particularly in relation to gender, nation, culture and the category of otherness. The objective of the course was to create smart and critical consumers, creators and participants of popular culture. The course equipped the participants with domain knowledge and skills to go in for film appreciation, advertising industry, media and journalism. All the major aspects and forms of popular culture were covered and investigated.

The certificate course was of 30-hours duration with three hours of live online sessions every day for ten days over google meet. The sessions were held from 27th September, 2021-8th October, 2021. The Inaugural session was addressed by Professor Raj Kumar, Department of English. Respected Principal of the college, Professor Krishna Sharma, addressed the participants in the valedictory session. Sixty participants registered for the course.

Resource persons for the course included: Prof. Raj Kumar, Professor, Department of English, University of Delhi; Prof. Christel Devadawson, Professor, Department of English, Delhi University; Dr. Saroj Kumar Mahananda, Associate Professor, Department of English, Jamia Millia Islamia, Delhi; Mr Amit Bhardwaj, Journalist, India Today; Dr Pramod Mehra, Professor, IGNOU, New Delhi; Dr. Ved Prakash, Assistant professor, Department of English, Central University of Rajasthan, Dr Sanjib Kumar Baishya, Associate Professor, Department of English, Zakir Hussain College (Evening); Dr. Gitanjali Chawla, Associate Professor, Department of English, Maharaja Agrasen College; Dr. Mithuraj Dhusiya, Associate Professor, Department of English, Hansraj College; Dr. Sanjay Kumar, Associate Professor, Department of English, Hansraj College; Sh. Sachin Nirmala Narayanan, Associate Professor, Department of English, Dayal Singh college; Dr. Vinod Verma, Associate Professor, Department of English, Maharaja Agrasen College; and Dr. Rituparna Sengupta, Ph.D Scholar, Department of Humanities and Social Sciences, IIT Delhi.

Internal Resource Persons: Dr. Urvashi Sabu, Associate professor, Department of English; Dr. Mukesh Kumar Bairva, Associate Professor, Department of English; Dr. Vishal Chouhan, Associate Professor, Department of History; and Dr. Rimjhim Sharma, Associate Professor, Department of History.

The English department study circle also organised a talk by Dr. Vandana Agrawal, Associate Professor. The topic of her talk was ' Blues Woman Theology in The Color Purple- Creating Radical Black Female Subjectivity' in September. She read the Letter no: 73 in The Color Purple to show Alice Walker's ideology that is drawn from African and Christian traditions.

Dr. Mukesh Bairva
Head, Department of English

Eclectica-The English Literary Society

Eclectica, the English literary society, has been instrumental in creating opportunities and providing various platforms to students to extend their academic engagement beyond the classroom. Due to covid 19 pandemic, bringing all the three years together has been a big challenge. Despite the odds, Eclectica organised the Freshers' Welcome on 13th January, 2022. A fun, virtual event, comprising games and icebreaker sessions to welcome the freshers was conducted successfully. It was called 'Rookie Party' and requested the freshers to come dressed as their favourite fictional character. The response from the students was phenomenal.

'Spring Photo Prompt' (Creative Writing Contest) was held from 28th January to 5th February, 2022. A photo prompt was given to the students centring around the theme of Spring. The photograph was circulated well in advance. Six poems and three haikus went live on the society WordPress Blog.

An online meet of 'Wordpeckers', the reading club of the department, was conducted on 29th January, 2022, to discuss The Kite Runner by Khalid Hosseini. The participants shared personal anecdotes relevant to the book which made the session extremely enjoyable and enlightening. The discussion was carried forth by Ms. Renu Kapoor, Eclectica incharge.

An art contest, Artissential '22 (Love In The Time of Corona), was organised from 6th to 12th February by the Creative Head of Eclectica, Shreya. It was open to students of all the courses. The contest received stunning illustrations by students and the contest was judged by Dr Vandana Agarwal and Dr Anubhuti Mishra from the Department of English.

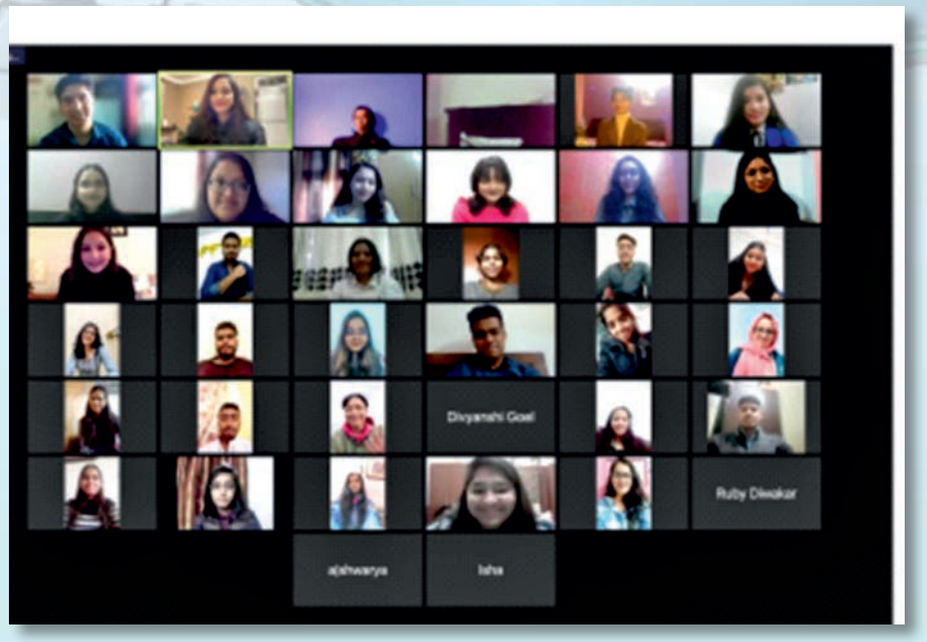

A Talk was organised for the third year students on 22nd February, 2022, to discuss the text *Basti* by Intizar Husain. The talk was delivered by our guest speaker, Dr Nishat Zaidi, Head, Department of English,

Jamia Millia Islamia, where she gave new insights into the novel. A noteworthy mention needs to be made for Dr Vandana Agrawal for making this event possible.

'Spilled Ink, the Annual Self-Composed Poetry Competition' was organised on 3rd March, 2022 for the students of the department. The event received fantastic responses, and the event was held online. The programme was hosted by our students, Vrinda Parwal and Divyanshi Goel.The judges for the event were Dr Mukesh Kumar Bairva and Dr Jyoti A. Kathpalia. The winners of the event were:

a) First position: Aarzoo Agarwal (IIIrd Year)
b) Second position: Trisha Pandey (IInd Year)
c) Third position: Hritika Lamba and Vrinda Parwal (IIIrd Year)

The winners received books as prizes. It was arranged by the Treasurer of the society, Ms. Akanksha.

The second online meet of the Book Club, 'Wordpeckers' was conducted on 10th March, 2022 to discuss The Great Gatsby by F. Scott Fitzgerald. The event was organised by the book club student adviser Ms. Kainat and was facilitated by our mentor Dr Urvashi Sabu. Students as well as teachers actively participated in the discussion making the event a great success.

With the advent of the digital age, Eclectica was able to establish its social media presence on notable platforms such as WordPress and Instagram. The buzz included publication of over Twentyfive posts on the blog this academic session comprising original compositions from the students. The society also worked on creative literary content for the Instagram page in collaboration with the students of the department.

Ms. Renu Kapoor
Convenor

Department of Commerce

The Department of Commerce has made consistent efforts during the year to impart new skills and knowledge by organising a variety of workshops and webinars for faculty members and students.

For the Academic Year 2021-22, 'Team Analytica: The Academic and Research Society' included the following faculty members: Teacher-in-charge Dr. Sonia Sabharwal, Dr. Anuradha Gupta, Dr. Shuchi Pahuja, Dr. Akanksha Jain, Ms. Geetika Jaggi, Dr. Anindita Goldar, Ms. Suchitra Mehta, Mr. Saurabh Kumar, and Dr. Aditi Batheja.

'Team Analytica' organised a webinar on 'Empowering Investors Towards the Investments in Security Market' on 7th August, 2021 on a virtual platform for faculty members of different institutions and research scholars. Dr. Shikha Gupta, Securities Market Trainer, SEBI, was the resource person. She shared her valuable guidance and inputs related to financial investment. This helped participants from different disciplines to have a strong clarity about the topic and related concepts. The session also enabled us to clarify doubts about the security market. The session was highly informative and appreciated by all the attendees.

Furthermore, the department organised a webinar on 'Lean Six Sigma and Its Relevance in Future Business Transformation' by Mr. Prabhjot Singh, Vice President, Genpact (Certified Lean Six Sigma Master Black Belt) on 28th August, 2021 on Zoom platform. The webinar was attended by over hundred participants and was highly engaging. Mr. Singh talked in-depth about quality management techniques and made the concept simple to understand with multiple examples. He further mentioned that 'Lean' thinking is all about continuous 'Waste Elimination'. This included informative short puzzles and videos related to 'Lean Six Sigma'. The session ended with a question-answer session in which the attendees shared their thoughts and queries on the subject.

From 10th to 16th December, 2021, two faculty development programmes on 'Select Issues of IND AS' were organised by the Department of Commerce and Internal Quality Assurance Cell (IQAC). This was in collaboration with Mahatma Hansraj Faculty Development Centre, Hansraj College. To drive the aim of the FDP and orient the attendees on Major IND AS 109, 110 and 113 and given the significance of IND AS, the FDP aimed to impart a comprehensive and updated overview of applicability of these IND AS. The experts from the field of accounting, auditing and reporting were involved in shaping these accounting Stan sessions in the one-week long FDP. All the sessions were very informative and appreciated by all faculty members, participants namely, Dr. Shashi Nanda and Dr. Nidhi Gupta happily shared their live feedback. The FDP was followed by a distribution of assessment questions to all the participants to evaluate them on acquaintance with the major IND AS covered through the series.

Dr. Sonia Sabharwal
Head, Department of Commerce

Commercium - The Commerce Society

Commercium -The Commerce Society is one of the most active and renowned societies of Delhi University. It has carved its niche over the years. With over one hundred and forty dedicated and diligent members working tirelessly, the team comprised of nine executives: President, Shashank Gupta; Vice President, Dhriti Goyal; Secretary, Astha Upadhyay and Karamveer Choudhary; Joint Secretary, Rishika Bhadani, Anurag Garg and Sreehari Nair; Treasurer, Kritika Bhadani and Aayush Sharma; and the two Student Coordinators, Ayushi Agrawal and Sannidhya Bhardwaj. The team worked under the guidance and support of our eminent faculty members: Convenor, Dr. Shikha Menani; Co-Convenor,Ms. Anindita Goldar; faculty members, Dr. Ritu Tanwar, Ms. Madhurika Verma, Ms. Kiran Yadav and Ms. Priyanka Khanna.

Commercium commenced its operations in virtual mode on 5th July 2021. With the advent of interactive technologies, social media's evolution has revolutionised our work spaces. In order to facilitate creation of enhanced line of communication, to share our ideas, filled with productive designs, and immersive research, Commercium joined hands with innovation and creativity and came up with a promising department this session namely, 'Social Media - Research and Design' which helped in accomplishing a wider social media engagement. There has been a substantial increase in the social media followers owing to new and enhanced content and layout on our social media platforms.

Commercium provides a constructive platform of opportunities to the ignited minds and strives to be a catalyst for positive change as it encourages and empowers students in transforming ideas into actions. This year the team introduced its guiding tagline 'Where Ignited Minds Thrive'. In order to boost the efforts of our team members, Commercium initiated 'Member of the Month' in which a member was felicitated for his/her commitment and utmost dedication towards the society.

In order to make members' experience more rich and oriented, the society introduced 'Linktree' wherein the major links related to the latest blogs or webinars were embedded and other important updates were published. The official blog website of 'Commercium-The Financial Scoop', hosted a multitude of intriguing blogs on distinct and engrossing topics which made its readers familiar with the current happenings in the global arena.

Commercium initiated an informal Instagram handle, 'Commercium_unfiltered', where some of the moments were captured and uploaded as screenshots, videos and boomerangs to archive lifelong memories. The team also undertook an initiative for better team-building through the idea of 'Commercium Darbar', an enveloping concept held twice with a plethora of formal and informal discussions. The wide range of topics included career or internship opportunities, stock trading, investing, to name a few, where everyone shared a mutual stage to voice out their opinions and feedback. The captivating discourse deepened the learning and knowledge by propelling the team to develop their own perspectives.

In the months of July and August, 2021, Commercium, with full zeal and zest, started with a series of webinars. To reinforce the knowledge about finance and investment, we had our very first webinar on the topic 'Gamification of Finance' in association with Securities & Exchange Board of India (SEBI). This was held on 15th July, 2021 in virtual mode. The speaker for the event was Dr. Shikha Gupta who is a financial expert and security market trainor at SEBI. She illuminated the audience by sharing her experience and expertise in the share market by orating about financial freedom, fluctuations and risks in the stock market. A total of about two hundred registrations for the webinar were received and more than one hundred and thirty participants actively participated in it.

'The future of money is digital currency'. Proving this statement accurate and emerging curiosity on cryptocurrency led us to our second webinar on the topic 'Decoding Cryptocurrency' held on 28th July, 2021 on Zoom platform. The webinar started with an encouraging speech from the Bursar of the college, Mr. Surendra Kumar, followed by our Speaker Aishwary Gupta, CA, who is also an IIM-C Alumnus, a Digital Asset Researcher and also an education partner of Wazir-X. Gracing the event by talking about the emergence of bitcoin concepts in the market and other related aspects of cryptocurrency, he ended by quoting that 'Cryptocurrency is legal but not a legal tender of money and Bitcoin is a storehouse of value'. The webinar was open for both UG and PG students from different colleges. The event received a total number of three hundred and twenty registrations and more than one hundred and sixty participants actively participated in the webinar.

Further, Commercium held another enriching webinar on the topic 'How to Dominate the Next Decade' on 10 August, 2021 for the students to help them level up their confidence and achieve the goals by discussing the aspects like soft skills, personality development, and proactive thought processes. The speaker for the day was Mr. Mudit Yadav, a CA and CFA, an author who became India's youngest executive coach at the age of twenty-three. One of the important points highlighted by him was the development of 'horizontal knowledge' which makes one more impactful and fetches more clients. The webinar received a total number of one hundred and three registrations and more than one hundred students actively participated in the webinar. India's stock market celebrated 2021 as an extraordinary year as some of the country's stellar companies made their public debuts on the stock exchange. In the month of August society introduced a series of IPO alerts, where the rationale was to inform people about freshly introduced IPOs. The series was completed in a set of six posts.

On 5th September, 2021, Commercium celebrated Teachers' Day with exuberance and reverberating celebrations. The event featured a variety of fun and entertaining activities and was concluded by students thanking all the teachers for being a constant support to them.

In September, 2021, Commercium posted a series of reels namely 'ads backfired' to educate the general public about the controversial advertisements. The reels showed how some reputed and well-established companies got into the web of controversies through the advertisements displayed by them. The reels highlighted the controversial ads by companies like Burger King, Ola, Cadbury,

among others.

In October 2021, the society came up with the second edition of the flagship event 'The Million Insights - Legacy Continues'. It had a series of episodes where renowned speakers from different fields prompted the audience in a very positive and healthy way through their astonishing and inspiring talks which took place every weekend in the month of October on our official Instagram handle. A surreal and ecstatic experience which scintillated the minds of our audience as our six invited dignitaries, under one umbrella, got candid about their astonishing chronicles and fostered the growth of minds with their enlightening stories. The event witnessed a cumulative eyeful of more than three thousand viewers on our live session.

We were profusely elated to invite the following renowned personalities :

Ms. Lataa Sabharwal	-	Indian Film and TV Actress
Mr. Arjun Vaidya	-	Ex. CEO at Dr. Vaidya, D2C founder and an Angel investor
IAS Nishant Jain	-	Writer and Director at Rajasthan Tourism
Mr. Abhimanyu Singh Raghav	-	Roadies Fame, Health and Fitness Coach
Ms. Sonal Kaushal	-	Voice Artist, Youtuber and Singer
Mr. Faridoon Shahryar	-	Entertainment Journalist and Content Head at Bollywood Hungama

To take a break after the rigorous work of pitching the speakers and sponsors for TMI, the society organised its very first 'Virtual Game Night' for the whole team of Commercium to cheer the team's synergy.

On November 23rd, 2021, the society welcomed the freshers and hosted the commerce department's virtual orientation, during which we introduced all the societies to the freshers and gave them an overview of their schedule and how everything works in tandem.

In December, the society introduced a series of lectures on cryptocurrency, 'Crypto-Dhan', which presented highly useful and enlightening insights on cryptocurrency.

With the fresh start of a new year, Commercium came back with yet another electrifying series on 'Metaverse', bringing all the latest information and updates regarding the same. The series explained what Metaverse is, its origin, and its attributes. Also, what it is like to work in a Metaverse, the role of blockchain and non-fungible tokens, companies building the Metaverse, brands entering the Metaverse, its benefits and drawbacks.

In the month of February, 2022, 'Commquest 22' our annual festival started with an enormous zeal with the theme 'Synergizing Innovation'. The significance of the theme was to promote innovation and creativity. The fest consisted of six captivating events:

Innoventure	:	A competition to pitch for innovative start-ups.
Ace the Case	:	A place to solve real world business problems.
Quiz Festa	:	The ultimate quiz competition.
The Big Short	:	A place where traders came to win.
War of Words	:	A rivalry to debate and win.
Ad Mad	:	A game of catchy phrases, logos, taglines and brands to check some marketing skills.

The team registered this event on the D2C platform for greater exposure and wider reach. The total prize valuation for Commquest 22 was more than ten lakh. The society conducted the fest virtually but as the college reopened, the team managed to conduct some of its operations offline, mainly promotions in the college premises. The fest received a fantastic response in terms of registrations and engagement. With a registration of more than fifteen hundred participants, the event started with the opening ceremony on 4th of March, 2022. Mr. Navin Manaswi, the chief guest for the event, enlightened the audience with his intellectual words, followed by the teachers giving insightful thoughts to the students. After the opening ceremony all the events were held simultaneously on the google meet platform. The event concluded with the closing ceremony where all the winners and runner up of each event were announced and appreciated.

The team started with the aim of performing out of the box and always strove to reach to the next level with their ideas and creativity. It is a proud feeling to share that the team succeeded in it by initiating numerous innovative concepts and events. It was the collective efforts of all the team members which made this possible and made things 'Forge Ahead in Unison'. Commercium feels gratified to say that the team unleashed the will to win, desire to succeed, and the urge to reach the potential as it unlocked the doors of the motto of excellence: 'Where Ignited Minds Thrive'.

Dr. Shikha Menani
Convenor

Department of Economics

During the year 2021-22, the Department of Economics undertook various academic activities including seminars, presentations, newsletters, reading-group sessions, freshers' welcome and many more. These events mostly took place in online mode due to Covid -19 pandemic. Though the offline classes started on 17th February, the department conducted events in the online mode in order to ensure wider participation by the students.

A designated team Ecolibrium, consisting of students and teachers from the Economics Department, is working to engage and train students in academic/curricular and co-curricular activities outside the classrooms. On 9th July, 2021 the department organised a webinar on 'Intellectual Property Rights and WTO'. The session was chaired by Prof. Ashwani Mahajan, a leading expert in this field and an esteemed member of the department. Prof. Biswajit Dhar from the Centre for Economic Studies and Planning, JNU, delivered a talk on policy analysis of India's intellectual property rights in relation to international practices and trade agreements. Prof. Dhar also addressed many questions and comments during the question-answer session.

A meeting on 23rd August, 2021 of the faculty Reading Circle/Study Circle of Economics department was held in which Prof. Ashwani Mahajan presented his recent work on An Analysis of Impact of Anti-Dumping Duties on India–China Trade that was related to the policy analysis of China's anti-dumping strategy in international trade.The implications of such tactics in the context of India's international trade policy were highlighted. Many faculty members from different departments also attended the meeting.

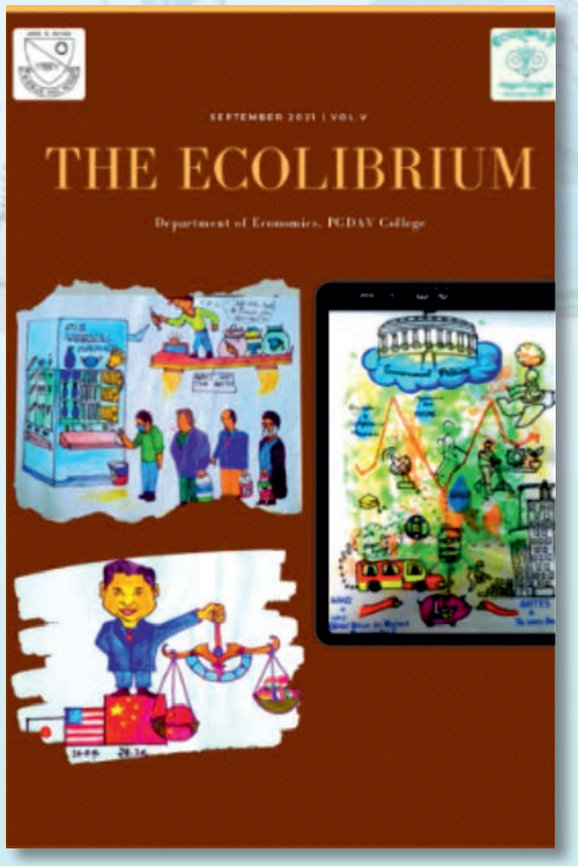

Another meeting of the faculty Reading Circle was held on 22nd September, 2021 in which Dr. Indranil Chowdhury, senior member of the department, presented a summary of his doctoral thesis titled 'Monetary Policy and Inflation in India from 2000 to 2017'. Many faculty members from different departments attended and interacted with him during the talk. After the talk, the department also launched its newsletter, *The Ecolibrium*.

Further, on 8th October, 2021 the department organised a webinar on 'Macroeconomics: Theories and Policies' by Dr. Alex M. Thomas, Assistant Professor, Azim Premji University. It was a lecture on his recent book Macroeconomics. During discussion hour,

he interacted with attendees on various topics related to the subject and shared his views with them in detail.

The academic session of newly admitted students started on 18th November, 2021. To introduce them to the department and to resolve their queries pertaining to the syllabus, the society, exams, placement, etc., the department organised an ‘Orientation Program’ on 23rd November, 2021. First year students from the Economics Department from both B.A (H), and B.A (Prog) attended the session that was jointly addressed by the two faculty members, Dr. Varun Bhushan, the teacher-in-charge and Dr. Indranil Chowdhury. On 28th January, 2022 Dr. Varun Bhushan presented his research paper titled ‘Can India Capitalise the Benefits of Demographic Dividend?’ to the faculty reading circle. In his speech, he concluded that it is the highly educated or qualified people with work experience who get productively absorbed in the labour force and the mature adults that drive the mature productivity process. The talk was followed by a question-answer session during which the speaker responded to the queries and comments by the audience. The next presentation was held on 26th March, 2022 by another faculty member Ankush Garg who delivered his talk on ‘The Models of Narratives’ in which he summarised three papers from the recent literature. In the next meeting of the reading circle held in April Dr. Deepika Kandpal presented her doctoral thesis to the faculty members.

The Department of Economics and the IQAC, organised a short-term certificate course on ‘Data Analysis Using ‘R’’ from 12th April to 29th April, 2022. ‘R’ has gained wide acceptance as a reliable and powerful modern computational environment for statistical computing and visualisation, and is now used in many areas of scientific computation. This certificate course has been designed for beginners who have no prior knowledge about ‘R’.’R’ Studio, an integrated development environment (IDE) was used. Participants learnt how to manage large datasets, clean and visualise data, and do econometric and statistical analysis of datasets. Resource persons across different professional backgrounds, who have expertise in this software were invited: Dr Subhanil Chowdhury, Associate Professor, St Xavier’s University, Kolkata; Mr Zaeen DeSouza, Pre-doc, Azim Premji University, Bengaluru; Mr Indranath Mukherjee, Vice-President, Analytics AXA; Mr Suryapratim Sarkar, Head of Hyperpersonalisation at IDFC FIRST; Dr Jyotirmoy Bhattacharya, Associate Professor Ambedkar University, Delhi; and Mr Rajib Prasad, Assistant Professor, Vidyasagar College, University of Calcutta are few esteemed resource persons who were invited to deliver lectures.

Dr. Varun Bhushan
Head, Department of Economics

Ecolibrium- The Economics Society

Ecolibrium, the Economics Society of PGDAV College, organizes various academic and extended activities outside the classroom with a dual purpose of involving students with real life economic issues and provides them with a platform for personality development. The academic session of newly admitted students started in November this year. To introduce them to the department and to resolve their queries pertaining to syllabus, society, placements, exams etc. the department organised an orientation program on 23rd November, 2021. The department also launched its newsletter 'The Ecolibrium'. This edition of the newsletter covered topics like Behavioural Economics, China's Global Takeover and Financing the Covid Vaccines. The editors' team (Mallika Arora, Mehak Vohra and Muskan Chauhan) worked tirelessly on researching and editing/writing the articles and giving the newsletter its final shape.

Dr. Varun Bhushan
Convenor

पत्रिका संबंधी
फार्म नियम – 04
फार्म
(नियम –04 देखिए)

1.	प्रकाशक स्थान	:	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नेहरू नगर, नई दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	:	वार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	गरिमा गौड़ श्रीवास्तव
4.	क्या भारत के नागरिक हैं। यदि विदेशी मूल हैं तो देश का पता	: :	हाँ .....
5.	संपादक का नाम	:	डॉ. मनोज कुमार कैन
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार–पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रकाशित से अधिक के साझेदार हों।	:	प्रो. कृष्णा शर्मा

मैं, गरिमा गौड़ श्रीवास्तव, एतद्द्वारा धोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवम् विश्वास के अनुसार उपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

वर्ष : 2021–22 अंक : 70

Sankhyiki – Department of Statistics

Sankhyiki, the Statistics Society, has been actively involved in organising various academic events and activities in which students participate with great zeal and thus make each event a grand success. Most notable of Sankhyiki's activities is the departmental festival 'SKEWSION' which is held once in each academic session. During 'SKEWSION' the society arranges a talk by an eminent personality from statistics or some interdisciplinary field or from the industry. As part of the departmental festival, the society also organises extracurricular events such as creative writing, quiz, statistical antakshari and other events.

On November 23, 2021, an orientation programme was organised to help new students to have a good fruitful time in the college by making them aware of rules and regulations and also helped them in alleviating their initial anxiety concerning college. The society organised a webinar on 'How to Do a Data Science Project Step by Step' on March 03, 2022 and the eminent speaker for this webinar was Mr. Srijit Mukherjee, Indian Statistical Institute. The session was very interesting & informative and appreciated by all the faculty members and students.

'SKEWSION'- the departmental festival- was held in the month of April. It saw a plethora of fun-filled activities and events like Stat-wars, Code-o-fiesta, Fun-Game booth, Bamboozled, De-moivre's mystery and many more. Students across different colleges of University of Delhi were invited to participate in the events of the festival.

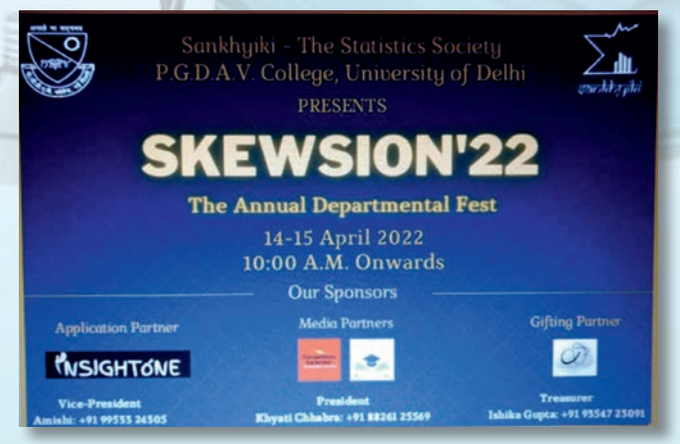

Dr. Mithlesh Jha
Convenor

Department of History

Under the overall guidance of our illustrious Principal Prof. Krishna Sharma and top archaeologists of the country, the Department of History, PGDAV College (M) in collaboration with 'The Indian Archaeological Society' successfully conducted a month-long certificate course entitled 'Introduction to Archaeology' from 17th January to 16th February, 2022 in online mode. The total duration of the course was sixty hours and about five hundred participants, undergraduates, graduates, post graduates, and doctorates from the length and breadth of the country registered for this certificate course, the first of its kind in the country. In total, there were thirty eight technical sessions covering all the basic aspects of archaeology. A large number of renowned subject experts from across the country were the highlight of the course: Prof. Vasant Shinde, Dr. K.N. Dikshit, Dr. B.R. Mani, Prof. Jeewan Kharakwal, Prof. Ajit Prasad, Mr. Amiteshwar Jha, Dr Abhijit Dandekar, Dr. S.B. Otta, Prof. Prakash Sinha, Prof. P.P. Joglekar, Dr. R.S. Bisht, Prof. R.K. Mohanty, Prof. V H Sonawane, Prof K Krishnan, Dr. Rajiv Nigam, Dr Prabodh Shrivalkar, Prof. Seema Bawa, Dr Anil K. Pokharia, DR. Satish Pandey, Dr Manjil Hazarika, Dr. P. Selvakumar, Dr. Araati Deshpande, Dr. Vinay Kumar and Dr. Ravi.

The course systematically explored the origin and development of archaeology in India, synthesis of sources, discovery and formation process of archaeological sites, the methods and tools used in field work, practical aspects of the exploration and excavation, classification of archaeological data, contextual archaeology, use of archaeological data in history writing and recent perspectives of Indian archaeology.

Organising team of the course consisted of Patrons: Prof. B.R. Mani, Prof Vasant S. Shinde, Prof. Krishna Sharma, Mr. O.P. Tandon, Dr. Asha Joshi, Ms. Anu Kapur, Ms. Sarbani Kumar.

Convenors	:	Dr. K.N. Dikshit, Dr. Ankit Agrawal
Coordinator	:	Dr. Chander Pal Singh
Co-Coordinators	:	Dr. Awadhesh K. Jha, Dr. Kundan Kumar
Organising Committee	:	Dr. Vishal Chauhan, Dr.Rimjhim Sharma, Mr. Sunil Kumar, Dr. Sushma.

Dharohar - the history department society - organised its annual festival on 12th April, 2022. A wide ranging array of programmes were organised during the festival..

Dr. K. N. Dikshit
Dr. Ankit Agarwal
Convenors

Anant- Department of Mathematics

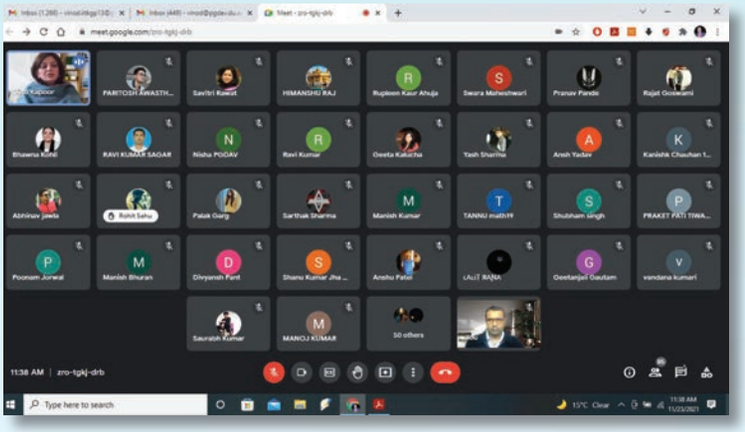

The Department of Mathematics in collaboration with IQAC organized a 15 days online certificate course on 'Statistical concepts and Ordinary Differential Equations in 'R' from 26th July to 12th August 2021. Dr. M. Ramakrishnan, Assistant Professor, Dept of Mathematics, RKM Vivekananda College, Mylapore, Chennai and Dr. Dharmendra Kumar Yadav, Assistant Professor, Department of Statistics and Demography, National Institute of health and Family Welfare, New Delhi were the resource persons for the course. The main objective of the program was to introduce R software for basic computing and graphing and to study differential equations using 'R'. Also, the students studied real world problems with mathematical modeling and computational thinking practices. All the sessions were insightful and comprehensive .

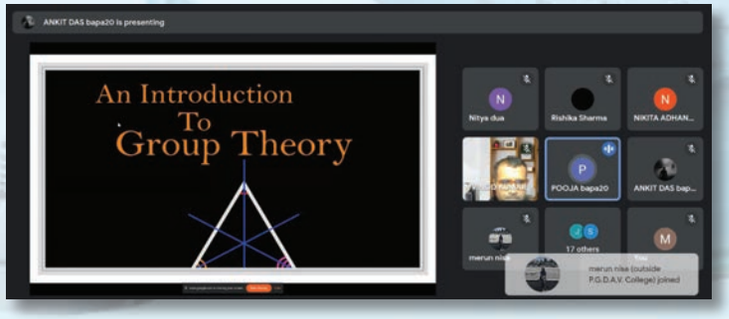

Also, the department has initiated an online study forum under which our faculty members exchanged their research ideas . Students of B. Sc. (Hons) Mathematics, B. Sc. Mathematical Sciences and B. A. Prog, who have opted Mathematics as a discipline paper, were motivated to explore different topics of mathematics and were given the opportunity to give presentations. Also, keeping in mind the growing competitions, the students were encouraged to take part in competitive examinations. Hence, to build their strong foundation, we formed an online group on Google Classroom to prepare the students for upcoming competitive exams. In this, we share weekly tutorial sheets related to important topics and also entertain the queries of the students.

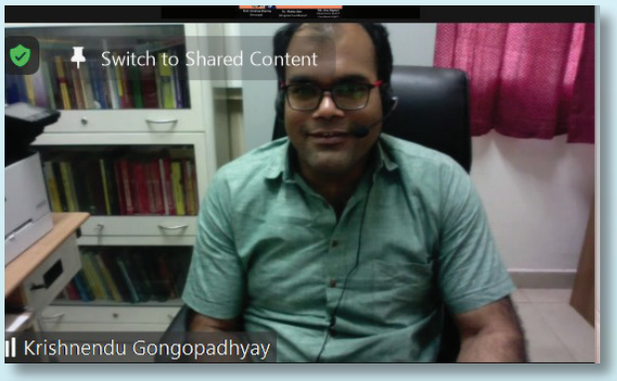

The Department of Mathematics along with the Department of Computer Science organized a webinar on Blockchain entitled as 'Impact on Industry 4.0 and Future'. Mr. Jeevan Saini (Co-founder & CEO Sofocle Labs) was the speaker of the program and

Mr. Satish Khosla (Strategic Advisor Sofocle Labs) was the Special invitee to the program. The program was very informative and interactive and was appreciated by all.

An online orientation program for the first year students of B.Sc. (Hons) Mathematics was organized in which the students were made familiar with their course, faculty members and its society namely, Anant Mathematics Society. Prof. Krishna Sharma, Principal, PGDAV College welcomed and motivated the students with her inspiring words and all the faculty members guided them and wished them good luck for their upcoming years.

Further, the interviews for the office bearers of the Anant Mathematics Society were conducted in offline mode. The department organized online MathFest SPECTRUM'22 comprising various competitive events. The department organized a webinar on the topic 'An Introduction to Non-Euclidean Geometry' by the eminent speaker Dr. Krishnendu Gangopadhyay, IISER Mohali on 11th April '22. A farewell to the outgoing batch was also organized by the department to wish them good luck for their future endeavours. Our retired colleague Dr. O. P. Agarwal addressed the students and discussed with them about 'Life Beyond Mathematics'

Anu Kapoor
Head, Department of Mathematics

Samvaad- Department of Political Science

Samvaad, the Political Science Society of PGDAV College is among the most consistently active and renowned societies of the College. It has proactively been organising a plethora of events and competitions over the years for the overall development of our students. The Political Science Department was established in 1972 and is celebrating its golden jubilee year. As Samvaad entered its 50th year, the department began its Golden Jubilee celebrations on 26th February with an online event which brought together all our retired faculty members and our alumni to celebrate this journey of five decades. The event gave the entire department a precious opportunity to learn about the experiences and seek blessings from the founding members of the department namely Dr. Sundar Raman, Dr. S.K. Sharma and Dr. S.N. Talwar. In the past five decades the department has been flourishing with every passing year and produced some of the best students and professionals.

As is the practice, Samvaad, through the due selection process, appointed its student cabinet. On 22nd November, 2021 Samvaad organised its 'orientation program' to officially welcome and induct the freshers. The orientation programme was held in virtual mode under the guidance of Teacher-in-Charge Dr. Abhay Prasad Singh. The programme was attended by all the esteemed faculty members of the Department of Political Science. To mark the 'World Hindi Day', Samvaad organised an Essay - Writing competition and a Webinar on the topic 'The idea of nation in Hindi Literature' on 14th January 2022. Dr. Avanijesh Awasthi was the guest speaker.

From 24-26 January, 2022 Samvaad organised its hallmark event 'Know your Republic' (KYR) on the occasion of the Republic Day. Under the three-day celebrations, the department organised an Inter-college debate competition, photography competition and the first edition of Samvaad Model United Nations (SMUN). The KYR celebrations were graced by Padmashree Ram Bahadur Rai who presented a highly insightful webinar on the making of the Indian Constitution.

Samvaad continued proactively organising

events as the college started in the offline setting after two years. We organised an open-mic competition and discussion on the occasion of International Women's Day on March 8 and gave cards and flowers as a token of respect to all female teaching and non-teaching staff of the college. On March 11, 2022 Samvaad organised 'Parichay 22,' the official freshers' party to welcome both our first and second year students of the college.

Continuing its legacy, Samvaad organised its Annual Departmental Fest 'Samvaad Ustav '22' on 07-08 April, 2022. The two-day fest was based on the theme 'Gender Justice: Equality and Dignity for all'. The department organised several inter-college competitions including debate competition, open-mic competition, quiz and a policy analysis competition. All of these events witnessed a large number of participants across various colleges. The society also got customised varsity jackets and polo t-shirts for the students. The fest was inaugurated by our esteemed guest speaker Prof. Rekha Saxena, Department of Political Science, University of Delhi, who spoke on 'Gender Equality and Federalism'. On 8th April Prof. Anupama Roy, Centre for Political Studies at JNU, graced our fest virtually through a webinar on 'Gendered Lives'.

Learning is a continuous process which is not limited to the four walls of the classroom alone. Keeping that in mind, Samvaad organised an educational departmental trip for the students to Dharamshala and Mcleodganj from 13th April to 17th April 2022. A 12 km long trek to the Triund top, visit to the historic Church, bustling markets and the socio-culturally significant monastery was a part of this adventurous trip. The experiences of the journey with fellow students and members of faculty of the department certainly will be cherished by all.

Dr. Abhay Prasad Singh
Head, Department of Political Science

Department of Environmental Sciences

Geo-Crusaders: The Environmental Society

The mission of Geo-Crusaders is to create awareness and motivate students towards the conservation of environment and sustainable utilisation of natural resources. The major activities conducted by Geo-Crusaders in the year 2021-2022 were:

Earth Day- 2021

Earth Day is an international event celebrated around the world to pledge support for environmental protection. The year 2021 marks the 51st anniversary of the annual celebrations. The focus was on natural processes, emerging green technologies, and innovative thinking which can restore the world's ecosystems. On this occasion, a webinar was organised to create awareness where Dr. Binota Thokchom, from Manipur University, delivered a lecture and motivated the students. The webinar was attended by around hundred participants.

Earth Day- 2021

International Day for Biological Diversity- 2021

International Day For Biological Diversity- 2021

The society observed International Day for Biological Diversity on May 22, 2021through an online one day international seminar on the topic 'We're part of the Solution'. Several renowned figures in their respective fields graced the seminar: Chief Guest Prof. Dinabandhu Sahoo, Dept of Botany, University of Delhi; the Guest of Honour Dr. Ram Karan, Research Scientist, UAE; Special Guest IFS Ankit Kumar, ACF, Khellong Forest Division, Arunachal Pradesh. The seminar was attended by around five hundred people on the online platform.

The seminar started with Prof. Sahoo talking about Biodiversity for everyone's life. The Guest of Honour Dr. Ram Karan discussed the possibilities of life on Mars. Towards the end of the session, our Special Guest, IFS Ankit Kumar explained about the biological diversity of orchids in India, their availability, why or how orchids are important to biodiversity and the possibility of more ecotourism destinations.

World Environment Day- 2021

The society organised a one-day international seminar to celebrate World Environment Day on June 5th, 2021 on the theme of 'Ecosystem Restoration'. The chief guest was Prof. Radhey Shyam Sharma, Dept. of Environmental Studies, University of Delhi and Guest of Honour Ms. Anali Bustos, Ph.D. University of Buenos Aires, Argentina. The seminar proved to be extremely informative.

Van Mahotsav Week- 2021

On 7th of July 2021, Van Mahotsav Week was celebrated. It is just the right time for planting trees in most parts of India since it coincides with the monsoon. A discussion was held on the eve of Van Mahotsav on conservation of trees and forests with our Guest Speaker Mr. Sahiram Bishnoi, Asst. Director Horticulture, Delhi Development Authority. During the event Mr Bishnoi enlightened us about the importance of Van Mahotsav and how it changes things on a global scale.

International Day For Preservation Of Ozone Layer- 2021

A National Seminar with Dr. Ram Pravesh Kumar, Asst. Prof., School of Environment Studies, JNU was organised on the occasion of International Day for the Preservation of the Ozone Layer on 16th Sep, 2021. This informative session had an active participation of over two hundred people. Dr. Ram Kumar familiarised us with the concepts of ozone layer, its preservation and the harmful effects of its depletion.

National Pollution Control Day- 2021

The Geo-Crusaders organised yet another one day national seminar to celebrate National Pollution Control Day on 2nd Dec, 2021. The chief guest of this Seminar was Dr. Priyanka Verma, Asst. Professor, Dept. of Botany, Kalindi College, University of Delhi. This event had the participation of two hundred and fifty people. The theme was to improve pollution awareness and push the government to adjust the policies to reduce the impact of pollution.

National Energy Conservation Day- 2021

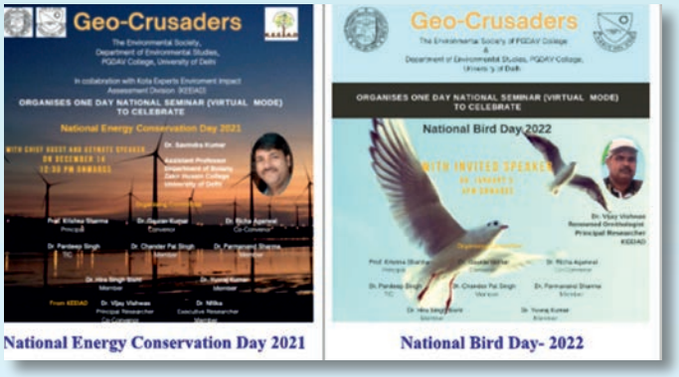

National Energy Conservation Day 2021 | National Bird Day- 2022

Continuing the series of events on Dec 14th, Geo-Crusaders organised another one-day national seminar in collaboration with 'Kota Experts Environment Impact Assessment Division' (KEEIAD) to celebrate the National Energy Conservation Day with chief guest and keynote speaker Dr. Savindra Kumar, Asst. Professor, Dept. of Botany, Zakir Hussain College, University of Delhi. We saw an active participation of over two hundred and fifty people. Dr. Kumar enlightened us by presenting the facts concerning the topic.

National Bird Day- 2022

Beginning with the New Year, the National Bird Day was celebrated on 5th Jan, 2022. The Guest Speaker Dr. Vijay Vishwas is a renowned ornithologist and principal researcher at KEEIAD. The event was attended by more than two hundred students. Dr. Vishwas made us aware about the importance of National Bird Day, its history and the fact that so many bird species are under threat.

Nadi Ko Jano Campaign-2022

Nadi Ko Jano | World Wetlands Day- 2022

Department of Environmental Studies PGDAV College and Bhartiya Sikshan Mandal, Delhi Prant organised a one-day online national workshop 'Nadi ko Jano' on January 28, 2022. More than five-hundred students participated enthusiastically in this workshop. The programme was graced with the presence of the keynote speaker Prof. (Dr.) Dilip Kumar, Head of Department of Journalism and Mass Communication at GGSIPU and the

Prachar Pramukh of the Bhartiya Shikshan Mandal, Delhi Prant. A technical session was conducted by our technology expert Prof. Kashyap Dubey from the School of Biotechnology, JNU and the Supervisor of "Nadi ko Jano" Abhiyaan.

World Wetlands Day- 2022

Geo-crusaders organised a one-day national seminar to celebrate World Wetlands Day on February 2, 2022 in virtual mode. More than two hundred participants attended this seminar. Dr.

Juhie Agarwal and Dr. Taruna Singh delivered insightful and interesting talks on the importance of wetlands.

World Wildlife Day-2022

World Wildlife Day- 2022

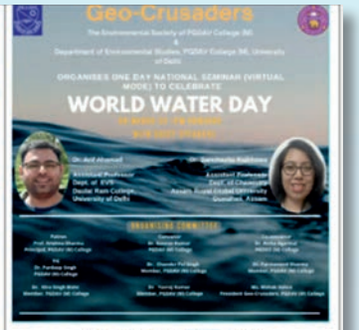

World Water Day- 2022

Geo-crusaders, in collaboration with the Department of Zoology, Upadhi PG College, Pilibhit, UP, organised an online one-day national seminar to celebrate World Wildlife Day on March 3, 2022. The event was attended by more than two hundred and sixty students. Dr. Vijay Vishwas made us aware about the importance of world wildlife day, the various threats to wildlife, the illegal pet trade, animal diseases, and habitat loss which affect us adversely in the long run.

World Water Day-2022

World Water Day is an annual United Nations observance day held on 22nd March that highlights the importance of freshwater. Geo-crusaders organised a one-day national seminar in virtual mode to celebrate World Water Day on March 22. Dr. Arif Ahmed and Dr. Sanchayita Rajkhowa presented the real facts, crisis, and solutions for sustainable management of freshwater resources for about one hundred participants.

First International Virtual Conference-2021

Department of Environmental Studies in collaboration with Mohanlal Sukhadiya University, Udaipur, Rajasthan and Young Social Scientists Association of India (YSSAI) organised two days

Some important days were also observed during 2021-22 to create awarness among the youth

S.No.	Campaign Name	Date
1.	International Plastic Bags Free Day	July 3, 2021
2.	World Lion Day	August 10, 2021
3.	World Elephant day	August 12, 2021
4.	Bhopal Gas Tragedy Day	December 2, 2021
5.	International Day of Forests	March 21, 2022

long first international virtual conference on 'Living With Ecological Balance: Life Style, Economy, Environment, Sustainability' on the 10th and 11th of July, 2021. The speakers for the day were Prof. D.S Rajput, Ex-Head, Dept. of Sociology, Dr. H.S. Gour University, M.P, India along with Prof. Tanu Jindal, Director AIETSM, Amity University, U.P. and Dr. Karan Singh, Research Scientist, NYUG School of Medicine, Dept. of Cell Biology, New York, USA. The event witnessed the participation of nearly five hundred people. The speakers made us aware of the benefits of ecological prosperity and its recent contributions to ecological economics. The speakers concluded by highlighting potentials for prosperity for each of the 'prosperity regimes' and corresponding policy challenges.

Our Team

Student Office Bearers:		
Ms. Mehak Vohra	-	President
Mr. Stanzin Dothon	-	Vice President

Faculty Office Bearers:		
Dr. Gaurav Kumar	-	Convener
Dr. Richa Agarwal	-	Co-convener
Dr. Pardeep Singh	-	T.I.C., Department of Environmental Studies
Dr. Chander Pal Singh		
Dr. Parmanand Sharma		
Dr. Hira Singh Bisht		
Dr. Yuvraj Kumar		

Dr. Gaurav Kumar
Convenor

Parikalan- Department of Computer Science

Academic year 2021-22 was an extremely eventful year for the department. The department organized a thirty-hour certificate course titled 'Responsive Web Designing using Bootstrap' for students. The course, held from 5th July 2021 till 23rd July 2021, was open for all students from all domains and universities. The sessions for the certificate course were taken by members of our department and Mr. Sanjay Kumar from South Asian University. The course was well attended by fifty-five students and all the faculty members of the department.

Research talks were conducted by the members of the department throughout the semester to understand and discuss the wide variety of work going on in the field of computer science. Dr. Geeta Aggarwal gave a talk on Video Conferencing Web App Development. A talk on Time series was conducted by Dr. Arpita Aggarwal. Sessions on 'Swarm Optimization Methods and Applications' were conducted by Dr. Ravish Sharma, Dr. Veenu Bhasin and Ms. Priyanka Gupta. Sessions on Virtualization in Cloud, How to Work with Python Libraries, Natural Language Processing, Internet of Things, Teaching Methodology and Green computing were conducted by Dr. Aparna Datt, Ms. Preeti Lakhani, Ms.Purnima Bindal, Ms. Kirti Yadav, Dr. Charu Puri and Mr. Akshay Chamoli respectively. The Departmental Orientation was held online this year for the first year students of B.Sc. (Hons) Computer Science, B.Sc. Mathematical Sciences and B.A. Programme.

A one-week faculty development program (FDP) on Natural Language processing and its Applications was conducted by the department from 5th March, 2022 to 11th March, 2022. The sessions for the programme were conducted by Dr. Jyoti Pareek, Head at Department of Computer Science, Gujarat University; Ms. Mamta Sharma, Professor in MCA Department of SIES College of Management Studies, Navi Mumbai; and Dr. Madhavi Sinha, Associate Professor and Head in Department of Computer Science and Engineering, Birla Institute of Technology, Mesra. The program was a great success and saw a participation of sixty-five faculty members from various colleges and universities across India.

The computer society Parikalan and the clubs in it - EWS (Elocution, Workshop, Seminar) Club, Research Club, CodeBots, QuizBots and NetWeavers. All these clubs have been posting on social media weekly on various technical topics. Research Club has groups working in IOT and research in Data science and Deep Learning. CodeBots did member workshops on competitive programming. NetWeavers did member workshops for web design and development. The society also organized numerous intra college events during the academic year 2021-22:

- Technical Quiz Competition, ‘Quizzard’ was held on 29th November, 2021.

- Slide Presentation Competition ‘Brisk Portrayal’ was held on 19th January, 2022.
- Web Development Competition ‘These tags need you’ was held on 8th February, 2022.
- Coding competition ‘Buzz in Time’ was held on 3rd March, 2022.

The society conducted a five-day workshop on data science in collaboration with Teenage Coder from 24th January, 2022 to 28th January, 2022. The workshop saw over four hundred registrations from many renowned academic institutions from across the country and around one hundred sixty five participants secured a certificate of participation (after fulfilling the criterion of attendance). The workshop was streamed live on YouTube. Based on participants’ performance in the assignments, Teenage Coders provided a hundred percent scholarship to the best participant, ninety five scholarship to four participants and ninety percent scholarship to ten participants. This scholarship was for the Teenage Coders Masters’ Programme.

The annual technical festival Xenium’22 was held on 8th April 2022. The programme was held in online mode with four interesting technical activities with a total of over one hundred registrations. The Theme for all the events conducted this year was 75 Years of Independence - *Azadi ka Amrit Mahotsav.*

Dr. Veenu Bhasin
Head, Department of Computer Science

Department of Physical Education & Sports Sciences

1. Shri Kalka Ji run was organised on 23rd February at 8:30 am from college to Shri Kalka Ji Mandir. Approximately sixty Students, teaching staff, non-teaching staff and Ret. Dr. P.P. Ranganathan participated in the run. All the participating members received blessings from the temple. Our Principal Dr. Krishna Sharma, welcomed the participants. As per the tradition of the college, the Halwa and Chana Prasad was distributed to students and the whole staff of the college.

2. ACHIVEMENTS

S.No.	Name	Course	Level	Event	Agency	Achievement /Position	Date & Place
1	Hemant Kumar	B.Sc.(Hons.) Mathematical Sciences IIIrd year	70th Senior National Championship		Volley Ball Federation Of India	Gold Medal	07-2-2022 To 13-2-2022 Bhuban-eswar
2	Aditya Sharma	B.A (Hons.) English IIIrd year	U-25 One Day Trophy (U.P.C.A)		B.C.C.I	Participation	March 2022
3	Hemant Kumar	B.Sc. (Hons.) Mathematical Sciences IIIrd year	Federation Cup Of India		Volley Ball Federation	Gold Medal	09-03-2022 To 15-03-2022 Bhilwara (Rajasthan)
4	Parul Saini	B.A Prog IIIrd year	64th Nscc Pistol New Delhi, New Delhi, 2021	A-67 - Air Pistol (Nr) Championship 10m Junior Women Individual	The National Rifle Association Of India		18-11-2021 To 06-12-21 Delhi
5	Parul Saini	B.A Prog	64th Nscc Pistol New Delhi, New Delhi, 2021	S-56 - 10m Pistol (Nr) Championship	The National Rifle Association		

PGDAV COLLEGE
DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS SCIENCES
SHRI KALKA JI MANDIR RUN
(23.2.2022)

S.No.	Name	Course	Level	Event	Agency	Achievement /Position	Date & Place
				Junior Women Individual	of India		18-11-2021 To 06-12-21 Delhi
6	Parul Saini	B.A Prog	XXX All India G. V. Mavalankar Rifle Pistol, Ahmedabad, Gujarat, 2021	Z-59 - Air Pistol (Nr) Championship 10m Youth Women Individual	The National Rifle Association of India		10-10-2021 To 31-10-2021 Gujarat
7	Parul Saini	B.A Prog	44th UPSSSC (Air & Small Bore) Lucknow 2021, Nagar Nigam Shooting Range, Lucknow, 2021	Z-57 - Air Pistol (Nr) Championship 10m Junior Women Individual	The National Rifle Association of India	18th Rank In Uttar Pradesh	26-09-2021 To 1-10-2021 Lucknow
8	Parul Saini	B.A Prog	40th North Zone Shooting Championship (R/P), Jaipur Rajasthan, 2021	Z-54 - Air Pistol (Nr) Championship 10m Women Individual	The National Rifle Association of India		23-03-2021 To 06-04-2021 Jaipur
9	Parul Saini	B.A Prog	40th North Zone Shooting Championship (R/P), Jaipur Rajasthan,	Z-57 - Air Pistol (Nr) Championship 10m Junior Women Individual	The National Rifle Association of India		23-03-2021 To 06-04-2021 Jaipur
10	Parul Saini	B.A Prog	13th Pre State Shooting Competition (Air/Small Bore)2021	Air Pistol (Nr) Championship 10m Junior Women Individual	The National Rifle Association of India	11th Rank In Uttar Pardesh	12th To 19th September 2021

S.No.	Name	Course	Level	Event	Agency	Achievement /Position	Date & Place
11	Shashank	B.A (Prog)	Delhi State (North-west District)	42ND Men & 23RD Women (Junior)- 40TH Men & 23RD Women (Youth)	Delhi Amature Boxing Association	Bronze	11th-15th July 2021
12	Ishika Rana	B.COM (Prog)	Delhi State (North-west District)	42ND Men & 23RD Women (Junior)- 40TH Men & 23RD Women (Youth)	Delhi Amature Boxing Association	Gold	11th-15th July 2021
13	Jagjeet Kaur	B.A (Prog)	Delhi State (North-west District)	42NDElite Men & 23RD Elite Women Delhi Amature Boxing Association		Silver	1st to 5th SEPTEMBER 2021

Pawan Dabas
Head, Department of Phy. Education & Sports Sciences